



(जनवरी 2021 - मार्च 2022)



Drishti IAS, 641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi Drishti IAS, 21
Pusa Road, Karol Bagh
New Delhi - 05

Drishti IAS, Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh Drishti IAS, Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

e-mail: englishsupport@groupdrishti.com, Website: www.drishtiias.com Contact: 011430665089, 7669806814, 8010440440

अनुक्रम

क	ना और संस्कृति	3	>	संत कबीर दास जयंती	22
>	'अनुभव मंडप'	3	>	राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर: लोथल	23
>	माघी मेला	4	>	हुमायूँ का मकबरा: मुगल वास्तुकला	24
>	यक्षगान	4	>	सिलंबम	25
>	जगन्नाथ मंदिर	5	>	कालबेलिया नृत्य	25
>	भारतीय फसल कटाई त्योहार	5	>	कुवेम्पु पुरस्कार 2020	27
>	मोनपा हस्तनिर्मित कागज	6	>	कांजीवरम सिल्क साड़ी: तमिलनाडु	27
>	जलीकट्टू	7	>	भारत का 40वाँ विश्व धरोहर स्थल: धौलावीरा	28
>	तिरुवल्लुवर दिवस	7	>	पारसी नववर्ष: नवरोज	30
>	थोलपावाकुथुः केरल	8	>	विश्व संस्कृत दिवस	31
>	पंडित भीमसेन जोशी जयंती	8	>	शंकराचार्य मंदिर	32
>	राजा कृष्णदेव राय	9	>	हिंदी दिवस	32
>	झारखंड में एक प्राचीन बौद्ध मठ की खोज	9	>	पंज प्यारे	33
>	ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती	10	>	कुतुब मीनार	33
>	गुरु रविदास जयंती	11	>	कुशीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	34
>	राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव 2021	11	>	श्रीनगर: यूनेस्को रचनात्मक शहरों का नेटवर्क	35
>	साहित्य अकादमी पुरस्कार	12	>	् करतारपुर कॉरिडोर का पुन:संचालन	36
>	कुंभ मेला: हरिद्वार	13	>	काशी विश्वनाथ कॉरिडोर	37
>	शिगमोत्सव: गोवा	13	>	यूनेस्को की ICH सूची में दुर्गा पूजा	37
>	कवि सारला दास	14	>	तमिल साहित्यः संगम काल	38
	पारंपरिक नववर्ष आधारित त्योहार	14	>	मध्य भारत में ताम्रपाषाण संस्कृति	38
>	विश्व धरोहर दिवस	15	>	कोणार्क सूर्य मंदिर का संरक्षण: उड़ीसा	39
>	लिंगराज मंदिर महावीर जयंती	16	>	कत्थक	40
>	महावार जयता वेसाक समारोह	17	>	कला कुंभ-कलाकार कार्यशालाएँ	41
>	बेगम सुल्तान जहाँ	19	Ā	विश्व विरासत नामांकन 2022-2023	42
*	•	20			
	तुलू भाषा	21		देवायतनमः मंदिर वास्तुकला पर सम्मेलन	43



'अनुभव मंडप'

चर्चा में क्यों?

कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने बसवकल्याण में 'न्यू अनुभव मंडप' की आधारशिला रखी है, ज्ञात हो कि यह वह स्थान है जहाँ 12वीं शताब्दी के कवि-दार्शनिक बसवेश्वरा ने अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया था।

प्रमुख बिंदु

न्यू अनुभव मंडप

- यह 7.5 एकड़ भूखंड में बनी छह मंजिल की संरचना होगी, जो कि बसवेश्वरा के दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करेगी।
- यह 12वीं शताब्दी में बसवेश्वरा द्वारा बसवकल्याण में स्थापित 'अनुभव मंडप' (जिसे प्राय: विश्व की पहली संसद के रूप में संदर्भित किया जाता है) को प्रदर्शित करेगी। विदित हो कि बसवेश्वरा द्वारा स्थापित 'अनुभव मंडप' में विभिन्न दार्शनिकों और समाज सुधारकों द्वारा वाद-विवाद किया जाता था।
- इसका निर्माण वास्तुकला की कल्याण चालुक्य शैली में किया जाएगा।
 - कल्याण चालुक्य, मध्ययुगीन काल के प्राचीन कर्नाटक इतिहास का एक अभिन्न अंग है। कल्याण चालुक्य शासकों ने अपने पूर्वर्ती शासकों की तरह ही मंदिरों का निर्माण करवाया और नृत्य तथा संगीत कलाओं का संरक्षण किया।
- 770 स्तंभों द्वारा समर्थित इस भव्य संरचना में 770 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभागार भी बनाया जाएगा।
- ऐसा माना जाता है कि 770 शरणों (बसवेश्वरा के अनुयायी) ने 12वीं शताब्दी में 'वचन' सुधारवादी आंदोलन का नेतृत्व किया था।
- इसके शीर्ष पर एक विशाल शिवलिंग स्थापित किया जाएगा।
- इस परियोजना में अत्याधुनिक रोबोट प्रणाली, ओपन-एयर थिएटर, आधुनिक जल संरक्षण प्रणाली, पुस्तकालय, अनुसंधान केंद्र, प्रार्थना हॉल और योग केंद्र आदि की भी परिकल्पना की गई है।

बसवेश्वर

संक्षिप्त परिचय

 गुरु बसवेश्वरा (1134-1168) एक भारतीय दार्शनिक, समाज सुधारक व नेतृत्त्वकर्त्ता थे, जिन्होंने जातिविहीन समाज बनाने का प्रयास किया और जाति तथा धार्मिक भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया।

- बासवन्ना जयंती, एक वार्षिक कार्यक्रम है, जिसे संत बासवन्ना (भगवान बसवेश्वर) के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
- गुरु बसवेश्वर का जन्म 1131 ईसवी में बागेवाड़ी (कर्नाटक के अविभाजित बीजापुर जिले में) नामक स्थान पर हुआ था।
- गुरु बसवेश्वरा को लिंगायत संप्रदाय का संस्थापक भी माना जाता है।

दर्शन

- गुरु बसवेश्वरा द्वारा प्रतिपादित दर्शन अरिवु (सत्य ज्ञान), आचार (सही आचरण), और अनुभव (दिव्य अनुभव) के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसने 12वीं शताब्दी में सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्रांति ला दी थी।
- वे संभवत: वर्ष 1154 में 'कल्याण' (वर्तमान में 'बसवकल्याण')
 चले गए और वहाँ 12-13 वर्ष के लंबी अविध तक निवास के दौरान उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये।
 - उन्हीं के प्रयासों के कारण धर्म के दरवाजे जाति, पंथ या लिंग के आधार पर भेदभाव किये बिना सभी के लिये खोल दिये गए।
 - उन्होंने 'अनुभव मंडप' की स्थापना की, जो कि सामाजिक,
 आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा के लिये सामान्य मंच
 था।
 - इस प्रकार इसे भारत की पहली संसद माना जाता है, जहाँ 'शरणों' ने एक साथ बैठकर एक लोकतांत्रिक ढाँचे में समाजवादी सिद्धांतों पर चर्चा की।
 - उन्होंने दो अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत दिये-
 - कायका (ईश्वरीय कार्य): इस सिद्धांत के अनुसार, समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद का कार्य पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिये।
 - दसोहा (समान वितरण)
 - समान कार्य के लिये समान आय होनी चाहिये।
 - कामगार (कायकाजीवी) अपनी मेहनत की कमाई से आसानी से जीवनयापन कर सकते हैं। उन्हें भविष्य के लिये धन या संपत्ति को संरक्षित नहीं करना चाहिये, बल्कि अधिशेष धन का उपयोग समाज तथा गरीबों के कल्याण के लिये करना चाहिये।

'वचन' सुधार आंदोलन

- 12वीं शताब्दी में बसवेश्वरा के नेतृत्व में हुए 'वचन' (किवता)
 आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सभी का कल्याण करना था।
- इस आंदोलन ने तत्कालीन समय के मौजूदा सामाजिक परिवेश में वर्ग, जाति और कुछ हद तक लैंगिक मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास किया।

माघी मेला

चर्चा में क्यों ?

कई दशकों में पहली बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है कि ऐतिहासिक माघी मेले (Maghi Mela) में कोई राजनीतिक सम्मेलन नहीं होगा।

- पंजाब के मुक्तसर में प्रत्येक वर्ष जनवरी अथवा नानकशाही कैलेंडर के अनुसार माघ के महीने में माघी मेले का आयोजन किया जाता है।
 - नानकशाही कैलेंडर को सिख विद्वान पाल सिंह पुरेवाल ने तैयार किया था ताकि इसे विक्रम कैलेंडर के स्थान पर लागू किया जा सके और गुरुपर्व एवं अन्य त्योहारों की तिथियों का पता चल सके।

माघी के विषय में:

- माघी वह अवसर है जब गुरु गोबिंद सिंह जी के लिये लड़ाई लड़ने वाले चालीस सिखों के बिलदान को याद किया जाता है।
- माघी की पूर्व संध्या पर लोहड़ी त्योहार मनाया जाता है, इस दौरान परिवारों में बेटों के जन्म की शुभकामना देने के उद्देश्य से हिंदू घरों में अलाव जलाया जाता है और उपस्थित लोगों को प्रसाद बाँटा जाता है।

महत्त्व:

- माघी का दिन चाली मुक्ते की वीरतापूर्ण लड़ाई को सम्मानित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है, उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह को खोज रही मुगल शाही सेना द्वारा किये गए हमले से उनकी रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी।
 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:
- मुगल शाही सेना और चाली मुक्ते के बीच यह लड़ाई 29 दिसंबर,
 1705 को खिदराने दी ढाब के निकट हुई थी।
- इस लड़ाई में शहीद हुए चालीस सैनिकों (चाली मुक्ते) के शवों का अंतिम संस्कार अगले दिन किया गया जो कि माघ महीने का पहला दिन था, इसलिये इस त्योहार का नाम माघी रखा गया है।

यक्षगान

चर्चा में क्यों?

हाल ही में साधु कोठारी नामक यक्षगान कलाकार का मंच पर प्रदर्शन करने के दौरान निधन हो गया।

यक्षगान के विषय में:

- यक्षगान कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों में किया जाने वाला एक प्रसिद्ध लोकनृत्य है। कर्नाटक में यह परंपरा लगभग 800 वर्ष पुरानी मानी जाती है।
- यक्षगान का शाब्दिक अर्थ है- यक्ष के गीत।
- इसमें संगीत की अपनी एक अलग शैली होती है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत- कर्नाटक संगीत तथा हिंदुस्तानी संगीत से अलग होती है।
- इसकी विषय-वस्तु मिथकीय कथाओं तथा पुराणों, विशेष तौर पर रामायण एवं महाभारत पर आधारित होती है।
- इसे प्रदर्शित करने वाले कलाकार समृद्ध डिजाइनों के साथ चटकीले, रंग-बिरंगे परिधानों एवं विशाल मुकुट का प्रयोग करते हैं।
- यह संगीत, नृत्य, भाषण और वेशभूषा का एक समृद्ध कलात्मक मिश्रण है, इस कला में संगीत नाटक के साथ-साथ नैतिक शिक्षा और जन मनोरंजन जैसी विशेषताओं को भी महत्त्व दिया जाता है।
- यक्षगान की कई सामानांतर शैलियाँ हैं जिनकी प्रस्तुति आंध्र प्रदेश,
 केरल, तिमलनाडु और महाराष्ट्र में की जाती है।
- आमतौर पर इसकी कथाएँ कन्नड़ में सुनाई जाती हैं। इसके अलावा मलयालम और तुलू (दिक्षण कर्नाटक की एक बोली) में भी इसका वर्णन किया जाता है।

नोट

- तुलू (Tulu) एक द्रविड़ भाषा है, जिसे बोलने-समझने वाले लोग मुख्यतया कर्नाटक के दो तटीय जिलों और केरल के कासरागोड जिले में रहते हैं।
- केरल के कासरागोड जिले को 'सप्त भाषा संगम भूमि' के नाम से भी जाना जाता है, तुलू इन सात भाषाओं में से एक है।
- तुलू भाषा में उपलब्ध सबसे पुराने अभिलेख 14वीं से 15वीं शताब्दी ईस्वी के बीच की अविध के हैं।
- इस नृत्य के दौरान मदाला (एक प्रकार की ढोलक), चांदा, पुंगी (पाइप) और हारमोनियम द्वारा अलग-अलग ताल व लय उत्पन्न की जाती है।
- इसके सबसे लोकप्रिय प्रसंग महाभारत (द्रौपदी स्वयंवर, सुभद्रा विग्रह आदि) और रामायण (राज्याभिषेक, लव-कुश कांड आदि) से हैं।

रंगमंच रूप	राज्य	थीम	
नौटंकी	उत्तर प्रदेश	इसकी विषय-वस्तु प्राय: प्रेम प्रसंग युक्त फारसी साहित्य पर आधारित होती है।	
तमाशा	महाराष्ट्र	इसका विकास गोंधल, जागरण और कीर्तन जैसे लोक कला के रूपों से हुआ है।	
भवई	गुजरात	इसके अंतर्गत सामाजिक अन्याय को व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया जाता है।	
जात्रा	पश्चिम बंगाली/ ओडिशा तथा पूर्वी बिहार	इसकी उत्पत्ति भक्ति आंदोलन के परिणामस्वरूप बंगाल में हुई। प्रारंभ में चैतन्य (गौड़ीय वैष्णववाद के आध्यात्मिक संस्थापक) प्रभाव के कारण इसे कृष्ण जात्रा के रूप में जाना जाता था।	
कुटियाट्टम	केरल	यह संस्कृत नाट्य परंपरा पर आधारित केरल का सबसे प्राचीन लोकनाट्य है। लगभग 2000 साल पुरानी परंपरा होने के कारण यूनेस्को द्वारा वर्ष 2001 में इसे 'मानवता की मौखिक एवं अमूर्त विरासत की श्रेष्ठ कृतियों' की सूची में शामिल किया गया।	
मुडियेट्टु	केरल	यह केरल का पारंपरिक अनुष्ठानिक लोकनाट्य है। इसका विषय देवी काली और राक्षस दारिका के मध्य युद्ध पर आधारित होता है। यह अनुष्ठान भगवती या भद्रकाली पंथ का एक हिस्सा है।	
भाओना	असम	यह श्रीमंत शंकरदेव (एक असमिया संत- विद्वान) की रचना पर आधारित है, ये नाटक ब्रजावली (जो असमिया और मैथिली मिश्रित एक अद्वितीय भाषा है) में लिखे गए हैं और मुख्य रूप से हिंदू देवता कृष्ण पर केंद्रित हैं।	
माच या माचा	मध्य प्रदेश	यह मध्य प्रदेश का संगीतमय लोकनाट्य है। इसमें पौराणिक कथाओं, वीरतापूर्ण ऐतिहासिक प्रसंगों एवं प्रेमाख्यानों से संबंधित विषयों का मंचन किया जाता है।	
भाँड पाथेर	कश्मीर	यह कश्मीर का प्रमुख लोकनृत्य है जो कृषक समुदाय से गहराई से जुड़ा है।	

जगन्नाथ मंदिर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (SJTA) ने घोषणा की है कि 21 जनवरी से पुरी के मंदिर में प्रवेश के लिये भक्तों को अपनी कोविड-19 की नकारात्मक रिपोर्ट दिखाने की आवश्यकता नहीं होगी।

- वर्तमान में मंदिर में प्रवेश करने वाले भक्तों को कोविड-19
 की नकारात्मक रिपोर्ट दिखानी होती है।
- महामारी के मद्देनजर नौ माह तक बंद रहने के बाद यह मंदिर 3 जनवरी से जनता के लिये दोबारा खोल दिया गया है।

प्रमुख बिंदुः

- माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में पूर्वी गंग राजवंश के राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव द्वारा किया गया था।
- जगन्नाथ पुरी मंदिर को 'यमिनका तीर्थ' भी कहा जाता है,
 जहाँ हिंदू मान्यताओं के अनुसार, पुरी में भगवान जगन्नाथ
 की उपस्थिति के कारण मृत्यु के देवता 'यम' की शक्ति
 समाप्त हो गई है।
- इस मंदिर को "सफेद पैगोडा" कहा जाता था और यह चार धाम तीर्थयात्राओं (बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) का एक हिस्सा है।
- मंदिर के चार (पूर्व में 'सिंहद्वार', दक्षिण में 'अश्वद्वार', पश्चिम में 'व्याघरा द्वार' और उत्तर में 'हस्तिद्वार') मुख्य द्वार हैं। प्रत्येक द्वार पर नक्काशी की गई है।
- प्रवेश द्वार के सामने अरुणा स्तंभ या सूर्य स्तंभ स्थित है,
 जो मूल रूप से कोणार्क के सूर्य मंदिर में था।

भारतीय फसल कटाई त्योहार

चर्चा में क्यों?

भारत में मकर संक्रांति, लोहड़ी, पोंगल, भोगली बिहू, उत्तरायण और पौष पर्व आदि के रूप में विभिन्न फसल कटाई त्योहार मनाए जाते हैं। मकर संक्रांति (Makar Sankranti):

- मकर संक्रांति एक हिंदू त्योहार है जो सूर्य का आभार प्रकट करने के लिये समर्पित है। इस दिन लोग अपने प्रचुर संसाधनों और फसल की अच्छी उपज के लिये प्रकृति को धन्यवाद देते हैं। यह त्योहार सूर्य के मकर (मकर राशि) में प्रवेश का प्रतीक है।
- यह दिन गर्मियों की शुरुआत और सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक
 है। इस दिन से हिंदुओं के लिये छह महीने की शुभ अवधि की शुरुआत होती है।

- 'उत्तरायण' के आधिकारिक उत्सव के एक हिस्से के रूप में गुजरात सरकार द्वारा वर्ष 1989 से अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन किया जाता है।
- इस दिन के साथ जुड़े त्योहारों को देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता

लोहडी:

- लोहड़ी मुख्य रूप से सिखों और हिंदुओं द्वारा मनाया जाती है।
- यह दिन शीत ऋतु की समाप्ति का प्रतीक है और पारंपरिक रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य का स्वागत करने के लिये मनाया जाता है।
- यह मकर संक्रांति से एक रात पहले मनाया जाता है. इस अवसर पर प्रसाद वितरण और पूजा के दौरान अलाव के चारों ओर परिक्रमा की जाती है।
- इसे किसानों और फसलों का त्योहार कहा जाता है, इसके माध्यम से किसान ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।

पोंगल:

- पोंगल शब्द का अर्थ है 'उफान' (Overflow) या विप्लव (Boiling Over)
- इसे थाई पोंगल के रूप में भी जाना जाता है, यह चार दिवसीय उत्सव तिमल कैलेंडर के अनुसार 'थाई' माह में मनाया जाता है, जब धान आदि फसलों की कटाई की जाती है और लोग ईश्वर तथा भूमि की दानशीलता के प्रति आभार प्रकट करते हैं।
- इस उत्सव के दौरान तिमल लोग चावल के आटे से अपने घरों के आगे कोलम नामक पारंपरिक रंगोली बनाते हैं। बिहु:
- यह उत्सव असम में फसलों की कटाई के समय मनाया जाता है। असमिया नव वर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने के लिये लोग रोंगाली/माघ बिहू मनाते हैं।
- ऐसा माना जाता है कि इस त्योहार की शुरुआत उस समय हुई जब ब्रह्मपुत्र घाटी के लोगों ने जमीन पर हल चलाना शुरू किया। मान्यता यह भी है बिहू पर्व उतना ही पुराना है जितनी की ब्रह्मपुत्र नदी। सबरीमाला में मकरविलक्कू उत्सव:
- यह सबरीमाला में भगवान अयप्पा के पवित्र उपवन में मनाया जाता
- यह वार्षिक उत्सव है तथा सात दिनों तक मनाया जाता है। इसकी शुरुआत मकर संक्रांति (जब सूर्य ग्रीष्म अयनांत में प्रवेश करता है) के दिन से होती है।
- त्योहार का मुख्य आकर्षण मकर ज्योति की उपस्थिति है, जो एक आकाशीय तारा है तथा मकर संक्रांति के दिन कांतामाला पहाडियों (Kantamala Hills) के ऊपर दिखाई देता है।

मकरविलक्कू 'गुरुथी' नामक अनुष्ठान के साथ समाप्त होता है, यह उत्सव वनों के देवता तथा वन देवियों को प्रसन्न करने के लिये मनाया जाता है।

मोनपा हस्तनिर्मित कागज

चर्चा में क्यों?

हाल ही में खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) द्वारा अरुणाचल प्रदेश के मोनपा हस्तनिर्मित कागज (Monpa Handmade Paper) के पुनरुद्धार का प्रयास किया गया है।

प्रमुख बिंदुः

मोनपा कागज़ के संबंध में:

- मोनपा हस्तनिर्मित कागज विरासत निर्माण कला की शुरुआत 1000 वर्ष पूर्व हुई थी।
- यह उम्दा बनावट वाला हस्तनिर्मित कागज़, जिसे स्थानीय बोली में मोन शुगु कहा जाता है, तवांग में स्थानीय जनजातियों की जीवंत संस्कृति का अभिन्न अंग है।
- इस कागज़ का एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व है क्योंकि इसका उपयोग बौद्ध मठों में धर्मग्रंथों और स्तुतिगान लिखने के लिये किया जाता है।
- मोनपा हस्तनिर्मित कागज, शुगु शेंग नामक स्थानीय पेड़ की छाल से बनाया जाएगा, जिसका अपना औषधीय गुण भी है। पुनरुद्धार कार्यक्रमः
- वर्ष 1994 में हस्तिनिर्मित कागज उद्योग के पुनरुद्धार का प्रयास किया गया था परंतु यह प्रयास विफल रहा।
- केवीआईसी द्वारा तवांग जिले में मोनपा हस्तनिर्मित कागज बनाने की एक इकाई की शुरुआत की गई है जिसका उद्देश्य न केवल कागज़ बनाने की इस कला को पुनर्जीवित करना है बल्कि स्थानीय युवाओं को इस कला के साथ पेशेवर रूप से जोड़ना तथा कमाई के साधन उपलब्ध करना है।
- इस पुनरुद्धार कार्यक्रम को प्रधानमंत्री के 'वोकल फॉर लोकल' (Vocal for Local) मंत्र के साथ जोड़ा गया है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (Khadi and **Village Industries Commission**):

- खादी और ग्रामोद्योग आयोग 'खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम-1956' के तहत एक सांविधिक निकाय (Statutory Body) है।
- यह भारत सरकार के सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (Ministry of MSME) के अंतर्गत आने वाली एक मुख्य संस्था है।

 इसका मुख्य उद्देश्य उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ भी आवश्यक हो अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर खादी एवं ग्रामोद्योगों की स्थापना तथा विकास के लिये योजनाएँ बनाना, उनका प्रचार-प्रसार करना तथा सुविधाएँ एवं सहायता प्रदान करना है।

जलीकट्टू

चर्चा में क्यों?

वर्ष 2021 में तिमलनाडु में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, ऐसे में पोंगल और जल्लीकट्टू जैसे त्योहारों ने देश में राजनीतिक दलों का ध्यान आकर्षित किया है।

प्रमुख बिंदुः

क्या है जलीकट्टू ?

- परंपरा:
 - जल्लीकट्टू लगभग 2,000 वर्ष पुराना एक प्रतिस्पर्द्धी खेल होने के साथ ही बैल मालिकों को सम्मानित करने का एक कार्यक्रम भी है, जिन्हें वे प्रजनन के लिये पालते हैं।
 - यह एक हिंसक खेल है जिसमें प्रतियोगी पुरस्कार प्राप्त करने के लिये बैल को वश/नियंत्रण में करने की कोशिश करते हैं; यदि प्रतियोगी बैल को वश में करने में असफल होते हैं, तो उस स्थिति में बैल मालिक को पुरस्कार मिलता है।
- खेल से संबंधित क्षेत्र:
 - यह जल्लीकट्टू बेल्ट के नाम से विख्यात तिमलनाडु के मदुरई, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुदुक्कोट्टई और डिंडीगुल जिलों में लोकप्रिय है।
- कार्यक्रम का समयः
 - यह फसल कटने के समय तिमल त्योहार पोंगल के दौरान जनवरी के दूसरे सप्ताह में मनाया जाता है।

जल्लीकट्टू पर कानूनी हस्तक्षेप:

- वर्ष 2011 में केंद्र सरकार द्वारा बैलों को उन जानवरों की सूची में शामिल किया गया जिनका प्रशिक्षण और प्रदर्शनी प्रतिबंधित है।
- वर्ष 2014 में सर्वोच्च न्यायालय में वर्ष 2011 की अधिसूचना का हवाला देते हुए एक याचिका दायर की गई थी जिस पर फैसला सुनाते सर्वोच्च न्यायालय ने जल्लीकट्टू पर प्रतिबंध लगा दिया। जल्लीकट्टू पर वर्तमान कानुनी स्थिति:
- राज्य सरकार ने इन कार्यक्रमों को वैध कर दिया है, जिसे अदालत में चुनौती दी गई है।
- वर्ष 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने जल्लीकट्टू मामले को एक संविधान पीठ के पास भेज दिया, जहाँ यह मामला अभी लंबित है।

द्वंद्र:

- जल्लीकट्टू के संदर्भ में एक द्वंद्व यह बना हुआ है कि क्या इस परंपरा को तिमलनाडु के लोगों के सांस्कृतिक अधिकार के रूप में संरक्षित किया जा सकता है, जो कि एक मौलिक अधिकार है।
 - गौरतलब है कि अनुच्छेद 29(1) के अनुसार, भारत के राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, को उसे बनाए रखने का अधिकार होगा।
 - हालाँकि इस विशेष मामले में अनुच्छेद 29(1) पशुओं के अधिकारों के खिलाफ प्रतीत होता है।

अन्य राज्यों में ऐसे खेलों की स्थिति:

- कर्नाटक द्वारा भी कंबाला नामक एक ऐसे ही खेल को बचाने के लिये एक कानून पारित किया है।
- तिमलनाडु और कर्नाटक को छोड़कर, जहाँ बैल को नियंत्रित या उनकी दौड़ का आयोजन अभी भी जारी है, सर्वोच्च न्यायालय के वर्ष 2014 के प्रतिबंध आदेश के बाद ऐसे खेल आंध्र प्रदेश, पंजाब और महाराष्ट्र सहित अन्य सभी राज्यों में प्रतिबंधित हैं।

तिरुवल्लुवर दिवस

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री ने 15 जनवरी, 2021 को तिमल किव और दार्शनिक तिरुवल्लुवर को उनकी जयंती 'तिरुवल्लुवर दिवस' (Thiruvalluvar Day) के अवसर पर याद किया।

प्रमुख बिंदुः

तिरुवल्लुवर दिवस के संबंध में:

- यह पहली बार 17-18 मई को वर्ष 1935 में मनाया गया था।
- वर्तमान समय में इसे आमतौर पर तिमलनाडु में 15 या 16 जनवरी को मनाया जाता है और यह पोंगल समारोह का एक हिस्सा है।

तिरुवल्लुवर के संबंध में:

- तिरुवल्लुवर जिन्हें वल्लुवर भी कहा जाता है, एक तिमल किव-संत थे।
 - धार्मिक पहचान के कारण उनकी कालाविध के संबंध में विरोधाभास है सामान्यत: उन्हें तीसरी-चौथी या आठवीं-नौवीं शताब्दी का माना जाता है।
 - सामान्यत: उन्हें जैन धर्म से संबंधित माना जाता है। हालाँकि
 हिंदुओं का दावा है कि तिरुवल्लुवर हिंदू धर्म से संबंधित थे।
 - द्रविड़ समूहों (Dravidian Groups) ने उन्हें एक संत माना क्योंिक वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते थे।

- उनके द्वारा संगम साहित्य में तिरुक्कुरल या 'कुराल' (Tirukkural or 'Kural') की रचना की गई थी।
- इस रचना को तीन भागों में विभाजित किया गया है-
 - अराम- Aram (सदगुण- Virtue)।
 - पोरुल- Porul (सरकार और समाज)।
 - कामम- Kamam (प्रेम)।

कर्नाटक	तोगलु गोमेयाता
महाराष्ट्र	चर्मा बहुली नाट्य
ओडिशा	रावनछाया
केरल	थोलपावाकुथु
तमिलनाडु	थोल बोम्मलता

थोलपावाकुथुः केरल

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में एक रोबोट द्वारा केरल की प्रसिद्ध मंदिर कला थोलपावाकुथ में एक चमड़े की छाया कठपुतली तैयार की गई है।

प्रमुख बिंदुः

- यह केरल की एक पारंपरिक मंदिर कला है जो पलक्कड़ और इसके पड़ोसी क्षेत्रों से संबंधित है।
 - यह कला काफी हद तक पलक्कड़ जिले के शोरानूर क्षेत्र के पुलवार परिवारों तक ही सीमित है।
- केरल की प्राचीन कलाकृतियों में थोलपावाकुथु या छाया कठपुतली नाटक का प्रमुख स्थान है। यह आर्य और द्रविड् संस्कृतियों के एकीकरण का एक अच्छा उदाहरण है।
- यह पलक्कड जिले के काली मंदिरों में वार्षिक उत्सवों के दौरान निभाई जाने वाली एक रस्म है।
 - ♦ इसे निजलकुथु (Nizhalkkoothu) और ओलाकुथू (Olakkoothu) के रूप में भी जाना जाता है।
- नाटक का विषय 'कंब रामायण' (महाकाव्य का तमिल संस्करण) पर आधारित है।

प्रदर्शन:

- इस मनोरंजक कला को एक विशेष मंच पर प्रदर्शित किया जाता है जिसे मंदिर प्रांगण में 'कुथूमदम' (koothumadam) कहा जाता है।
- इस कला को लैंप के प्रकाश और अग्नि के साथ-साथ पौराणिक आकृतियों का उपयोग करके प्रदर्शित किया जाता है।
- मुख्य कठपुतली को 'पुलावन' के रूप में जाना जाता है।

प्रयुक्त संगीत वाद्ययंत्रः

एजुपारा, चेंदा और मैडलम आदि।

भारत में छाया कठपुतली के क्षेत्रीय नाम		
राज्य	नाम	
आंध्र प्रदेश	थोलू बोम्मलता	

पंडित भीमसेन जोशी जयंती

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने शास्त्रीय संगीत गायक पंडित भीमसेन जोशी (Pandit Bhimsen Joshi) को उनकी जन्म शताब्दी पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रमुख बिंदु

पंदित भीमसेन जोशी:

- पंडित भीमसेन जोशी का जन्म 4 फरवरी, 1922 को हुआ था।
- महत्त्वपूर्ण उपलब्धि: इन्हें वर्ष 2008 में भारत रत्न प्रदान किया गया
- कार्य: इनके द्वारा गाए जाने वाले कल्याण, मियाँ की टोडी, पुरिया धनश्री और मुल्तान आदि प्रसिद्ध रागों के लिये इन्हें याद किया जाता है।
 - ये किराना घराने से संबंध रखते थे।
 - किराना घराने का नाम उत्तर प्रदेश के कैराना नामक एक छोटे शहर से पड़ा है। इसकी स्थापना उस्ताद अब्दुल करीम खान ने की थी। अब्दुल वाहिद खान, सुरेश बाबू माने, हीरा बाई बडोडकर और रोशनआरा बेगम जैसे प्रसिद्ध कलाकार इस घराने से संबंधित हैं।
 - 🔷 ये हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के घराने से ताल्लुक रखते थे। हिन्दुस्तानी संगीत:
- उद्भव:
 - हिंदुस्तानी संगीत मुख्य रूप से भारत में प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो विशिष्ट शैलियों में से एक है। दूसरा भारतीय शास्त्रीय संगीत कर्नाटक संगीत है जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत में प्रचलित है।
 - दोनों प्रकार के संगीत शैलियों की ऐतिहासिक जड़ें भारत के नाट्यशास्त्र से संबंधित हैं।

- हिंदुस्तानी संगीत स्वर केंद्रित है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से जुड़े प्रमुख स्वर ख्याल, गजल, ध्रुपद, धमर, तराना और ठुमरी हैं।
 - अधिकांश हिंदुस्तानी संगीतकार तानसेन के वंश से संबंधित हैं।
- घराना:
 - घराना एक सामाजिक संगठन प्रणाली है जो संगीतकारों या नर्तिकयों को वंश परंपरा से जोड़ती है और एक विशेष संगीत शैली का पालन करती है।
 - गुरु-शिष्य परंपरा का अर्थ शिष्यों को एक विशेष गुरु के अधीन सीखना तथा उनके संगीत ज्ञान और शैली को प्रसारित करना।

घराना	संबंधित स्थान	संस्थापक
ग्वालियर	ग्वालियर	नत्थन खाँ
आगरा	आगरा	हाजी सुजान खाँ
रंगीला	आगरा	फैय्याज़ खान
जयपुर	जयपुर	अल्लादिया खान
किराना	अवध	अब्दुल वाहिद खान
बनारस	वाराणसी	राम सहाई

राजा कृष्णदेव राय

चर्चा में क्यों ?

विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय की मृत्यु की सटीक तिथि से संबंधित पहला शिलालेख कर्नाटक के तुमकुरु जिले के होन्नाहल्ली में खोजा गया है।

 आमतौर पर राजाओं की मृत्यु शिलालेखों में दर्ज नहीं की जाती थी परंतु यह शिलालेख दुर्लभ रिकॉर्डों में से एक था।

प्रमुख बिंदुः

- शिलालेख के अनुसार, भारत के सबसे महान सम्राटों में से एक राजा कृष्णदेव राय जिसने दक्षिण भारत में शासन किया, की मृत्यु 17 अक्तबर, 1529 (रविवार) को हुई थी।
 - संयोग से इस दिन चंद्र ग्रहण की घटना हुई थी।
- यह शिलालेख तुमकुरु जिले के होन्नाहल्ली में गोपालकृष्ण मंदिर के उत्तर की ओर रखे एक पत्थर पर उकेरा गया है।
- यह शिलालेख तुमकुरु के देवता वीरपरासना हनुमंथा की पूजा करने के लिये तुमकुरु के गाँव होन्नाहल्ली द्वारा दिये जाने वाले उपहारों का भी वर्णन करता है।
- इस शिलालेख को कन्नड में लिखा गया है।

राजा कृष्णदेव राय:

- यह विजयनगर साम्राज्य (1509-29 ई.) के तुलुव वंश का शासक था।
- उसके शासन में विस्तार और समेकन संबंधी विशेषताएँ थीं।
- उसे कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्त्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रभावशाली गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है।
- उसने विजयनगर के पास एक उपनगरीय बस्ती की भी स्थापना की, जिसे 'नागालपुरम' भी कहा जाता था।
- उन्होंने तेलुगू भाषा में शासन कला पर आधारित ग्रंथ 'अमुक्तमाल्यदा' की रचना की।

विजयनगर साम्राज्यः

- विजयनगर या "विजय का शहर" एक शहर और साम्राज्य दोनों का नाम था।
- इस साम्राज्य की स्थापना चौदहवीं शताब्दी (1336 ईस्वी) में संगम वंश के हरिहर और बुक्का ने की थी।
 - उन्होंने हंपी को राजधानी शहर बनाया। वर्ष 1986 में हंपी को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।
- यह उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप के दक्षिण तक फैला हुआ है।
- विजयनगर साम्राज्य पर निम्नलिखित चार महत्त्वपूर्ण राजवंशों ने शासन किया:
 - 🔷 संगम
 - 🔷 सुलुव
 - 🔷 तुलुव
 - अराविड्

झारखंड में एक प्राचीन बौद्ध मठ की खोज

चर्चा में क्यों?

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archeological Survey of India- ASI) ने झारखंड की सीतागढ़ी हिल्स के जुलजुल पहाड़ के पास एक टीले के नीचे दफन बौद्ध मठ की खोज की है, जिसे कम-से- कम 900 वर्ष पुराना माना जा रहा है।

 इस स्थल के नजदीक पहले भी एक प्राचीन बौद्ध स्थल इसी तरह के टीले के नीचे दफन पाया गया।

प्रमुख बिंदुः

प्राप्त पुरावशेष:

 वरद मुद्रा (हाथ से वरदान देने का इशारा) में देवी तारा की चार मूर्तियाँ।

- तारा देवी की प्रतिमा पर नागरी लिपि: नागरी देवनागरी लिपि का पूर्ववर्ती संस्करण था और इसके शब्द बौद्ध धार्मिक संबद्धता को दर्शाते हैं।
- बुद्ध की छह मूर्तियाँ भूमिस्पर्श मुद्रा में (दाहिने हाथ की पाँच अँगुलियों द्वारा पृथ्वी की ओर इशारा, जो बुद्ध के ज्ञान का प्रतीक हैं) प्राप्त हुई हैं।
- एक मूर्ति कुंडलित मुकुट और चक्र के साथ मिली है जो शैव देवता माहेश्वरी की प्रतीत होती है और इस क्षेत्र में सांस्कृतिक समावेश का संकेत देती है।

प्राप्त पुरावशेषों का महत्वः

 देवी तारा की मूर्तियों की उपस्थित इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के प्रसार को दर्शाती है।

वज्रयानः

- वज्रयान का अर्थ है "वज्र का वाहन", जिसे तांत्रिक बौद्ध धर्म के नाम से भी जाना जाता है।
- यह बौद्ध शाखा भारत में लगभग 900 ई. में विकसित हुई।
- यह गूढ़ तत्त्वों पर आधारित है और बाकी बौद्ध शाखाओं की तुलना
 में एक बहुत जिटल क्रिया पद्धित पर आधारित है।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में 809वें उर्स के अवसर पर सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की अजमेर शरीफ दरगाह पर प्रधानमंत्री की ओर से एक 'चादर' भेंट की गई।

 उर्स त्योहार राजस्थान के अजमेर में आयोजित किया जाने वाला एक वार्षिक उत्सव है जो सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती की पुण्यतिथि पर में मनाया जाता है।

प्रमुख बिंदुः

सूफीवाद का संक्षिप्त परिचय:

- यह इस्लामी रहस्यवाद का एक रूप है जो वैराग्य पर ज़ोर देता है।
- इसमें ईश्वर के प्रति समर्पण और भौतिकता से दूर रहने पर बल दिया गया है।
- सूफीवाद में बोध की भावना द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिये आत्म अनुशासन को एक आवश्यक शर्त माना जाता है।
- रूढ़िवादी मुसलमानों के विपरीत जो कि बाहरी आचरण पर जोर देते हैं, सूिफयों ने आंतरिक शुद्धता पर जोर दिया।
- सूफी मानते हैं कि मानवता की सेवा करना ईश्वर की सेवा के समान है।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती:

- मोइनुद्दीन हसन चिश्ती का जन्म वर्ष 1141-42 ई. में ईरान के सिजिस्तान (वर्तमान सिस्तान) में हुआ था।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने वर्ष 1192 ई. में अजमेर में रहने के साथ ही उस समय उपदेश देना शुरू किया, जब मुहम्मद गोरी (मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन साम) ने तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली में अपना शासन स्थापित कर लिया था।
- आध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर उनके शिक्षाप्रद प्रवचनों ने शीघ्र ही स्थानीय आबादी के साथ-साथ सुदूर इलाकों में राजाओं, रईसों, किसानों और गरीबों को आकर्षित किया।
- अजमेर में उनकी दरगाह पर मुहम्मद बिन तुगलक, शेरशाह सूरी, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, दारा शिकोह और औरंगजेब जैसे शासकों ने जियारत की।

चिश्ती सिलसिला (चिश्तिया):

- भारत में चिश्ती सिलिसले की स्थापना ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा की गई थी।
- इसने ईश्वर के साथ एकात्मकता (वहदत अल-वुजुद) के सिद्धांत
 पर जोर दिया और इस सिलसिले के सदस्य शांतिप्रिय थे।
- उन्होंने सभी भौतिक वस्तुओं को ईश्वर के चिंतन से भटकाव/ विकर्षण के साधन के रूप में खारिज कर दिया।
- उन्होंने धर्मिनरपेक्ष राज्य के साथ संबंधों से दूरी बनाए रखने पर जोर दिया।
- उन्होंने ईश्वर के नाम को जोर से बोलकर और मौन रहकर (dhikr jahrī, dhikr khafī) जपने, दोनों द्वारा चिश्ती सिलसिले की आधारशिला स्थापित की।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्यों जैसे- ख्वाजा कुतबुद्दीन बिख्तयार काकी, फरीदउद्दीन गंज-ए-शकर, निजामुद्दीन औलिया और नसीरुद्दीन चराग आदि ने चिश्ती की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाने तथा इसे आगे बढ़ाने का कार्य किया।

अन्य प्रमुख सूफी सिलसिले:

- सुहरावर्दी सिलसिला (Suhrawardi Order):
 - इसकी स्थापना शेख शहाबुद्दीन सुहरावार्दी मकतूल द्वारा की गई
 थी।
 - चिश्ती सिलिसले के विपरीत सुहरावर्दी सिलिसले को मानने वालों ने सुल्तानों/राज्य के संरक्षण/अनुदान को स्वीकार किया।
- नक्शबंदी सिलिसलाः
 - 🔷 इसकी स्थापना ख्वाजा बहा-उल-दीन नक्सबंद द्वारा की गई थी।
 - भारत में इस सिलिसले की स्थापना ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंदी ने की थी।

- शुरुआत से ही इस सिलिसले के फकीरों ने शिरयत के पालन पर जोर दिया।
- क्रदिरिया सिलिसलाः
 - यह पंजाब में लोकप्रिय था।
 - इसकी स्थापना शेख अब्दुल कादिर गिलानी द्वारा 14वीं शताब्दी में की गई थी।
 - 🔷 वे अकबर के अधीन मुगलों के समर्थक थे।

गुरु रविदास जयंती

27 फरवरी, 2021 को गुरु रविदास जयंती मनाई गई। हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार माघ महीने में पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है।

प्रमुख बिंदुः

- वे 14वीं सदी के संत तथा उत्तर भारत में भिक्त आंदोलन के प्रमुख सुधारक थे।
- ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म वाराणसी में एक मोची परिवार में हुआ था।
- एक ईश्वर में विश्वास और निष्पक्ष धार्मिक कविताओं के कारण उन्हें ख्याति प्राप्त हुई।
- उन्होंने अपना पूरा जीवन जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिये समर्पित कर दिया और ब्राह्मणवादी समाज की धारणा की खुले तौर पर निंदा की।
- उनके भक्ति गीतों ने भक्ति आंदोलन पर त्वरित प्रभाव डाला। उनकी कविताओं को सिखों के धार्मिक पाठ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी शामिल किया गया।

भक्ति आंदोलनः

- भक्ति आंदोलन का विकास तिमलनाडु में सातवीं और नौवीं शताब्दी के बीच हुआ।
- यह नयनार (शिव के भक्त) और अलवार (विष्णु के भक्त) की भावनात्मक कविताओं में पिरलक्षित होता था।
 - इन संतों ने धर्म को एक उदासीन औपचारिक पूजा के रूप में नहीं बल्कि पूज्य और उपासक के बीच प्रेम पर आधारित एक प्रेमपूर्ण बंधन के रूप में देखा।
- समय के साथ दक्षिण के विचारों का स्थानांतरण उत्तर की ओर हुआ लेकिन यह एक बहुत धीमी प्रक्रिया थी।
- भक्ति विचारधारा के प्रसार के लिये सर्वाधिक प्रभावी तरीका स्थानीय भाषाओं का प्रयोग था।
 - भक्ति संतों ने अपने छंदों की रचना स्थानीय भाषाओं में की।
- उन्होंने व्यापक स्तर पर दर्शकों तक पहुँच स्थापित करने के लिये संस्कृत कृतियों का अनुवाद भी किया।

 उदाहरणार्थ, मराठी में ज्ञानदेव, हिंदी में कबीर, सूरदास और तुलसीदास, असिमया में शंकरदेव, चैतन्य और चंडीदास ने बंगाली, हिंदी तथा राजस्थानी में मीराबाई ने अपना संदेश दिया।

राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव 2021

चर्चा में क्यों?

हाल ही में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव 2021 का तीसरा और अंतिम संस्करण 27 फरवरी, 2021 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में आरंभ हुआ।

 इस अवसर पर स्थानीय कलाकारों द्वारा विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए, जिनमें 'बाउल गान', 'अल्कुप गान', 'लेटो गान', 'झुमुरिया' और रंपा लोकनृत्य शामिल थे।

प्रमुख बिंदुः

- राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव संस्कृति मंत्रालय का प्रमुख उत्सव है।
- इसका आयोजन वर्ष 2015 से सात क्षेत्रीय संस्कृति केंद्रों (Zonal Culture Centres) की सिक्रय भागीदारी के साथ किया जा रहा है।
- इसकी शुरुआत देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अपने सभी समृद्ध और विविध आयामों जैसे- हस्तिशिल्प, भोजन, चित्रकला, मूर्तिकला और प्रदर्शन कला- लोक, जनजातीय, शास्त्रीय एवं समकालीन सभी को एक ही स्थान पर प्रदर्शित करने के उद्देश्य से की गई थी।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

- इस अभियान को वर्ष 2015 में विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के लोगों के मध्य जुड़ाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था ताकि विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच आपसी समझ और संबंधों को बढ़ाया जा सके तथा भारत की एकता और अखंडता को मज़बूत किया जा सके।
- यह शिक्षा मंत्रालय की एक पहल है।
- इस पहल के व्यापक उद्देश्य इस प्रकार हैं:
 - राष्ट्र की विविधता में एकता कायम करना तथा लोगों के मध्य पारंपरिक रूप से विद्यमान भावनात्मक बंधन को बनाए रखना और उसे मजब्रती प्रदान करना।
 - सभी भारतीय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच एक वार्ता तथा बेहतर संबंध स्थापित कर राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को बढ़ावा देना।
 - लोगों को भारत की विविधता को समझने, उसकी सराहना करने, विभिन्न राज्यों की समृद्ध विरासत और संस्कृति, रीति-रिवाजों तथा परंपराओं को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से सामान्य पहचान की भावना को बढावा देना

- लंबे समय तक काम में संलग्न होने के लिये एक ऐसा वातावरण निर्मित करना जो सर्वोत्तम प्रथाओं और अनुभवों को साझा कर विभिन्न राज्यों के मध्य सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता हो।
- देश के प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश को एक समय अवधि हेतु किसी अन्य राज्य/केंद्रशासित प्रदेश के साथ जोडा जाएगा, इस दौरान वे भाषा, साहित्य, भोजन, त्योहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि के क्षेत्र में एक-दूसरे के साथ जुड़ाव महसूस करेंगे।
- क्षेत्रीय संस्कृति केंद्र:
- इन केंद्रों का लक्ष्य प्राचीन भारतीय संस्कृति को मज़बूत करना और समग्र राष्ट्रीय संस्कृति को विकसित और समृद्ध करना है।
- भारत में सात क्षेत्रीय संस्कृति केंद्र (ZCC) विद्यमान हैं:
 - पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता
 - 🔷 उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद
 - उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर
 - 🔷 उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला
 - दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर
 - दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर
 - पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर
- ये केंद्र नियमित रूप से पूरे देश में विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।
- इन केंद्रों द्वारा संचालित कुछ अन्य योजनाएँ इस प्रकार है:
 - युवा प्रतिभाशाली कलाकारों को पुरस्कार
 - गुरु शिष्य परंपरा
 - रंगमंच कायाकल्प
 - शिल्पग्राम
 - ऑक्टेव और राष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (NCEP)

साहित्य अकादमी पुरस्कार

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में मराठी लेखिका नंदा खरे ने वर्ष 2014 में लिखे गए अपने उपन्यास "उद्या" (Udya) के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

प्रमुख बिंदु

साहित्य अकादमी पुरस्कार के बारे में:

साहित्य अकादमी पुरस्कार वर्ष 1954 में स्थापित, एक साहित्यिक सम्मान है। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी (नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स) द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

- अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त 24 भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिये भी पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- भारत के संविधान में शामिल 22 भाषाओं के अलावा, साहित्य अकादमी ने अंग्रेज़ी तथा राजस्थानी को भी उन भाषाओं के रूप में मान्यता दी है जिसमें अकादमी के कार्यक्रम को लागू किया जा सकता है।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान है।

पुरस्कार विजेता के चयन हेतु मानदंड:

- लेखक के पास अनिवार्य रूप से भारतीय राष्ट्रीयता होनी चाहिये।
- पुरस्कार के लिये पात्र पुस्तक/रचना का संबंधित भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान होना चाहिये।
- जब दो या दो से अधिक पुस्तकों के लिये समान योग्यता पाई जाती है, तो पुरस्कार की घोषणा हेतु कुछ निश्चित मानदंडों जैसे- साहित्य के क्षेत्र में कुल योगदान तथा लेखकों की स्थिति/ प्रतिष्ठा आदि को ध्यान में रखा जाता है।

ज्ञानपीठ पुरस्कारः

- ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत में सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार है और इसे केवल एक भारतीय नागरिक को प्रतिवर्ष प्रदान किया जा सकता है।
- भारतीय संविधान (८ वीं अनुसूची) में उल्लिखित अन्य भाषाओं के साथ अंग्रेज़ी में भी यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार के अंतर्गत 11 लाख रुपए की नकद राशि, एक प्रशस्ति पत्र और ज्ञान की देवी वाग्देवी (सरस्वती) की एक कांस्य प्रतिकृति प्रदान की जाती है।
- यह सांस्कृतिक संगठन भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रायोजित है।
- वर्ष 2018 में लेखक अमिताव घोष ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता बनने वाले पहले अंग्रेजी भाषा के लेखक बने।
- मलयालम भाषा के अक्कीतम अच्युतन नंबूदिरी को वर्ष 2019 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था।

अन्य साहित्य अकादमी पुरस्कारः

- साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार लेखकों द्वारा बाल साहित्य में उनके योगदान के आधार पर दिया जाता है और पुरस्कार वर्ष से तुरंत पहले के पाँच वर्षों के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों से संबंधित है।
- साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 35 वर्ष और उससे कम आयु के लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से संबंधित है।

कुंभ मेला: हरिद्वार

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में केंद्र ने उत्तराखंड सरकार को राज्य (हरिद्वार में) में चल रहे कुंभ मेले (Kumbh Mela) के दौरान कोविड-19 के प्रसार पर नियंत्रण के लिये कडे उपाय किये जाने के विषय में पत्र लिखा है।

प्रमुख बिंदु

- कुंभ मेला यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची (UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity) के अंतर्गत आता है।
 - कुंभ मेला पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा और शांतिपूर्ण जनसमूह है, जिसके दौरान प्रतिभागी स्नान करते हैं या पिवत्र गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं।
- यह मेला प्रयागराज (गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर), हरिद्वार (गंगा पर), उज्जैन (शिप्रा पर) और नासिक (गोदावरी पर) में हर चार साल के आवर्तन के बाद आयोजित किया जाता है तथा जाति, पंथ या लिंग की परवाह किये बिना लाखों लोग इसमें भाग लेते हैं।

यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची

- यह प्रतिष्ठित सूची उन अमूर्त विरासतों से मिलकर बनी है जो सांस्कृतिक विरासत की विविधता को प्रदर्शित करने और इसके महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करते हैं।
- यह सूची वर्ष 2008 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा पर कन्वेंशन के समय स्थापित की गई थी।

यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की सूची में शामिल हैं:

- (1) वैदिक जप की परंपरा
- (2) रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन
- (3) कुटियाट्टम, संस्कृत थिएटर
- (4) राममन, गढ़वाल हिमालय के धार्मिक त्योहार और धार्मिक अनुष्ठान, भारत
- (5) मुदियेट्टू, अनुष्ठान थियेटर और केरल का नृत्य नाटक
- (6) कालबेलिया लोकगीत और राजस्थान के नृत्य
- (7) छऊ नृत्य
- (8) लद्दाख का बौद्ध जप: हिमालय के लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ
- (9) मणिपुर का संकीर्तन, पारंपरिक गायन, नगाड़े और नृत्य
- (10) पंजाब के ठठेरों द्वारा बनाए जाने वाले पीतल और तांबे के बर्तन

- (11) योग
- (12) नवरोज, नोवरूज, नोवरोज, नाउरोज, नौरोज, नौरेज नूरुज,नवरूज, नेवरूज
- (13) कुंभ मेला
- (14) कोलकाता की दुर्गा पूजा

शिगमोत्सव: गोवा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में गोवा सरकार ने राज्य में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण शिगमोत्सव अथवा शिगमो (Shigmotsav or Shigmo) उत्सव के परेड को केवल तीन स्थानों (पणजी, पोंडा और मापुसा) तक सीमित कर दिया है।

प्रमुख बिंदु

शिगमोत्सव के विषय में:

- यह गोवा के आदिवासी समुदायों द्वारा धान की समृद्ध और सुनहरी फसल के लिये मनाए जाने वाला उत्सव है।
- कुनबी, गावड़ा और वेलिप सिंहत विभिन्न कृषि समुदाय इस त्योहार को मनाते हैं जो वसंत की शुरुआत का भी प्रतीक है।

महोत्सव के दो प्रकार:

- धाक्टो शिग्मो (Dhakto Shigmo- छोटा शिग्मो): यह ग्रामीण आबादी, किसानों और मजदूर वर्ग द्वारा मनाया जाता है।
- वदल्लो शिग्मो (Vhadlo Shigmo- बड़ा शिगमो): इसका महत्त्व अधिक है जो सभी द्वारा मनाया जाता है।

उत्सव:

- समय:
 - शिग्मो उत्सव हिंदू कैलेंडर के अनुसार फाल्गुन-चैत्र महीनों में एक पखवाड़े से अधिक समय तक मनाया जाता है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार हर साल मार्च-अप्रैल में पडता है।
- देवताओं का आह्वानः
 - यह उत्सव 'नमन' (Naman) गीत से शुरू होता है, जो स्थानीय देवताओं का आह्वान करने के लिये है 'मांड' (Maand) नामक मंच पर ढोल, मढ़ले और ताशे जैसे वाद्य यंत्रों को बजाकर गाया जाता है।
 - इसे 'रोम्टा मेल' (Romta Mell) नृत्य कहा जाता है जो गाँव-गाँव घूम कर किया जाता है।
- नृत्यः
 - इस उत्सव में घोड़े मोदिनी (Ghode Modni- घुड़सवार योद्धाओं का नृत्य), गोप और फुगड़ी जैसे लोक नृत्य किये जाते हैं।

- शिगमो स्ट्रीट परेड:
 - 🔷 इस महोत्सव का प्रमुख आकर्षण केंद्र फ्लोट (float) शिगमो स्ट्रीट परेड (Shigmo Street Parade) होती है। इसे राज्य की राजधानी पणजी और मापुसा, वास्को तथा पोंडा जैसे अन्य प्रमुख शहरों में एक वार्षिक रूप में आयोजित किया जाता है।
 - 🔷 यह परेड आमतौर पर मराठा युद्ध की ऐतिहासिक विरासत को दर्शाने के लिये पारंपरिक लोक नृत्यों का प्रदर्शन करते हुए की जाती है।
 - वर्षों से चली आ रही फ्लोट परेड घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करती है।

अन्य नामः

- शिगमो को पूरे भारत में विभिन्न नामों से मनाया जाता है:
 - उत्तर भारत- होली।
 - असम और बंगाल-दोलयात्रा।
 - दक्षिण भारत- कामदहन।
 - महाराष्ट्र- शिमगा।

कवि सारला दास

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उपराष्ट्रपति ने ओडिशा के कटक जिले में आदिकवि सारला दास की 600वीं जयंती समारोह को संबोधित किया।

सारला दास ओडिया साहित्य (Odia literature) के महान विद्वानों में से एक थे।

प्रमुख बिंदुः

- वह पहले विद्वान थे जिन्होंने 15वीं शताब्दी में ओडिया भाषा में अपनी रचनाएँ लिखी थीं।
- इन्हें ओडिया भाषा के तीन प्रमुख ग्रंथों- महाभारत (Mahabharata), विलंका रामायण (Vilanka Ramayana) और चंडी पुराण (Chandi Purana) के लिये जाना जाता है।
- इन्हें लक्ष्मी नारायण वचनिका की रचना हेतु भी जाना जाता है।
- इन्होने ओडिशा के प्रसिद्ध गजपित राजा (1435-67 ई) कपिलेश्वर जिसे कपिलेंद्र के नाम से भी जाना जाता है, के शासनकाल में महाभारत की रचना शुरू की।

ओडिया भाषाः

इंडो-आर्यन परिवार के पूर्वी समृह में सबसे पुरानी, ओडिया भाषा की उत्पत्ति अर्धमागधी प्राकृत से हुई है।

- ओडिया उन छह भाषाओं में शामिल है जिन्हें भारतीय शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।
- यह भारतीय संविधान में आधिकारिक तौर पर "अनुसूचित" भाषा है अर्थात् यह संविधान की अनुसूची 8 में शामिल भाषा है।
- ओडिशा राज्य की मुख्य आधिकारिक भाषा भी है।

पारंपरिक नववर्ष आधारित त्योहार

चर्चा में क्यों?

भारत के उपराष्ट्रपति ने लोगों को 'चैत्र शुक्लादि, गुड़ी पड़वा, उगादि, चेटीचंड, वैसाखी, विसु, पुथंडु और बोहाग बिहू' त्योहारों पर शुभकामनाएँ दीं।

वसंत ऋतु के ये त्योहार भारत में पारंपरिक नववर्ष की शुरुआत के प्रतीक हैं।

प्रमुख बिंदुः

चैत्र शुक्लादिः

- यह विक्रम संवत के नववर्ष की शुरुआत को चिह्नित करता है जिसे वैदिक [हिंदू] कैलेंडर के रूप में भी जाना जाता है।
- विक्रम संवत उस दिन से संबंधित है जब सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को हराया और एक नए युग का आह्वान किया।
- उनकी देखरेख में खगोलिवदों ने चंद्र-सौर प्रणाली के आधार पर एक नया कैलेंडर बनाया जिसका अनुसरण भारत के उत्तरी क्षेत्रों में अभी भी किया जाता है।
- यह चैत्र (हिंदू कैलेंडर का पहला महीना) माह के 'वर्द्धित चरण' (जिसमें चंद्रमा का दृश्य पक्ष हर रात बड़ा होता जाता है) का पहला दिन होता है।

गुड़ी पड़वा और उगादि:

- ये त्योहार कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र सहित दक्कन क्षेत्र में लोगों द्वारा मनाए जाते हैं।
- दोनों त्योहारों के समारोहों में आम प्रथा है कि उत्सव का भोजन मीठे और कड़वे मिश्रण से तैयार किया जाता है।
- दक्षिण में बेवु-बेला नामक गुड़ (मीठा) और नीम (कड़वा) परोसा जाता है, जो यह दर्शाता है कि जीवन सुख और दुख दोनों का मिश्रण है।
- गुड़ी महाराष्ट्र के घरों में तैयार की जाने वाली एक गुड़िया है।
 - गुड़ी बनाने के लिये बाँस की छड़ी को हरे या लाल ब्रोकेड से सजाया जाता है। इस गुड़ी को घर में या खिड़की/दरवाजे के बाहर सभी को दिखाने के लिये प्रमुखता से रखा जाता है।

 उगादि के लिये घरों में दरवाजे आम के पत्तों से सजाए जाते हैं, जिन्हें कन्नड़ में तोरणालु या तोरण कहा जाता है।

चेटी चंडः

- सिंधी 'चेटी चंड' को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। चैत्र माह को सिंधी
 में 'चेत' कहा जाता है।
- यह दिन सिंधियों के संरक्षक संत उदयलाल/झूलेलाल की जयंती के रूप में मनाया जाता है।

नवरेहः

- यह कश्मीर में मनाया जाने वाला चंद्र नववर्ष है।
 - संस्कृत के शब्द 'नववर्ष'से 'नवरेह' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।
- यह चैत्र नवरात्रि के पहले दिन आयोजित किया जाता है।
- इस दिन कश्मीरी पंडित चावल के एक कटोरे के दर्शन करते हैं,
 जिसे धन और उर्वरता का प्रतीक माना जाता है।

बैसाखी:

- इसे हिंदुओं और सिखों द्वारा मनाया जाने वाला बैसाखी भी कहा जाता है।
- यह हिंदू सौर नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।
- यह वर्ष 1699 में गुरु गोविंद सिंह के खालसा पंथ के गठन की याद दिलाता है।
- बैसाखी वह दिन था जब औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों ने एक सभा में जिलयाँवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया था, यह औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय आंदोलन की एक घटना थी।

विशुः

- यह एक हिंदू त्योहार है जो भारत के केरल राज्य, कर्नाटक में तुलु नाडु क्षेत्र, केंद्रशासित प्रदेश पांडिचेरी का माहे जिला, तिमलनाडु के पड़ोसी क्षेत्र और उनके प्रवासी समुदाय में मनाया जाता है।
- यह त्योहार केरल में सौर कैलेंडर के नौवें महीने, मेदाम के पहले दिन को चिह्नित करता है।
- यह हमेशा ग्रेगोरियन कैलेंडर में अप्रैल के मध्य में 14 या 15 अप्रैल को हर वर्ष आता है।

पुथांडू:

- इसे पुथुवरुडम या तिमल नववर्ष के रूप में भी जाना जाता है, यह तिमल कैलेंडर वर्ष का पहला दिन है और पारंपिरक रूप से एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है।
- इस त्योहार की तारीख तिमल महीने चिथिरई के पहले दिन के रूप
 में हिंदू कैलेंडर के सौर चक्र के साथ निर्धारित की जाती है।
- इसलिये यह ग्रेगोरियन कैलेंडर में हर वर्ष 14 अप्रैल को आता है।

बोहाग बिहः

- बोहाग बिहू या रोंगाली बिहू, जिसे हतबिहु (सात बिहू) भी कहा जाता है, असम के उत्तर-पूर्वी भारत और अन्य भागों में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक आदिवासी जातीय त्योहार है।
- यह असमिया नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।
- यह आमतौर पर अप्रैल के दूसरे सप्ताह में आता है, ऐतिहासिक रूप से यह फसल के समय को दर्शाता है।

विश्व धरोहर दिवस

चर्चा में क्यों?

प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को सांस्कृतिक-ऐतिहासिक स्थलों और धरोहरों के संरक्षण हेतु जागरूकता पैदा करने के लिये 'अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल दिवस' अथवा 'विश्व धरोहर दिवस' का आयोजन किया जाता है।

 वर्ष 2021 के लिये इस दिवस की थीम 'कॉम्प्लेक्स पास्ट्स: डाइवर्स प्यूचर्स' (जटिल अतीत: विविध भविष्य) है।

प्रमुख बिंदु

पृष्ठभूमि

- इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स (ICOMOS)
 ने वर्ष 1982 में 'विश्व धरोहर दिवस' की स्थापना की थी और वर्ष
 1983 में इसे 'संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन' (UNESCO) की मंजूरी प्राप्त हुई थी।
- इस दिवस का उद्देश्य विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक-ऐतिहासिक विरासत के बारे में जागरूकता पैदा करना है।
 यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल
- विश्व विरासत स्थल का आशय एक ऐसे स्थान से है, जिसे यूनेस्को द्वारा उसके विशिष्ट सांस्कृतिक अथवा भौतिक महत्त्व के कारण सूचीबद्ध किया गया है।
- विश्व धरोहर स्थलों की सूची को 'विश्व धरोहर कार्यक्रम' द्वारा तैयार किया जाता है, यूनेस्को की 'विश्व धरोहर समिति' द्वारा इस कार्यक्रम को प्रशासित किया जाता है।
- यह सूची यूनेस्को द्वारा वर्ष 1972 में अपनाई गई 'विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण से संबंधित कन्वेंशन' नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संधि में सन्निहित है।

भारत में विश्व धरोहर स्थल

- वर्तमान में भारत में कुल 38 विश्व धरोहर स्थल मौजूद हैं।
- इनमें से 30 'सांस्कृतिक' श्रेणी में हैं, जैसे कि अजंता की गुफाएँ, फतेहपुर सीकरी और हम्पी स्मारक आदि, जबिक 7 'प्राकृतिक' श्रेणी में हैं, जिनमें काजीरंगा, मानस और नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान शामिल हैं।

- वर्ष 2019 में 'जयपुर शहर' को 'सांस्कृतिक' श्रेणी के तहत भारत की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में 38वाँ स्थान प्राप्त हुआ था।
- 'कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान' को 'मिश्रित' श्रेणी के तहत सूचीबद्ध किया गया है।

यूनेस्को

- यूनेस्को को वर्ष 1945 में स्थायी शांति के निर्माण के साधन के रूप में 'मानव जाति में बौद्धिक और नैतिक एकजुटता' विकसित करने हेत् स्थापित किया गया था।
 - यह पेरिस, फ्रॉंस में स्थित है।
- यूनेस्को की प्रमुख पहलें
 - मानव व जीवमंडल कार्यक्रम (MAB)
 - विश्व धरोहर कार्यक्रम
 - ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क
 - रचनात्मक शहरों का नेटवर्क
 - एटलस ऑफ द वल्ड्स लैंग्वेजेज इन डेंजर

इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स (ICOMOS)

- यह यूनेस्को से संबद्ध एक वैश्विक गैर-सरकारी संगठन है। यह भी पेरिस, फ्राँस में स्थित है।
- इसका प्राथमिक मिशन स्मारकों, परिसरों और स्थलों के निर्माण, संरक्षण, उपयोग और बढ़ोतरी को प्रोत्साहन देना है।
- यह यूनेस्को के विश्व धरोहर सम्मेलन के कार्यान्वयन हेतु विश्व धरोहर समिति के एक सलाहकार निकाय के रूप में भी कार्य करता है।
 - इस रूप में यह सांस्कृतिक विश्व विरासतों के नामांकन की समीक्षा करता है और उनकी संरक्षण स्थिति सुनिश्चित करता है।
- वर्ष 1965 में इसकी स्थापना वास्तुकारों, इतिहासकारों और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के बीच शुरू हुई वार्ता का तार्किक परिणाम है, जो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में शुरू हुई और वर्ष 1964 में 'वेनिस चार्टर' के रूप में संपन्न हुई।

लिंगराज मंदिर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में लिंगराज मंदिर (Lingaraj Temple) के चार सेवादारों की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद ओडिशा सरकार द्वारा मंदिर में श्रद्धालुओं के सार्वजनिक प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

अगस्त 2020 में सरकार द्वारा लिंगराज मंदिर को 350 वर्ष पूर्व वाली संरचनात्मक स्थिति प्रदान करने की घोषणा की गई थी।

- 11वीं शताब्दी में निर्मित लिंगराज मंदिर, भगवान शिव को समर्पित मंदिर है इसे भुवनेश्वर (ओडिशा) शहर का सबसे बड़ा मंदिर माना जाता है।
- ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण सोमवंशी राजा ययाति प्रथम (Yayati I) ने करवाया था।
- यह लाल पत्थर से निर्मित है जो कलिंग शैली की वास्तुकला (Kalinga style of Architecture) का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- मंदिर को चार वर्गों में विभाजित किया गया है -
 - विमान (गर्भगृह युक्त संरचना)
 - यज्ञ शाला (प्रार्थना के लिये हॉल)
 - भोग मंडप (प्रसाद हेतु हॉल)
 - नाट्य शाला (नृत्य के लिये हॉल)।
- विशाल परिसर में फैले इस मंदिर में 150 सहायक मंदिर हैं।
- लिंगराज को 'स्वयंभू' (Swayambhu) मंदिर के रूप में जाना जाता है अर्थात् जहाँ शिवलिंग की स्थापना किसी के द्वारा नहीं की गई बल्कि यह स्वत: स्थापित होता है।
- मंदिर का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि यह ओडिशा में शैव और वैष्णववाद संप्रदायों के समन्वय का प्रतीक है।
 - इसका एक कारण शायद यह हो सकता है कि भगवान जगन्नाथ (भगवान विष्णु का एक अवतार) और लिंगराज मंदिर दोनों का विकास एक ही समय पर हुआ है।
 - मंदिर में मौजूद देवता को हरि-हारा (Hari-Hara) के नाम से जाना जाता है जिसमे हरि का अर्थ भगवान विष्णु और हारा का अर्थ है भगवान शिव।
- मंदिर में गैर-हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है
- मंदिर का अन्य आकर्षण बिंदुसागर झील (Bindusagar Lake) है, जो मंदिर के उत्तर दिशा में स्थित है।
- बिंदुसागर झील के पश्चिमी तट पर एकाराम वन नाम का बगीचा स्थिति है। बाद में हिंदू पौराणिक ग्रंथों में भुवनेश्वर की राजधानी ओडिशा को एकामरा वन (Ekamra Van) या आम के पेड़ के वन (Forest of a Single Mango Tree) के रूप में संदर्भित किया गया था।
- ओडिशा में अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारकः
 - कोणार्क सूर्य मंदिर (यूनेस्को विश्व विरासत स्थल)
 - जगन्नाथ मंदिर

- तारा तारिणी मंदिर
- 🔶 उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएँ

कलिंग वास्तुकला के बारे में:

- भारतीय मंदिरों को मोटे तौर पर नागर (Nagara), बेसर (Vesara), द्रविड़ (Dravida) और वास्तुकला की गदग (Gadag) शैलियों में विभाजित किया गया है।
- हालाँकि ओडिशा की मंदिर वास्तुकला अपने अद्वितीय प्रतिनिधित्व के कारण पूरी तरह से एक अलग श्रेणी से मेल खाती है जिसे मंदिर वास्तुकला की कलिंग शैली (Kalinga style) कहा जाता है।
- मोटे तौर पर यह शैली नागर शैली के अंतर्गत आती है।
 वास्तुकला:
- किलंग वास्तुकला में, मूल रूप से एक मंदिर दो भागों में बना होता है, पहला शिखर (Tower) और दूसरा, गर्भगृह (Hall)।
 शिखर को देउल (Deula) तथा गर्भगृह को जगमोहन (Jagmohan) कहा जाता है।
- देउल और जगमोहन की दीवारें पर भव्य रूप में वास्तुशिल्प रूपांकनों और आकृतियों को बनाया जाता है।
- सर्वाधिक एवं बार-बार बनाई जाने वाला आकृति घोड़े की नाल के आकार (Horseshoe Shape) की है, जो कि आदिकाल से प्रचलित है तथा जिसे चैत्य-गृह की बड़ी खिड़िकयों से बनाना शुरू किया जाता है।
- देउल शैली का प्रयोग कर किलंग वास्तुकला में तीन विभिन्न प्रकार के मंदिरों का निर्माण किया गया है:
 - 🔷 रेखा देउल (Rekha Deula)।
 - ♦ पिढा देउल (Pidha Deula)।
 - ♦ खाखरा देउल (Khakhara Deula)।
- प्रथम दो (रेखा देउल, पिढा देउल) का संबंध विष्णु, सूर्य और शिव के मंदिरों से है, जबिक तीसरा (खाखरा देउल) मुख्य रूप से चामुंडा और दुर्गा मंदिरों के संबंधित है।
- रेखा देउल, पिढा देउल का प्रयोग गर्भगृह में किया जाता है जबिक खाखरा देउल का प्रयोग नाट्यशाला और भोग मंडप में देखा जाता है।

महावीर जयंती

चर्चा में ?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने 'महावीर जयंती' (25 अप्रैल, 2021) के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं।

'महावीर जयंती' जैन समुदाय के सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है।

प्रमुख बिंदुः

महावीर जयंती:

- यह दिवस वर्धमान महावीर के जन्म का प्रतीक है। वर्धमान महावीर जैन समुदाय के 24वें तथा अंतिम तीर्थंकर थे, जिन्हें 23वें तीर्थंकर, पार्श्वनाथ (Parshvanatha) के उत्तराधिकारी के रूप में जाना जाता है।
- जैन ग्रंथों के अनुसार, भगवान महावीर का जन्म चैत्र माह में चंद्र पक्ष के 13वें दिन (तेरस) हुआ था।
 - ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, यह दिन प्राय: मार्च या अप्रैल माह में आता है।
- उत्सव: इस दिन भगवान महावीर की मूर्ति के साथ एक जुलूस यात्रा का आयोजन किया जाता है, जिसे 'रथ यात्रा' (Rath Yatra) कहा जाता है। स्तवन या जैन प्रार्थनाओं (Stavans or Jain Prayers) को करते हुए, भगवान की प्रतिमाओं को औपचारिक स्नान कराया जाता है, जिसे 'अभिषेक' (Abhishek) कहा जाता है।

भगवान महावीरः

- भगवान महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व में 'विज्ज साम्राज्य' में कुंडग्राम के राजा सिद्धार्थ और लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला के यहाँ हुआ था। विज्ज संघ आधुनिक बिहार में वैशाली क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
- भगवान महावीर 'इक्ष्वाकु वंश' (Ikshvaku dynasty) से संबंधित थे।
- बचपन में भगवान महावीर का नाम वर्धमान था, जिसका अर्थ होता है 'जो बढता है'।
- उन्होंने 30 वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन को त्याग दिया और 42 वर्ष की आयु में उन्हें 'कैवल्य' यानी सर्वज्ञान की प्राप्ति हुई।
- महावीर ने अपने शिष्यों को अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना),
 ब्रह्मचर्य (शुद्धता) तथा अपिरग्रह (अनासिक्त) का पालन करने की
 शिक्षा दी और उनकी शिक्षाओं को 'जैन आगम' (Jain Agamas) कहा गया।
- प्राकृत भाषा के प्रयोग के कारण प्राय: आम जनमानस भी महावीर और उनके अनुयायियों की शिक्षाओं एवं उपदेशों को समझने में समर्थ थे।
- महावीर को बिहार में आधुनिक राजगीर के पास पावापुरी नामक स्थान पर 468 ईसा पूर्व में 72 वर्ष की आयु में निर्वाण (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) प्राप्त हुआ।
 जैन धर्म
- जैन शब्द की उत्पत्ति 'जिन' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'विजेता'।

- 'तीर्थंकर' एक संस्कृत शब्द है, जिसका प्रयोग संसार सागर से पार लगाने वाले 'तीर्थ' के प्रवर्तक के लिये किया जाता है।
- जैन धर्म में अहिंसा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।
- यह 5 महाव्रतों (5 महान प्रतिज्ञाओं) का प्रचार करता है:
 - अहिंसा
 - सत्य
 - अस्तेय (चोरी न करना)
 - अपरिग्रह (अनासक्ति)
 - ब्रह्मचर्य (शुद्धता)
- इन 5 शिक्षाओं में, ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य/शुद्धता) को महावीर द्वारा जोड़ा गया था।
- जैन धर्म के तीन रत्नों या त्रिरत्न में शामिल हैं:
 - सम्यक दर्शन (सही विश्वास)।
 - सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)।
 - सम्यक चरित्र (सही आचरण)।
- जैन धर्म अपनी सहायता स्वयं ही करने पर बल देता है।
 - इसके अनुसार, कोई देवता या आध्यात्मिक प्राणी नहीं हैं, जो मनुष्य की सहायता करेंगे।
 - यह वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं करता है।
- बाद के समय में, यह दो संप्रदायों में विभाजित हो गया:
 - स्थलबाहु के नेतृत्व में 'श्वेतांबर' (श्वेत-पाद)।
 - भद्रबाहु के नेतृत्व में 'दिगंबर' (आकाश-मंडल) ।
- जैन धर्म में महत्वपूर्ण विचार यह है कि संपूर्ण विश्व सजीव है: यहाँ तक कि पत्थरों, चट्टानों और जल में भी जीवन है।
- जीवित प्राणियों, विशेष रूप से मनुष्यों, जानवरों, पौधों और कीटों के प्रति अहिंसा का भाव जैन दर्शन का केंद्र बिंदु है।
- जैन शिक्षाओं के अनुसार, जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्मों से निर्धारित होता है।
- कर्म के चक्र से स्वयं और आत्मा की मुक्ति के लिये तपस्या और त्याग की आवश्यकता होती है।
- 'संथारा' जैन धर्म का एक अभिन्न हिस्सा है।
 - 🔷 यह आमरण अनशन की एक अनुष्ठान विधि है। श्वेतांबर जैन इसे 'संथारा' कहते हैं, जबिक दिगंबर इसे 'सल्लेखना' कहते हैं।

विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में शामिल छ: स्थल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में छ: भारतीय स्थानों को यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) के विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची (Tentative List) में जोड़ा गया है।

इसकी संस्तुति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) द्वारा दी गई थी, जो भारतीय स्मारकों के संरक्षण और सुरक्षा के लिये जिम्मेदार है।

प्रमुख बिंदु

अस्थायी सूची:

- यूनेस्को के संचालनात्मक दिशा-निर्देश (Operational Guidelines), 2019 के अनुसार किसी भी स्मारक/स्थल को विश्व विरासत स्थल (World Heritage Site) की सूची में अंतिम रूप से शामिल करने से पहले उसे एक वर्ष के लिये इसके अस्थायी सूची में रखना अनिवार्य है।
 - इसमें नामांकन हो जाने के बाद इसे विश्व विरासत केंद्र (World Heritage Centre) को भेज दिया जाता
- इस सूची में भारत के अब तक कुल 48 स्थल शामिल किये गए हैं। अस्थायी सूची में शामिल छ: नए स्थलों के विषय में:
- सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (मध्य प्रदेश):
 - यह सरीस्रप सिहत हिमालयी क्षेत्र की 26 प्रजातियों और नीलगिरि क्षेत्रों की 42 प्रजातियों का घर है, जहाँ बाघों के लिये अरक्षित सबसे बढ़ा क्षेत्र है और बाघों की सबसे बड़ी आबादी पाई जाती है।
- वाराणसी के घाट (उत्तर प्रदेश):
 - ये घाट 14वीं शताब्दी के हैं, लेकिन अधिकांश का पुनर्निर्माण 18वीं शताब्दी में मराठा शासकों के सहयोग से किया गया।
 - इन घाटों का हिंदू पौराणिक कथाओं में (विशेष रूप से स्नान और हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने में) विशेष महत्त्व है।
- हायर बेनकल का महापाषाण स्थल (कर्नाटक):
 - यह लगभग 2,800 वर्ष पुराना सबसे बड़ी प्रागैतिहासिक महापाषाण बस्तियों में से एक महापाषाणिक स्थल है जहाँ कुछ अंत्येष्टि स्मारक अभी भी मौजूद हैं।

- इस स्थान पर ग्रेनाइट के ताबूतों वाले स्मारक हैं। इस स्थान को नवपाषाण (Neolithic) कालीन स्मारकों के अत्यंत मूल्यवान संग्रह के कारण विश्व विरासत स्थल की मान्यता के लिये प्रस्तावित किया गया था।
- मराठा सैन्य वास्तुकला (महाराष्ट्र):
 - महाराष्ट्र में 17वीं शताब्दी के मराठा राजा छत्रपित शिवाजी के समय के 12 किले (शिवनेरी, रायगढ़, तोरणा, राजगढ़, साल्हेर-मुल्हेर, पन्हाला, प्रतापगढ़, लोहागढ़, सिंधुदुर्ग, पद्मदुर्ग, विजयदुर्ग और कोलाबा) हैं।
 - ये किले रॉक-कट सुविधाओं, पहाड़ियों और ढलानों पर परतों में परिधि की दीवारों के निर्माण, मंदिरों, महलों, बाजारों, आवासीय क्षेत्रों तथा मध्ययुगीन वास्तुकला के लगभग हर रूप सहित वास्तुकला के विभिन्न रूपों में नई अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- नर्मदा घाटी में भेड़ाघाट-लमेताघाट, जबलपुर (मध्य प्रदेश):
 - भेड़ाघाट, जिसे भारत का ग्रांड कैन्यन कहा जाता है, जबलपुर जिले का एक शहर है।
 - नर्मदा नदी के दोनों ओर संगमरमर की सौ फीट ऊँची चट्टानें
 और उनके विभिन्न रूप भेड़ाघाट की खासियत है।
 - नर्मदा घाटी में विशेष रूप से जबलपुर के भेड़ाघाट-लमेताघाट क्षेत्र में डायनासोर के कई जीवाश्म पाए गए हैं।
 - नर्मदा नदी संगमरमर की चट्टानों से होकर गुजरती संकरी होती जाती है और अंत में एक झरने के रूप में नीचे गिरती है, जिसका नाम धुआँधार जलप्रपात है।
- कांचीपुरम के मंदिर (तिमलनाडु):
 - कांचीपुरम अपनी आध्यात्मिकता, शांति और रेशम के लिये जाना जाता है।
 - यह वेगावती नदी के तट पर स्थित है।
 - इस ऐतिहासिक शहर में कभी 1,000 मंदिर थे, जिनमें से अब केवल 126 (108 शैव और 18 वैष्णव) ही शेष बचे हैं।
 - इसे पल्लव राजवंश ने 6वीं और 7वीं शताब्दी के बीच अपनी राजधानी बनाया। ये मंदिर द्रविड़ (Dravidian) शैलियों का एक अच्छा उदाहरण है।

वेसाक समारोह

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर वर्चुअल 'वेसाक वैश्विक समारोह' को संबोधित किया।

 यह कार्यक्रम संस्कृति मंत्रालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (IBC) के सहयोग से आयोजित किया गया था, जिसमे दुनिया भर के बौद्ध संघों के प्रमुखों ने हिस्सा लिया।

प्रमुख बिंदु

बुद्ध पूर्णिमा

- इसका आयोजन धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध के जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता है।
 - इसे वेसाक के नाम से भी जाना जाता है। वैश्विक समाज में बौद्ध धर्म के योगदान को देखते हुए वर्ष 1999 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस दिवस को मान्यता दी गई थी।
- तथागत गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञानोदय और महापरिनिर्वाण के रूप में इसे 'तिहरा-धन्य दिवस' माना जाता है।
- बुद्ध पूर्णिमा आमतौर पर अप्रैल और मई माह के बीच पूर्णिमा को पड़ती है और यह भारत में एक राजकीय अवकाश है।
- इस अवसर पर कई भक्त बिहार के बोधगया में स्थित यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल महाबोधि विहार जाते हैं।
 - बोधि विहार वह स्थान है, जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ
 था।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (IBC)

- यह सबसे बड़ा धार्मिक बौद्ध संघ है।
- इस निकाय का उद्देश्य वैश्विक मंच पर बौद्ध धर्म की भूमिका का निर्माण करना है, ताकि बौद्ध धर्म की विरासत को संरक्षित करने, ज्ञान साझा करने और मूल्यों को बढ़ावा देने में मदद मिल सके तथा वैश्विक वार्ता में सार्थक भागीदारी के साथ बौद्ध धर्म का संयुक्त प्रतिनिधित्व किया जा सके।
- नवंबर 2011 में नई दिल्ली में 'वैश्विक बौद्ध मण्डली' (GBC)
 की मेजबानी की गई थी, जहाँ उपस्थित लोगों ने सर्वसम्मित से एक अंतर्राष्ट्रीय अम्ब्रेला निकाय- अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध पिरसंघ (IBC) के गठन के प्रस्ताव को अपनाया।
- मुख्यालय: दिल्ली (भारत)

गौतम बुद्ध के विषय में

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म सिद्धार्थ गौतम के रूप में लगभग 563 ईसा पूर्व लुंबिनी में हुआ था और वे शाक्य वंश के थे।
- गौतम ने बिहार के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे बोधि (ज्ञानोदय) प्राप्त किया था।
- बुद्ध ने अपना पहला उपदेश उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास सारनाथ गाँव में दिया था। इस घटना को धर्म चक्र प्रवर्तन (कानून के पिहये का घूमना) के रूप में जाना जाता है।
- उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में 80 वर्ष की आयु में 483 ईसा पूर्व में उनका निधन हो गया। इस घटना को महापिरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

उन्हें भगवान विष्णु के दस अवतारों में से आठवाँ अवतार माना जाता है।

बौद्ध धर्म

परिचय

- भारत में बौद्ध धर्म की शुरुआत लगभग 2600 वर्ष पूर्व हुई थी।
- बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाएँ चार महान आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग की मूल अवधारणा में समाहित हैं।
 - दुख (पीड़ा) और उसका विलुप्त होना बुद्ध के सिद्धांत के केंद्र में है।
- बौद्ध धर्म का सार आत्मज्ञान या निर्वाण की प्राप्ति में है, जिसे इस जीवन में प्राप्त किया जा सकता है।
- बौद्ध धर्म में कोई सर्वोच्च देवता या देवी नहीं है।

बौद्ध परिषद

बौद्ध परिषद	संरक्षक	स्थान	अध्यक्ष	वर्ष
पहली	अजातशत्रु	राजगृह	महाकस्यप	483 ई.पू.
दूसरी	कालाशोक	वैशाली	सुबुकामि	383 ई.पू.
तीसरी	अशोक	पाटलिपुत्र	मोगालिपुत्र	250 ई.पू.
चौथी	कनिष्क	कुण्डलवन	वसुमित्र	72 ई.

बौद्ध धर्म की शाखाएँ

महायान (मूर्ति पूजा), हीनयान, थेरवाद, वज्रयान (तांत्रिक बौद्ध धर्म), ज़ेन।

बौद्ध धर्म ग्रंथ (त्रिपिटक)

विनयपिटक (मठवासी जीवन पर लागू नियम), सुत्तपिटक (बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ या धम्म), अभिधम्मपिटक (एक दार्शनिक विश्लेषण और शिक्षण का व्यवस्थापन)।

भारतीय संस्कृति में बौद्ध धर्म का योगदान

- अहिंसा की अवधारणा बौद्ध धर्म का प्रमुख योगदान है। बाद के समय में यह हमारे राष्ट्र के पोषित मूल्यों में से एक बन गई।
- भारत की कला एवं वास्तुकला में इसका योगदान उल्लेखनीय है। सांची, भरहुत और गया के स्तूप वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं।
- इसने तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे आवासीय विश्वविद्यालयों के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा दिया।
- पाली और अन्य स्थानीय भाषाओं की भाषा बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के माध्यम से विकसित हुई।
- इसने एशिया के अन्य हिस्सों में भारतीय संस्कृति के प्रसार को भी बढ़ावा दिया था।

बौद्ध धर्म से संबंधित यूनेस्को के विरासत स्थल

- नालंदा, बिहार में नालंदा महाविहार का पुरातात्त्विक स्थल
- साँची, मध्य प्रदेश में बौद्ध स्मारक
- बोधगया, बिहार में महाबोधि विहार परिसर
- अजंता गुफाएँ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

बेगम सुल्तान जहाँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बेगम सुल्तान जहाँ की पुण्यतिथि मनाई गई।

वह एक परोपकारी, विपुल लेखिका, नारीवादी तथा महिला सशक्तीकरण का प्रतीक होने के साथ ही अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की प्रथम महिला चांसलर भी थीं।

प्रमुख बिंद्

जन्म: १ जुलाई, 1858 (भोपाल)।

भोपाल की शासकः

- वह भोपाल की आखिरी बेगम थीं। उन्होंने वर्ष 1909 से 1926 तक शासन किया जिसके बाद उनका पुत्र उत्तराधिकारी बना।
 - वह भोपाल की चौथी बेगम (महिला शासक) थीं।
- उन्होंने नगर पालिका प्रणाली की स्थापना की, नगरपालिका चुनावों की शुरुआत की और अपने लिये एक किलेबंद शहर तथा एक महल का निर्माण करवाया।
- किलेबंद शहर में उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और जल की आपूर्ति में सुधार हेतु कदम उठाए तथा इस शहर के निवासियों के लिये व्यापक टीकाकरण अभियान लागू किया।

नारीवाद का प्रतीकः

- उन्होंने एक ऐसे समय में महिलाओं के लिये प्रगतिशील नीतियों की शुरुआत की जब महिलाएँ पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं के अधीन थी। इसके चलते आज भी उन्हें नारीवाद का प्रतीक माना जाता है।
- वर्ष 1913 में उन्होंने लाहौर में महिलाओं के लिये एक मीटिंग हॉल (Meeting Hall for Ladies) का निर्माण करवाया।
- महिलाओं को प्रोत्साहित करने और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिये उन्होंने भोपाल में 'नमाइश मस्त्रआत ए हिंद' (Numaish Masunuaat e Hind) नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

परोपकारी:

ज़रूरतमंद छात्रों की मदद के लिये उन्होंने तीन लाख रुपए की निधि के साथ 'सुल्तान जहाँ एंडोमेंट ट्रस्ट' (Sultan Jahan Endowment Trust) की स्थापना की।

- उन्होंने देवबंद (उत्तर प्रदेश) में एक मदरसा, लखनऊ में नदवतुल उलूम और यहाँ तक कि मक्का, सऊदी अरब में मदरसा सुल्तानिया को भी निधि/वित्त प्रदान किया।
- लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली जैसे संस्थानों और बॉम्बे और कलकत्ता के कुछ प्रसिद्ध कॉलेजों ने उनसे प्रचुर अनुदान प्राप्त किया।

शिक्षाविद्:

- उन्होंने 41 किताबें लिखीं तथा अंग्रेजी भाषा की कई पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद किया।
- उनके द्वारा लिखी गई दर्स-ए-हयात (Dars-e-Hayat) नामक पुस्तक में युवा लड़िकयों की शिक्षा और पालन-पोषण के बारे में बताया गया है।
- उन्होंने स्वयं शुरू िकये गए सुल्तािनया स्कूल में पाठ्यक्रम को नया रूप दिया और अंग्रेजी, उर्दू, अंकगिणत, गृह विज्ञान तथा शिल्प जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शािमल िकया।
- उन्होंने लेडी मिंटो नर्सिंग स्कूल (Lady Minto Nursing School) नाम से एक नर्सिंग स्कूल भी शुरू किया।
- मृत्युः 12 मई 1930

तुलू भाषा

चर्चा में क्यों?

मुख्य रूप से कर्नाटक और केरल में तुलू भाषी लोगों ने सरकार से इसे आधिकारिक भाषा का दर्जा देने और संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का अनुरोध किया है।

 वर्ष 2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy- NEP) में तुलू को शामिल करने की मांग उठी थी।

किसी राज्य की राजभाषा या भाषाएँ

- भारतीय संविधान का भाग XVII अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा से संबंधित है।
- संविधान का अनुच्छेद 345 कहता है कि "राज्य का विधानमंडल कानून द्वारा राज्य में उपयोग की जाने वाली किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किसी भी आधिकारिक उद्देश्य के लिये उपयोग की जाने वाली भाषा के रूप में अपना सकता है"

संविधान की आठवीं अनुसूची

 आठवीं अनुसूची से संबंधित संवैधानिक प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 344 (1) और 351 में हैं।

- आठवीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध भाषाएँ हैं:
 - (1) असिमया (2) बांग्ला (3) गुजराती (4) हिंदी (5) कन्नड़ (6) कश्मीरी (7) कोंकणी (8) मलयालम (9) मिणपुरी (10) मराठी (11) नेपाली (12) उड़िया (13) पंजाबी (14) संस्कृत (15) सिंधी (16) तिमल (17) तेलुगु (18) उर्दू (19) बोडो (20) संथाली (21) मैथिली और (22) डोगरी।
- भाषाओं को संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से जोड़ा जाता है।

प्रमुख बिंदु

'तुलू' भाषा के बारे में:

- तुलू (Tulu) एक द्रविड़ भाषा है, जिसे बोलने-समझने वाले लोग मुख्यतया कर्नाटक के दो तटीय जिलों और केरल के कासरागोड जिले में रहते हैं।
 - दक्षिण भारत के केरल और कर्नाटक राज्यों के तुलू बाहुल्य क्षेत्र को तुलूनाडू नाम से भी जाना जाता है। तुलूनाडू को अलग राज्य का दर्जा देने की मांग की जा रही है।
- जनगणना 2011 के अनुसार, तुलू भाषी (तुलू भाषा बोलने वाले)
 स्थानीय लोगों की संख्या लगभग 18,46,427 थी।
- तुलू में सबसे पुराने उपलब्ध शिलालेख 14वीं से 15वीं शताब्दी ईस्वी के बीच के हैं।
- कुछ वर्ष पहले कर्नाटक सरकार द्वारा तुलू को स्कूल में एक भाषा के रूप में पेश किया गया था।

तुलू भाषा की कला और संस्कृति:

- तुलू में लोकगीत रूपों जैसे- पद्दना (Paddana) और पारंपिरक लोक रंगमंच यक्षगान के साथ एक समृद्ध मौखिक साहित्य परंपरा है।
- तुलू में सिनेमा की एक सिक्रय परंपरा भी है, जिसमें प्रतिवर्ष लगभग
 5 से 7 फिल्में तुलू भाषा में बनती हैं।

मान्यता का मामलाः

- संविधान का अनुच्छेद 29: यह "अल्पसंख्यकों के हितों के संरक्षण"
 से संबंधित है। इसमें कहा गया है कि भारत के राज्य क्षेत्र या उसके
 किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग, जिसकी अपनी
 विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, को बनाए रखने का अधिकार
 होगा।
- युलु उद्घोषणाः
 - युलु उद्घोषणा (Yuelu Proclamation) को यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) द्वारा 2018 में सेंट्रल चीन के हुनान प्रांत के चांग्शा में भाषा संसाधन संरक्षण पर पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपनाया गया था।

- यह अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, राज्यों, सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों से विश्व में भाषायी विविधता के संरक्षण और संवर्द्धन पर आम सहमित पर पहुँचने का आह्वान करता है।
- आठवीं अनुसूची के तहत मान्यता के लाभ:
 - साहित्य अकादमी से मान्यता।
 - साहित्य अकादमी को भारत की राष्ट्रीय पत्र अकादमी भी कहा जाता है, जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में निहित साहित्य को संरक्षित करती है और उन्हें बढ़ावा देती है।
 - तुलू साहित्यिक कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद।
 - संसद सदस्य (Members of Parliament- MP) और विधानसभा के सदस्य (Members of the Legislative Assembly- MLA) क्रमशः संसद और राज्य विधानसभाओं में तुलु बोल सकते हैं।
 - सिविल सेवा परीक्षा जैसी अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं में तुलू में परीक्षा देने का विकल्प।
 - केंद्र सरकार की ओर से विशेष फंड।
 - प्राथमिक और हाईस्कूल में तुलू का अध्यापन।

संत कबीर दास जयंती

चर्चा में क्यों?

24 जून, 2021 को संत कबीर दास (Sant Kabir Das Jayanti) की जयंती मनाई गई।

कबीर दास जयंती हिंदू चंद्र कैलेंडर (Hindu Lunar Calendar) के अनुसार ज्येष्ठ पूर्णिमा तिथि को मनाई जाती है।

प्रमुख बिंदु:

परिचय:

- संत कबीर दास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ था। वह 15वीं शताब्दी के रहस्यवादी कवि, संत और समाज सुधारक तथा भक्ति आंदोलन के प्रस्तावक थे।
 - कबीर की विरासत अभी भी 'कबीर का पंथ' (एक धार्मिक समुदाय जो उन्हें संस्थापक मानता है) नामक पंथ के माध्यम से चल रही है।
- शिक्षक: उनका प्रारंभिक जीवन एक मुस्लिम परिवार में बीता, परंतु वे अपने शिक्षक, हिंदू भक्ति नेता रामानंद से काफी प्रभावित थे।
- साहित्यः कबीर दास के लेखन का भक्ति आंदोलन पर बहुत प्रभाव पडा तथा इसमें कबीर ग्रंथावली, अनुराग सागर, बीजक और सखी ग्रंथ जैसे शीर्षक शामिल हैं।
 - उनके छंद सिख धर्म के ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में पाए जाते हैं।

- 🔷 उनके प्रमुख कार्यों का संकलन पाँचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव द्वारा किया गया था।
- उन्होंने अपने दो-पंक्ति के दोहों के लिये सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की, जिन्हें 'कबीर के दोहे' के नाम से जाना जाता है।
- भाषा: कबीर की कृतियाँ हिंदी भाषा में लिखी गईं, जिन्हें समझना आसान था। लोगों को जागरूक करने के लिये वहअपने लेख दोहों के रूप में लिखते थे।

भक्ति आंदोलनः

- शुरुआत: आंदोलन की शुरुआत संभवत: 6वीं और 7वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास तिमल क्षेत्र में हुई और अलवार (विष्णु के भक्त) तथा नयनार (शिव के भक्त), वैष्णव और शैव कवियों की कविताओं के माध्यम से आंदोलन ने काफी लोकप्रियता प्राप्त की।
 - अलवार और नयनार अपने देवताओं की स्तृति में तमिल में भजन गाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे।
 - नालियर दिव्यप्रबंधम अलवारों की एक रचना है। इसे प्राय: तमिल वेद के रूप में वर्णित किया जाता है।
- वर्गीकरण: एक अलग स्तर पर धर्म के इतिहासकार प्राय: भक्ति परंपराओं को दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं: सगुण (विशेषताओं या गुणों के साथ) और निर्गुण (विशेषताओं या गुणों के बिना)।
 - सगुण में ऐसी परंपराएँ शामिल थीं जो शिव, विष्णु और उनके अवतार देवी या देवी के रूपों जैसे विशिष्ट देवताओं की पूजा पर केंद्रित थीं, जिन्हें प्राय: मानवशास्त्रीय रूपों में अवधारणाबद्ध किया जाता था।
 - दूसरी ओर निर्गुण भक्ति भगवान के एक अमूर्त रूप की पूजा थी।

सामाजिक व्यवस्थाः

- यह आंदोलन भारतीय उपमहाद्वीप के हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों द्वारा भगवान की पूजा से जुड़े कई संस्कारों तथा अनुष्ठानों के लिये उत्तरदायी था। उदाहरण के लिये एक हिंदू मंदिर में कीर्तन, एक दरगाह में कव्वाली (मुसलमानों द्वारा) तथा एक गुरुद्वारे में गुरबानी का गायन।
- वे प्राय: सभी सत्तावादी मठवासी व्यवस्था के विरोधी थे।
- उन्होंने समाज में सभी प्रकार सांप्रदायिक कट्टरता और जातिगत भेदभाव की भी कडी आलोचना की।
- उच्च और निम्न दोनों जातियों से आने वाले इन कवियों ने साहित्य का एक दुर्जेय (Formidable) निकाय बनाया जिसने खुद को लोकप्रिय कथाओं में मज़बूती से स्थापित किया।
- उन सभी ने सामाजिक जीवन में वास्तविक मानवीय आकांक्षाओं और सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में धर्म की प्रासंगिकता का दावा किया।

- भक्ति कवियों ने ईश्वर के प्रति समर्पण पर जोर दिया।
- आंदोलन की प्रमुख उपलब्धि मूर्ति पूजा का उन्मूलन था।

महिलाओं की भूमिकाः

- अंडाल एक महिला अलवार थी और वह खुद को विष्णु की प्रेमिका के रूप में देखती थी।
- कराईकल अम्मैयार शिव की भक्त थीं और उन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कठोर तपस्या का मार्ग अपनाया। उनकी रचनाओं को नयनार परंपरा के भीतर संरक्षित किया गया है।

महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वः

- कन्नड़ क्षेत्र: इस क्षेत्र में आंदोलन 12वीं शताब्दी में बसवन्ना (1105-68) द्वारा शुरू किया गया था।
- महाराष्ट्र: महाराष्ट्र में भिक्त आंदोलन 13वीं सदी के अंत में शुरू हुआ। इसके समर्थकों को वारकरी कहा जाता था।
 - इसके सबसे लोकप्रिय नामों में ज्ञानदेव (1275-96), नामदेव (1270-50) और तुकाराम (1608-50) थे।
- असम: श्रीमंत शंकरदेव एक वैष्णव संत थे जिनका जन्म 1449 ईस्वी में असम के नगांव जिले में हुआ था। उन्होंने नव-वैष्णव आंदोलन शुरू किया था।
- बंगाल: चैतन्य बंगाल के एक प्रसिद्ध संत और सुधारक थे जिन्होंने कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया।
- उत्तरी भारत: इस क्षेत्र में 13वीं से 17वीं शताब्दी तक बड़ी संख्या
 में किव फले-फूले, ये सभी भक्ति आंदोलन के काफी महत्त्वपूर्ण
 व्यक्ति थे।
 - जबिक कबीर, रिवदास और गुरु नानक ने निराकार भगवान (निर्गुण भिक्त) को बात की, राजस्थान की मीराबाई (1498-1546) ने कृष्ण की स्तुति में भिक्त छंदों की रचना की और उनका गुणगान किया।
 - सूरदास, नरसिंह मेहता और तुलसीदास ने भी भिक्त साहित्य के सिद्धांत में अमूल्य योगदान दिया तथा इसकी गौरवशाली विरासत को बढ़ाया।

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसरः लोथल

चर्चा में क्यों ?

संस्कृति मंत्रालय (MoC) और पत्तन, पोत परिवहन ईवा जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) ने गुजरात के लोथल में 'राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर' (NMHC) के विकास में सहयोग हेतु एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किये हैं।

प्रमुख बिंदु

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर

- 'राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर' (NMHC) गुजरात के लोथल क्षेत्र में विकसित किया जाएगा।
- इसे एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा,
 जहाँ प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक की भारत की समुद्री
 विरासत को प्रदर्शित किया जाएगा।
 - इस परिसर को मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा प्रदान करने के दृष्टिकोण से विकसित किया जाएगा।
- इस परिसर को लगभग 400 एकड़ के क्षेत्र में विकसित किया जाएगा, जिसमें राष्ट्रीय समुद्री विरासत संग्रहालय, लाइट हाउस संग्रहालय, विरासत थीम पार्क, संग्रहालय थीम वाले होटल, समुद्री थीम वाले इको-रिसॉर्ट्स और समुद्री संस्थान जैसी विभिन्न अनूठी संरचनाएँ शामिल होंगी।
- इस परिसर में कई मंडप भी शामिल होंगे, जहाँ भारत के विभिन्न तटीय राज्य और केंद्रशासित प्रदेश की कलाकृतियों और समुद्री विरासत को प्रदर्शित किया जाएगा।
- इस परिसर की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसे गुजरात के लोथल शहर में स्थापित किया जा रहा है, जो कि प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख शहरों में से एक है।

लोथल के विषय में

- लोथल गुजरात में स्थित प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे दक्षिणी शहरों में से एक था।
- इस शहर का निर्माण लगभग 2400 ईसा पूर्व में शुरू हुआ था।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) की मानें तो लोथल में दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात डॉक था, जो लोथल शहर को सिंध के हड़प्पा शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच व्यापार मार्ग पर साबरमती नदी के एक प्राचीन मार्ग से जोड़ता था।
- प्राचीन काल में लोथल एक महत्त्वपूर्ण एवं संपन्न व्यापार केंद्र था,
 जिसके मोतियों, रत्नों और बहुमूल्य गहनों का व्यापार पश्चिम
 एशिया और अफ्रीका के सुदूर क्षेत्रों तक विस्तृत था।
 - मनके बनाने और धातु विज्ञान में इस शहर के लोगों ने जिन तकनीकों और उपकरणों का प्रयोग किया वे वर्षों बाद आज भी प्रयोग की जा रही हैं।
- लोथल स्थल को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित
 किया गया है और यूनेस्को की अस्थायी सूची में इसका आवेदन
 अभी भी लंबित है।

सिंध् घाटी सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता के रूप में प्रचलित सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 2,500 ईसा पूर्व दक्षिण एशिया के पश्चिमी भाग में समकालीन पाकिस्तान और पश्चिमी भारत में विकसित हुई थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता चार प्राचीनतम सबसे बड़ी शहरी सभ्यताओं में से एक थी. अन्य शहरी सभ्यताओं में मेसोपोटामिया. मिस्र और चीन शामिल हैं।
- यह मूल रूप से एक शहरी सभ्यता थी, जहाँ लोग सुनियोजित और बेहतर तरह से निर्मित कस्बों में रहते थे, जो व्यापार के केंद्र भी थे।
 - यहाँ चौडी सडकें और बेहतर तरीके से विकसित जल निकासी व्यवस्था मौजूद थी।
 - घर पकी हुई ईंटों के बने होते थे और घरों में दो या दो से अधिक मंजिलें होती थीं।
- हड़प्पावासी अनाज उगाने की कला जानते थे और गेंहूँ तथा जौ उनके भोजन का मुख्य हिस्सा थे।
- 1500 ईसा पूर्व तक हड़प्पा संस्कृति का अंत हो गया। सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के लिये उत्तरदायी विभिन्न कारणों में बार-बार आने वाली बाढ और भुकंप जैसे अन्य प्राकृतिक कारण शामिल हैं।

हुमायूँ का मकबरा: मुगल वास्तुकला

चर्चा में क्यों?

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-ASI) ने अधिसूचित किया कि हुमायूँ के मकबरे सहित देश भर के सभी केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारक, स्थल और संग्रहालय 16 जून, 2021 से आगंतुकों के लिये खोल दिये हैं।

- दिल्ली स्थित हुमायूँ का मकबरा महान मुगल वास्तुकला का बेहतरीन नमुना है।
- संस्कृति मंत्रालय के तहत कार्यरत ASI, पुरातातात्त्विक अनुसंधान और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिये प्रमुख संगठन

प्रमुख बिंदुः

हुमायूँ का मकबरा:

- संदर्भ:
 - इस मकबरे का निर्माण वर्ष 1570 में हुआ था। यह मकबरा विशेष सांस्कृतिक महत्त्व का है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था।
 - इसकी अनोखी सुंदरता को अनेक प्रमुख वास्तुकलात्मक नवाचारों से प्रेरित कहा जा सकता है, जो एक अतुलनीय ताजमहल के निर्माण में प्रवर्तित हुआ।

- इसका निर्माण हुमायूँ के पुत्र महान सम्राट अकबर के संरक्षण में किया गया था।
- इसे 'मुगलों का शयनागार' भी कहा जाता है क्योंकि इसके कक्षों में 150 से अधिक मुगल परिवार के सदस्य दबे हुए हैं।
- 🔷 हुमायूँ का मकबरा चारबाग (कुरान के स्वर्ग की चार नदियों के साथ चार चतुर्भुज उद्यान) का एक उदाहरण है, जिसमें चैनल शामिल हैं।
- 🔷 संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने वर्ष 1993 में इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी।

मुगल वास्तुकलाः

- संदर्भ:
 - यह एक इमारत शैली है जो 16वीं सदी के मध्य से 17वीं सदी के अंत तक मुगल सम्राटों के संरक्षण में उत्तरी और मध्य भारत में फली-फूली।
 - मुगल काल ने उत्तरी भारत में इस्लामी वास्तुकला के एक महत्त्वपूर्ण पुनरुद्धार को चिह्नित किया। मुगल बादशाहों के संरक्षण में फारसी, भारतीय और विभिन्न प्रांतीय शैलियों को गुणवत्ता और शोधन कार्यों के लिये संरक्षण दिया गया था।
 - यह विशेष रूप से उत्तर भारत में इतना व्यापक हो गई कि इसे इंडो-सरसेनिक शैली के ओपनिवेशिक वास्तुकला में भी देखा जा सकता है।
- महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ:
 - मिश्रित वास्तुकला: यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रण था।
 - विविधता: विभिन्न प्रकार की इमारतें, जैसे- राजसी द्वार (प्रवेश द्वार), किले, मकबरे, महल, मस्जिद, सराय आदि इसकी विविधता थी।
 - 🔷 भवन निर्माण सामग्री: इस शैली में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया जाता था।
 - विशेषता: इस शैली में विशिष्ट विशेषताएँ हैं जैसे- मकबरे की चारबाग शैली, स्पष्ट बल्बनुमा गुंबद, कोनों पर पतले बुर्ज, चौड़े प्रवेश द्वार, सुंदर सुलेख, अरबी और स्तंभों तथा दीवारों पर ज्यामितीय पैटर्न एवं स्तंभों पर समर्थित महल हॉल आदि थी।
 - मेहराब, छतरी और विभिन्न प्रकार के गुंबद भारत-इस्लामी वास्तुकला में बेहद लोकप्रिय हो गए तथा मुगलों के शासन के तहत इसे और विकसित किया गया।
- उदाहरण:
 - ताजमहल:
 - शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में वर्ष 1632-1653 के बीच इसका निर्माण कराया था।

- यूनेस्को ने वर्ष 1983 में ताजमहल को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी। यह आगरा में स्थित है।
- लाल किला:
 - वर्ष 1618 में शाहजहाँ ने इसका निर्माण तब कराया जब उसने राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतिरत करने का फैसला किया। यह मुगल शासकों का निवास स्थान था।
 - यूनेस्को ने इसे वर्ष 2007 में विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया था।
- जामा मस्जिद:
 - इसका निर्माण दिल्ली में शाहजहाँ द्वारा किया गया था।
 इसका निर्माण कार्य वर्ष 1656 में पूरा हुआ था।
- बादशाही मस्जिद:
 - इसका निर्माण औरंगजेब के शासनकाल के दौरान हुआ।
 वर्ष 1673 मेंइसके पूरा होने के समय यह विश्व की सबसे
 बड़ी मस्जिद थी। यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर में स्थित है।

सिलंबम

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सिंगापुर में प्रवासी श्रमिकों हेतु सरकार द्वारा शुरू की गई प्रतियोगिता में गणेशन संधिराकासन (Ganesan Sandhirakasan) नाम के एक भारतीय ने सिलंबम (Silambam) के प्रदर्शन में शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किया है।

प्रमुख बिंदुः

सिलंबम के बारे में:

- सिलंबम एक प्राचीन हथियार आधारित मार्शल आर्ट (Weapon-Based Martial Art) है जिसकी उत्पत्ति तमिलकम में हुई जो वर्तमान में भारत का तमिलनाडु क्षेत्र है। यह विश्व के सबसे पुराने मार्शल आर्ट में से एक है।
- सिलंबम शब्द स्वयं एक खेल के बारे में बताता है, सिलम का अर्थ है 'पहाड़' (Mountain) और बम का अर्थ बाँस (Bamboo) है जिसका उपयोग मार्शल आर्ट के इस रूप में मुख्य हथियार के रूप में किया जाता है।
 - यह केरल के मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू (kalaripayattu)
 से निकटता रखता है।
- पैरों की गित, सिलंबम (Silambam) और कुट्टा वारिसाई (Kutta Varisai के प्रमुख तत्व हैं। छड़ी की गित के साथ तालमेल बनाने के लिये पैर की गित में महारत हासिल करने हेतु सोलह प्रकार के संचालनों (Movement) की आवश्यकता होती है।

 इसके प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कई सशस्त्र विरोधों के खिलाफ रक्षा प्रदान करना है।

इस्तेमाल किये जाने वाले हथियार:

- बाँस की छड़ी (Bamboo staff)- यह मुख्य हथियार है तथा इसकी लंबाई प्रयोग करने वाले की ऊँचाई पर निर्भर करती है।
- मारू (Maru)- यह एक धमाकेदार हथियार है जिसे हिरण के सींगों से बनाया जाता है।
- अरुवा (दरांती), सवुकु (कोड़ा), वाल (घुमावदार तलवार),
 कुट्टू कटाई (नुकीली अँगुली डस्टर), कट्टी (चाकू), सेडिकुची
 (लाठी या छोटी छड़ी)।

उत्पत्तिः

- ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति ऋषि अगस्त्य मुनिवर (Agastya Munivar) द्वारा लगभग 1000 ईसा पूर्व हुई थी।
- सिलप्पादिक्करम और संगम साहित्य (Sangam literature) में इस प्रथा के बारे में उल्लेख किया गया है तथा यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की है, जबिक मौखिक लोक कथाओं में इसे और अधिक लगभग 7000 वर्ष प्राचीन माना जाता है।
 - लेकिन हाल के सर्वेक्षणों और पुरातात्त्विक उत्खनन से इस बात की पुष्टि की गई है कि सिलंबम का अभ्यास कम-से-कम 10,000 ईसा पूर्व किया जाता था।

भारत के अन्य मार्शल आर्ट्स

- गतका- पंजाब
- पाइका- ओडिशा
- थांग ता- मणिपुर
- कलारीपयट्टू- केरल
- छोलिया- उत्तराखंड
- पांग ल्हबसोल- सिक्किम
- मुष्टियुद्ध- उत्तर प्रदेश
- मर्दानी खेल- महाराष्ट
- परी खंडा- बिहार

कालबेलिया नृत्य

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कोविड-19 महामारी के कारण कालबेलिया नृत्य (Kalbeliya Dance) करने वाले छात्रों के बीच चेंडाविया (Chendavia) नामक एक एप लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।

प्रमुख बिंदुः

परिचय:

- कालबेलिया नृत्य कालबेलिया समुदाय के पारंपरिक जीवनशैली की एक अभिव्यक्ति है।
 - यह इसी नाम की एक राजस्थानी जनजाति से संबंधित है।
- इसे वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठनों (UNESCO) की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सूची में शामिल किया गया था।
 - UNESCO की प्रतिष्ठित सुची उन अमूर्त विरासतों से मिलकर बनी है जो सांस्कृतिक विरासत की विविधता को प्रदर्शित करने और इसके महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करते हैं।
 - यह सूची 2008 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा पर कन्वेंशन के समय स्थापित की गई थी।
- इस नृत्य रूप में घुमना और रमणीय संचरण शामिल है जो इस नृत्य को देखने लायक बनाता है।
 - कालबेलिया से जुड़े मुवमेंट भी इसे भारत में लोक नृत्य के सबसे भावमय रूपों में से एक बनाते हैं।
- यह प्राय: किसी भी खुशी के उत्सव पर किया जाता है और इसे कालबेलिया संस्कृति का एक अभिन्न अंग माना जाता है।
- कालबेलिया नृत्य का एक और अनुठा पहलू यह है कि इसे केवल महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जबकि पुरुष वाद्य यंत्र बजाते हैं और संगीत प्रदान करते हैं।

वाद्य-यंत्र और पोशाक:

- घेरदार काले घाघरे में (काली स्कर्ट) में महिलाएँ गोल गोल घूमते हुए सर्प की नकल करते हुए नृत्य करती हैं, जबकि पुरुष उनके साथ 'खंजारी' (khanjari) और 'पुंगी' (Poongi) वाद्य यंत्र बजाते हैं, जो पारंपरिक रूप से सॉॅंपों को पकड़ने हेतु बजाया जाता है।
- नर्तक शरीर पर पारंपरिक टैट्र निर्मित करवाते हैं तथा आभूषण, छोटे दर्पण और चांदी के धागे से निर्मित कढाई वाले वस्त्र पहनते हैं।

कालबेलिया संगीत/गीत:

- कालबेलिया गीतों में कथाओं एवं कहानियों के माध्यम से पौराणिक ज्ञान का प्रसार किया जाता है।
- इन गीतों में कालबेलिया के काव्य कौशल का प्रदर्शन होता है जिसका प्रयोग नृत्य प्रदर्शन हेतु गीतों को सहज रूप से लिखने और गीतों को बेहतर बनाने हेतु किया जाता है।
- पीढी-दर-पीढी प्रेषित गीत और नृत्य एक मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं, जिसके लिये कोई पाठ या प्रशिक्षण नियमावली मौजूद नहीं है।

कालबेलिया जनजातिः

- कालबेलिया जनजाति के लोग कभी पेशेवर रूप से सर्प को पकड़ने (Professional Snake Handlers) का कार्य करते थे. आज वे संगीत और नृत्य में अपने पूर्व व्यवसाय को बनाए हुए हैं जो नए व रचनात्मक तरीकों के माध्यम से सामने आ रहा है।
- वे खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हैं और अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) में शामिल हैं।
- कालबेलिया की सबसे अधिक आबादी पाली जिले में पाई जाती है. उसके बाद अजमेर, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिले (राजस्थान) में हैं।

राजस्थान के अन्य पारंपरिक लोक नृत्य: गैर, कच्छी घोड़ी, घूमर, भवई आदि शामिल हैं।

यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त 13 अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें

1.	वैदिक जप की परंपरा, 2008	8.	लद्दाख का बौद्ध जपः हिमालय के लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत मृं पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ, 2012
2.	रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन, 2008	9.	मणिपुर का संकीर्तन, अनुष्ठान, गायन, ढोलक बजाना और नृत्य करना, 2013
3.	कुटियाट्टम, संस्कृत थिएटर, 2008	10.	जंडियाला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरों के बीच पारंपरिक तौर पर पीतल और तांबे के बर्तन बनाने का शिल्प, 2014
4.	रम्माण, गढ़वाल हिमालय (भारत) के धार्मिक उत्सव और परंपरा का मंचन, 2009	11.	योग, 2016
5.	मुदियेट्टू, अनुष्ठान थियेटर और केरल का नृत्य नाटक, 2010	12.	नवरोज, 2016
6.	कालबेलिया राजस्थान का लोकगीत और नृत्य, 2010	13.	कुंभ मेला, 2017
7.	छऊ नृत्य, 2010		

कुवेम्पु पुरस्कार 2020

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उड़िया किव डॉ. राजेंद्र किशोर पांडा को 'कुवेम्पु पुरस्कार 2020' के लिये चुना गया है।

- वर्ष 1944 में पैदा हुए डॉ. राजेंद्र किशोर पांडा ओडिशा के एक प्रसिद्ध किव एवं उपन्यासकार हैं। अब तक उनके कुल 16 किवता संग्रह और एक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।
- उन्हें वर्ष 2010 में 'गंगाधर राष्ट्रीय पुरस्कार' और वर्ष 1985 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

प्रमुख बिंदु

कुवेम्पु पुरस्कार

- यह 20वीं सदी के दिवंगत कन्नड़ किव 'कुवेम्पु' की
 स्मृति में स्थापित एक राष्ट्रीय पुरस्कार है।
- यह पुरस्कार प्रतिवर्ष भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी भाषा के साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले लेखक को दिया जाता है।
- इस पुरस्कार के तहत विजेताओं को 5 लाख रुपए का नकद पुरस्कार तथा एक रजत पदक एवं एक प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

कवि 'कुवेम्पु'

- कुप्पली वेंकटप्पा पुट्टप्पा, जिन्हें उनके उपनाम 'कुवेम्पु' के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय कवि, नाटककार, उपन्यासकार और आलोचक थे।
- उन्हें मुख्य तौर पर 20वीं सदी के सबसे महान कन्नड़ किवयों में से एक माना जाता है।
- वह कन्नड़ भाषा के पहले लेखक थे जिन्हें रामायण के उनके स्वयं के संस्करण 'श्री रामायण दर्शनम' के लिये ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

- ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत में प्रतिवर्ष प्रदान किये जाने वाला सबसे प्रमुख साहित्यिक पुरस्कार है और यह एक वर्ष में एक ही भारतीय नागरिक को प्रदान किया जा सकता है।
- भारतीय संविधान (8वीं अनुसूची) में उल्लिखित भाषाओं
 के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के लेखकों का चयन भी इस पुरस्कार के लिये किया जा सकता है।
- इस पुरस्कार के तहत 11 लाख रुपए की धनराशि, प्रशस्ति-पत्र तथा वाग्देवी (सरस्वती) की कास्य की प्रतिमा प्रदान की जाती है।

 यह पुरस्कार सांस्कृतिक संगठन 'भारतीय ज्ञानपीठ' द्वारा प्रायोजित है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

- वर्ष 1954 में स्थापित 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' एक साहित्यिक सम्मान है, जो कि 'साहित्य अकादमी' (नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स) द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।
- अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष स्वयं द्वारा मान्यता प्रदत्त 24 भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिये भी पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- भारतीय संविधान में शामिल 22 भाषाओं के अलावा साहित्य अकादमी ने अंग्रेजी तथा राजस्थानी को भी उन भाषाओं के रूप में मान्यता दी है, जिनमें अकादमी द्वारा कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद साहित्य अकादमी पुरस्कार,
 भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा
 साहित्यिक सम्मान है।

गंगाधर राष्ट्रीय पुरस्कार

- गंगाधर राष्ट्रीय पुरस्कार संबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा मुख्यत: कविता हेतु साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला एक साहित्यिक पुरस्कार है। इसका नाम गंगाधर मेहर के नाम पर रखा गया है।
- इस पुरस्कार के तहत 50,000 रुपए नकद, एक शॉल और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

कांजीवरम सिल्क साड़ी: तमिलनाडु

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता बुनकर बी. कृष्णमूर्ति ने कांजीवरम सिल्क साड़ी बुनाई के लिये सभी पारंपरिक डिजाइन, पैटर्न और रूपांकनों के नमूनों का एक भंडार तैयार किया है, जो भावी पीढ़ी के लिये टुकड़ों को संरक्षित करता है।

प्रमुख बिंदु

कांजीवरम साड़ियों के विषय में:

- परंपरागत रूप से कांजीवरम साड़ी को प्राय: शहतूत के रेशमी धागों से हाथ से बुना जाता है और इसमें शुद्ध सोने या चांदी की जरी प्रयोग होती है जो इसे एक महत्त्वपूर्ण गुणवत्ता प्रदान करती है।
 - हथकरघा निर्मित रेशम की साड़ी को भारतीय पारंपरिक कपड़ों में सबसे शानदार और उत्तम दर्जे के कपड़े के रूप में जाना जाता है।

- तमिलनाडु के 'कांचीपुरम' गाँव में निर्मित कांजीवरम साडी को 'रेशम की साडियों की रानी' भी माना जाता है।
- दक्षिण भारत विशेष रूप से कांचीपुरम के आसपास के क्षेत्रों की मंदिर वास्तुकला पारंपरिक कांजीवरम रूपांकनों के लिये डिजाइन प्रेरणा के रूप में काम करती है।
 - कांजीवरम साड़ी के डिजाइन में ऐसे कई रूपांकन खोजे जा सकते हैं, जैसे- पौराणिक पक्षी 'यली' (हाथी-शेर का संलयन) और 'गंडाबेरुंडा (दो सिर वाला राजसी पौराणिक पक्षी) आदि।
- चोल राजवंश से शुरू हुए लंबे और समृद्ध इतिहास के साथ कांचीपुरम साड़ियों को वर्तमान में भारतीय कपड़ा उद्योग की सबसे पुरानी एवं समृद्ध विरासतों में से एक माना जाता है।
- कांचीपुरम रेशम को वर्ष 2005-06 में भौगोलिक संकेत (GI टैग) भी प्राप्त हुआ है।

अन्य जीआई (GI) टैग प्राप्त साड़ियाँ:

- तमिलनाडु: कंडांगी साड़ी, थिरुबुवनम सिल्क साड़ी, कोवई कोरा कॉटन साडी।
- उत्तर प्रदेश: बनारस ब्रोकेड।
- कर्नाटकः इलकल साड़ी, मोलाकलमुरु साड़ी।
- आंध्र प्रदेश: उप्पदा जामदानी साड़ी, वेंकटगिरि साड़ी, मंगलगिरी साड़ी।
- केरल: बलरामपुरम साड़ी, कासरगोड साड़ी, कुथमपल्ली साड़ी
- तेलंगाना: गडवाल साडी, पोचमपल्ली इकत (लोगो)
- मध्य प्रदेश: चंदेरी साडी, महेश्वर साडी।
- ओडिशाः उड़ीसा इकत, बोमकाई साड़ी, हबसपुरी साड़ी।
- पश्चिम बंगाल: शांतिपुर साड़ी, बलूचरी साड़ी, धनियाखली साड़ी।
- महाराष्ट्र: पैठानी साड़ी और कपड़े, करवाथ कटी साड़ी एवं कपड़े।
- छत्तीसगढ़: चंपा सिल्क साड़ी।
- गुजरात: सूरत जरी क्राफ्ट, पटोला साड़ी।

भारत में रेशम उत्पादन:

- भारत विश्व में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, जो विश्व के कुल रेशम का लगभग 18% उत्पादन करता है।
- वाणिज्यिक महत्त्व के रेशम के पाँच प्रमुख प्रकार हैं, जो रेशम के कीड़ों की विभिन्न प्रजातियों से प्राप्त होते हैं। ये हैं शहतूत, ओक टसर और ट्रॉपिकल टसर, मुगा एवं एरी।
 - 🔷 शहतूत को छोड़कर रेशम की अन्य गैर-शहतूत किस्में जंगली रेशम हैं, जिन्हें वान्या रेशम (Vanya Silk) के रूप में जाना जाता है।

- रेशम की इन सभी व्यावसायिक किस्मों के उत्पादन में भारत को अद्वितीय गौरव प्राप्त है।
- दक्षिण भारत देश का प्रमुख रेशम उत्पादक क्षेत्र है और कांचीपुरम, धर्मावरम, अरनी आदि को प्रसिद्ध रेशम बुनाई परिक्षेत्रों के लिये भी जाना जाता है।
- भारत सरकार ने वर्ष 2017 में देश में रेशम उत्पादन के विकास के लिये "सिल्क समग्र" (Silk Samagra) नामक योजना शुरू

भारत का 40वाँ विश्व धरोहर स्थल: धौलावीरा

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में यूनेस्को ने गुजरात के धौलावीरा शहर को भारत के 40वें विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया है। यह प्रतिष्ठित सूची में शामिल होने वाली भारत में सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilisation- IVC) की पहली साइट है।

- इस सफल नामांकन के साथ भारत अब विश्व धरोहर स्थल शिलालेखों के लिये सुपर-40 क्लब (Super-40 Club for World Heritage Site Inscriptions) में प्रवेश कर गया है।
- भारत के अलावा इटली, स्पेन, जर्मनी, चीन और फ्राँस में 40 या अधिक विश्व धरोहर स्थल हैं।
- भारत में कुल मिलाकर 40 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें 32 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और एक मिश्रित स्थल शामिल है। रामप्पा मंदिर (तेलंगाना) भारत का 39वाँ विश्व धरोहर स्थल था।

प्रमुख बिंदु

धौलावीरा के बारे में:

- यह दक्षिण एशिया में सबसे अनूठी और अच्छी तरह से संरक्षित शहरी बस्तियों में से एक है।
- इसकी खोज वर्ष 1968 में पुरातत्त्वविद् जगतपति जोशी द्वारा की गई
- पाकिस्तान के मोहनजोदड़ो, गनेरीवाला और हड़प्पा तथा भारत के हरियाणा में राखीगढ़ी के बाद धौलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) का पाँचवा सबसे बड़ा महानगर है।
 - IVC जो कि आज पाकिस्तान और पश्चिमी भारत में पाई जाती है, लगभग 2,500 ईसा पूर्व दक्षिण एशिया के पश्चिमी भाग में फली-फूली। यह मूल रूप से एक शहरी सभ्यता थी तथा लोग सुनियोजित और अच्छी तरह से निर्मित कस्बों में रहते थे, जो व्यापार के केंद्र भी थे।

- साइट में एक प्राचीन आईवीसी/हड़प्पा शहर के खंडहर हैं। इसके दो भाग हैं: एक चारदीवारी युक्त शहर और शहर के पश्चिम में एक कब्रिस्तान।
 - चारदीवारी वाले शहर में एक मजबूत प्राचीर से युक्त एक दृढ़ीकृत गढ़/दुर्ग और अनुष्ठानिक स्थल तथा दृढ़ीकृत दुर्ग के नीचे एक शहर स्थित था।
 - गढ़ के पूर्व और दिक्षण में जलाशयों की एक शृंखला पाई जाती है।

अवस्थिति:

- धोलावीरा का प्राचीन शहर गुजरात राज्य के कच्छ जिले में एक पुरातात्त्विक स्थल है, जो ईसा पूर्व तीसरी से दूसरी सहस्राब्दी तक का है।
- धौलावीरा कर्क रेखा पर स्थित है।
- यह कच्छ के महान रण में कच्छ रेगिस्तान वन्यजीव अभयारण्य में खादिर बेट द्वीप पर स्थित है।
- अन्य हड़प्पा पूर्वगामी शहरों के विपरीत, जो आमतौर पर निदयों और जल के बारहमासी स्रोतों के पास स्थित हैं, धौलावीरा खादिर बेट द्वीप पर स्थित है।
 - यह साइट विभिन्न खिनिज और कच्चे माल के स्रोतों (तांबा, खोल, एगेट-कारेलियन, स्टीटाइट, सीसा, बैंडेड चूना पत्थर तथा अन्य) के दोहन हेतु महत्त्वपूर्ण थी।
 - इसने मगन (आधुनिक ओमान प्रायद्वीप) और मेसोपोटामिया क्षेत्रों में आंतरिक एवं बाहरी व्यापार को भी सुगम बनाया।

धौलावीरा स्थल की विशिष्ट विशेषताएँ:

- जलाशयों की व्यापक शृंखला।
- बाहरी किलेबंदी।
- दो बहुउद्देश्यीय मैदान, जिनमें से एक उत्सव के लिये और दूसरा बाजार के रूप में उपयोग किया जाता था।
- अद्वितीय डिजाइन वाले नौ द्वार।
- अंत्येष्टि वास्तुकला में ट्यूमुलस की विशेषता है बौद्ध स्तूप जैसी अर्द्धगोलाकार संरचनाएँ।
- बहुस्तरीय रक्षात्मक तंत्र, निर्माण और विशेष रूप से दफनाए जाने वाली संरचनाओं में पत्थर का व्यापक उपयोग।

धौलावीरा का पतनः

- इसका पतन मेसोपोटामिया के पतन के साथ ही हुआ, जो अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण का संकेत देता है।
 - हड़प्पाई, जो समुद्री लोग थे, ने मेसोपोटामिया के पतन के बाद एक बड़ा बाजार खो दिया जो इनके स्थानीय खनन, विनिर्माण, विपणन और निर्यात व्यवसायों को प्रभावित करते थे।

- जलवायु परिवर्तन और सरस्वती जैसी निदयों के सूखने के कारण धौलावीरा को गंभीर शुष्कता का परिणाम देखना पड़ा।
 - सूखे जैसी स्थिति के कारण लोग गंगा घाटी की ओर या दक्षिण गुजरात की ओर तथा महाराष्ट्र से आगे की ओर पलायन करने लगे।
- इसके अलावा कच्छ का महान रण, जो खादिर द्वीप के चारों ओर स्थित है और जिस पर धोलावीरा स्थित है, यहाँ पहले नौगम्य हुआ करता था, लेकिन समुद्र का जल धीरे-धीरे पीछे हट गया और रण क्षेत्र एक कीचड़ क्षेत्र बन गया।

गुजरात में अन्य हड़प्पा स्थल

- लोथल: धौलावीरा की खुदाई से पहले अहमदाबाद जिले के ढोलका तालुका में साबरमती के तट पर सरगवाला गाँव में लोथल, गुजरात सबसे प्रमुख सिंधु घाटी स्थल था।
 - इसकी खुदाई वर्ष 1955-60 के बीच की गई थी और इसे प्राचीन सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह शहर माना जाता था, जिसमें मिट्टी की ईंटों से बनी संरचनाएँ थीं।
 - लोथल के एक कब्रिस्तान से 21 मानव कंकाल मिले हैं।
 - यहाँ से तांबे के बर्तन की भी खोज की गई है।
 - इस स्थल से अर्द्ध-कीमती पत्थर, सोने आदि से बने आभूषण भी मिले हैं।
- सुरेंद्रनगर जिले में भादर (Bhadar) नदी के तट पर स्थित रंगपुर, राज्य का पहला हड्प्पा स्थल था जिसकी खुदाई की गई थी।
- राजकोट जिले में रोजड़ी, गिर सोमनाथ जिले में वेरावल के पास प्रभास।
- जामनगर में लखबावल और कच्छ के भुज तालुका में देशलपार, राज्य के अन्य हडप्पा स्थल हैं।

गुजरात में अन्य विश्व साइट्स

- गुजरात में धौलावीरा के अलावा 3 अन्य यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं।
 - 🔷 अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर
 - 🔷 रानी की वाव, पटना
 - 🔷 चंपानेर और पावागढी

भारत का 39वाँ विश्व धरोहर स्थल: रामप्पा मंदिर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तेलंगाना के मुलुगु जिले में स्थित रुद्रेश्वर मंदिर (जिसे रामप्पा मंदिर के रूप में भी जाना जाता है) को यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर स्थल की सुची में शामिल किया गया है। इस मंदिर को सरकार द्वारा वर्ष 2019 के लिये यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामांकन हेतु प्रस्तावित किया गया था।

प्रमुख बिंदु

रुद्रेश्वर या रामप्पा मंदिर के विषय में:

- रुद्रेश्वर मंदिर का निर्माण 1213 ईस्वी में काकतीय साम्राज्य के शासनकाल में काकतीय राजा गणपित देव के एक सेनापित रेचारला रुद्र ने कराया था।
- यहाँ के स्थापित देवता रामलिंगेश्वर स्वामी हैं।
- 40 वर्षों तक मंदिर निर्माण करने वाले एक मूर्तिकार के नाम पर इसे रामप्पा मंदिर के रूप में भी जाना जाता है।
- मंदिर छह फुट ऊँचे तारे जैसे मंच पर खडा है, जिसमें दीवारों, स्तंभों और छतों पर जटिल नक्काशी से सजावट की गई है, जो काकतीय मूर्तिकारों के अद्वितीय कौशल को प्रमाणित करती है।
- इसकी नींव "सैंडबॉक्स तकनीक" से बनाई गई है, जिसमें फर्श ग्रेनाइट पत्थरों से है और स्तंभ बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित हैं।
- मंदिर का निचला हिस्सा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है जबिक सफेद गोपुरम को हल्की ईंटों से बनाया गया है जो कथित तौर पर पानी पर तैर सकती हैं।
- एक शिलालेख के अनुसार मंदिर के निर्माण की तिथि माघ माह की अष्टमी (12 जनवरी, 1214) शक-संवत 1135 है।
- मंदिर परिसरों से लेकर प्रवेश द्वारों तक काकतीयों (Kakatiya) की विशिष्ट शैली, जो इस क्षेत्र के लिये अद्वितीय है, दक्षिण भारत में मंदिर और शहर के प्रवेश द्वारों में सौंदर्यशास्त्र के अत्यधिक विकसित स्वरूप की पुष्टि करती है।
- यूरोपीय व्यापारी और यात्री मंदिर की सुंदरता से मंत्रमुग्ध थे तथा ऐसे ही एक यात्री ने उल्लेख किया था कि मंदिर "दक्कन के मध्ययुगीन मंदिरों की आकाशगंगा में सबसे चमकीला तारा" था।

सैंडबॉक्स तकनीकः

- इस तकनीक में इमारतों के निर्माण से पहले गड़ढे को भरना शामिल है- जिसमे नींव रखने के लिये खोदे गए गड्ढों को रेत-चूने, गुड़ (बांधने ले लिये) और करक्कया (हरड़ का काला फल) के मिश्रण के साथ भरा जाता है।
- भूकंप की स्थिति में सैंडबॉक्स तकनीक से निर्मित यह नींव एक कुशन (Cushion) के रूप में कार्य करती है।
- भुकंप के कारण होने वाले अधिकांश कंपन इमारत की वास्तविक नींव तक पहुँचने से पहले ही रेत से गुजरते समय ही क्षीण हो जाते हैं।

पारसी नववर्ष: नवरोज

चर्चा में क्यों?

भारत में 16 अगस्त को नवरोज उत्सव मनाया गया है।

संपूर्ण विश्व में उत्तरी गोलार्द्ध में वसंत विषुव (वसंत की शुरुआत का प्रतीक) के समय नवरोज़ त्योहार मनाया जाता है।

प्रमुख बिंदु

नवरोज़ के बारे में:

- नवरोज़ को पारसी नववर्ष के नाम से भी जाना जाता है।
- फारसी में 'नव' का अर्थ है नया और 'रोज़' का अर्थ है दिन. जिसका शाब्दिक अर्थ है 'नया दिन'(New Day).
- हालाँकि वैश्विक स्तर पर इसे मार्च में मनाया जाता है। नवरोज़ भारत में 200 दिन बाद आता है और अगस्त के महीने में मनाया जाता है क्योंकि यहाँ पारसी शहंशाही कैलेंडर (Shahenshahi Calendar) को मानते हैं जिसमें लीप वर्ष नहीं होता है।
 - भारत में नवरोज़ को फारसी राजा जमशेद के बाद से जमशेद-ए-नवरोज (Jamshed-i-Navroz) के नाम से भी जाना जाता है। राजा जमशेद को शहंशाही कैलेंडर बनाने का श्रेय दिया जाता है।
- इस त्योहार की खास बात यह है कि भारत में लोग इसे वर्ष में दो बार मनाते हैं- पहला ईरानी कैलेंडर के अनुसार और दूसरा शहंशाही कैलेंडर के अनुसार जिसका पालन भारत और पाकिस्तान में लोग करते हैं। यह त्योहार जुलाई और अगस्त माह के मध्य आता है।
- इस परंपरा को दुनिया भर में ईरानियों और पारिसयों द्वारा मनाया जाता है।
- वर्ष 2009 में नवरोज़ को यूनेस्को द्वारा भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया गया था।
 - इस प्रतिष्ठित सूची में उन अमूर्त विरासत तत्त्वों को शामिल किया जाता है जो सांस्कृतिक विरासत की विविधता को प्रदर्शित करने और इसके महत्त्व के बारे में जागरूकता बढाने में मदद करते हैं।

पारसी धर्म (ज़ोरोएस्ट्रिनइज़्म)

- पारसी धर्म/जोरोएस्ट्रिनइज्म पारिसयों द्वारा अपनाए जाने वाले सबसे पहले ज्ञात एकेश्वरवादी विश्वासों में से एक है।
- इस धर्म की आधारशिला 3,500 वर्ष पूर्व प्राचीन ईरान में पैगंबर जरथुस्त्र (Prophet Zarathustra) द्वारा रखी गई थी।
- यह 650 ईसा पूर्व से 7वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव तक फारस (अब ईरान) का आधिकारिक धर्म था और 1000 वर्षों से भी अधिक समय तक यह प्राचीन विश्व के महत्त्वपूर्ण धर्मों में से एक था।

- जब इस्लामी सैनिकों ने फारस पर आक्रमण किया, तो कई पारसी लोग भारत (गुजरात) और पाकिस्तान में आकर बस गए।
- पारसी ('पारसी' फारिसयों के लिये गुजराती है) भारत में सबसे बड़ा एकल समूह है। विश्व में इनकी कुल अनुमानित आबादी 2.6 मिलियन है।
- पारसी अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों में से एक है।

विश्व संस्कृत दिवस

चर्चा में क्यों ?

विश्व संस्कृत दिवस (विश्व संस्कृत दिनम) 22 अगस्त, 2021 को मनाया गया।

- भारत में संस्कृत एक शास्त्रीय और आठवीं अनुसूची की भाषा है।
- वर्ष 2020 में उत्तराखंड सरकार ने नियमित रूप से संस्कृत का उपयोग सिखाने के लिये राज्य भर में 'संस्कृत ग्राम' विकसित करने का निर्णय लिया।

प्रमुख बिंदु

परिचय:

- यह एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य संस्कृत भाषा के पुनरुद्धार और रखरखाव को बढ़ावा देना है।
- यह हिंदू कैलेंडर में श्रावण महीने के पूर्णिमा दिवस (पूर्णिमा) को मनाया जाता है।
- प्राचीन काल की तरह व्यापक रूप से नहीं बोली जाने के बावजूद
 यह दिवस अनिवार्य रूप से संस्कृत सीखने और जानने के महत्त्व की बात करता है।
- केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा राज्य और केंद्र सरकारों को अधिसूचना जारी करने के बाद वर्ष 1969 में पहली बार यह दिवस मनाया गया था।
- संस्कृत संगठन संस्कृत भारती (Sanskrit Organisation Samskrita Bharati) दिवस को बढ़ावा देने का कार्य करता है।

संस्कृत भाषा के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यः

- इसे विश्व की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक माना जाता है। यह एक प्राचीन इंडो-आर्यन भाषा है जिसमें सबसे प्राचीन दस्तावेज, वेद, वैदिक संस्कृत में हैं।
- वैदिक काल में संस्कृत एक अखिल भारतीय भाषा हुआ करती थी और देश में अधिकांश भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है।
 - यह भाषा किसी-न-किसी तरह की आधुनिक व्युत्पत्तियों और क्षेत्रीय बोलियों के कारण अपना अस्तित्व खोती गई।

- शास्त्रीय संस्कृत, उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में इस्तेमाल होने वाली वैदिक के करीब की भाषा ग्रंथ पाणिनी (6वीं-5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) द्वारा रचित अष्टाध्याय (आठ अध्याय), अब तक के सबसे बेहतरीन व्याकरण ग्रंथों में से एक है।
- संस्कृत को देवनागरी लिपि और विभिन्न क्षेत्रीय लिपियों में लिखा गया है, जैसे- उत्तर (कश्मीर) में शारदा, पूर्व में बांग्ला (बंगाली), पश्चिम में गुजराती व ग्रंथ वर्णमाला सिहत विभिन्न दक्षिणी लिपियाँ जिसे विशेष रूप से संस्कृत ग्रंथों के लिये तैयार गया था।
- इसे एक वैज्ञानिक भाषा माना जाता है और इसे सबसे अधिक कंप्यूटर के अनुकूल भाषा माना जाता है।
 - वर्ष 1786 में अंग्रेज़ी भाषाविद् विलियम जोन्स ने अपनी पुस्तक 'द संस्कृत लैंग्वेज' में बताया है कि ग्रीक और लैटिन भाषा संस्कृत से संबंधित थी।
- हालाँकि यह भाषा पूरी तरह से मृत नहीं है। माना जाता है कि कर्नाटक के शिमोगा जिले के एक गाँव, जिसे मत्तूर कहा जाता है, ने भाषा को संरक्षित रखा है।
- विश्व का एकमात्र संस्कृत समाचार पत्र 'सुधर्म' है। यह समाचार पत्र
 1970 से कर्नाटक के मैसूर से प्रकाशित हो रहा है और ऑनलाइन भी उपलब्ध है।
- पाणिनि, पतंजिल, आदि शंकराचार्य, वेद व्यास, कालिदास आदि संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध लेखक हैं।

संस्कृत में महत्त्वपूर्ण लेखक और कार्यः

- भास (उदाहरण के लिये उनके स्वप्नवासवदत्त वासवदत्त इन ए ड्रीम), जिनके लिये व्यापक रूप से अलग-अलग तिथियाँ निर्धारित की गई हैं, लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से कालिदास से पहले कार्य किया है, इनमें उनका उल्लेख मिलता है।
- कालिदास (पहली शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी तक) के कार्यों में शकुंतला, विक्रमोर्वण्य, कुमारसंभव और रघुवंश शामिल हैं।
- सूद्रका (Śūdraka) और मच्छकाटिका ("लिटिल क्ले कार्ट") संभवत: तीसरी शताब्दी के काल की हैं।
- अश्वघोष की बुद्धचरित (Ashvaghosha's Buddhacarita) बौद्ध साहित्य के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है।
- भारवी और किरातार्जुन्य (अर्जुन और किरात) लगभग 7वीं शताब्दी के हैं।
- माघ (Māgha) का शिशुपालवधा ("शिशुपाल का वध") 7वीं शताब्दी के अंत का है।
- दो महाकाव्य रामायण ("राम का जीवन") और महाभारत ("भारत की महान कथा") भी संस्कृत में रचे गए।

शंकराचार्य मंदिर

हाल ही में वार्षिक अमरनाथ तीर्थयात्रा से जुड़ी सदियों पुरानी परंपरा के अनुसार, भगवान शिव की पवित्र गदा (छडी मुबारक) को प्राचीन शंकराचार्य मंदिर में लाया गया।

प्रमुख बिंदु

मंदिर के विषय में:

- इसे बौद्धों द्वारा ज्येष्ठेश्वर मंदिर या पास-पहाड़ के रूप में भी जाना जाता है। फारसी और यहूदी इसे बाग-ए-सुलेमान या गार्डन ऑफ किंग सोलोमन भी कहते हैं। मंदिर के अंदर फारसी शिलालेख भी मिले हैं।
- यह श्रीनगर, कश्मीर में जबरवान पर्वत पर शंकराचार्य पहाडी (जिसे सोलोमन पहाडी भी कहा जाता है) की चोटी पर स्थित है।
 - मंदिर को कश्मीर की घाटी का सबसे पुराना मंदिर माना जाता है।
- भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर जमीन के स्तर से 1,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और यहाँ से श्रीनगर शहर को देखा जा सकता है।
- मंदिर 200 ईसा पूर्व का है, हालाँकि इसकी वर्तमान संरचना संभवत: 9वीं शताब्दी ईस्वी की है।
- आदि शंकराचार्य द्वारा इस मंदिर का भ्रमण किये जाने के बाद से ही उनका नाम इस मंदिर के साथ जुड़ा और इस तरह मंदिर का नाम शंकराचार्य पड़ा।

संरचना:

- यह प्राचीन मंदिर वास्तुकला की स्वदेशी प्रारंभिक कश्मीरी शैली में बनाया गया है और इसमें उन दिनों प्रचलित तकनीकों को अपनाया गया है।
- प्रारंभिक शिहारा शैली को इस इमारत के डिजाइन में प्रमुख रूप से स्पष्ट है और यह घोड़े की नाल के आर्क प्रकार के पैटर्न का संकेत
- यह लगभग तीस फीट ऊँचे अष्टकोणीय आधार/चब्रूतरे पर निर्मित एक विशाल पत्थर की संरचना है।
- यह चबूतरा एक निम्न ऊँचाई की चहारदीवारी से घिरा हुआ है। मंदिर में एक कक्ष है, जो अंदर से गोलाकार है तथा इसका व्यास तेरह फीट है।
- मंदिर का वर्गाकार भवन तहखाने द्वारा समर्थित है।

शंकराचार्य

परिचय:

उन्हें आदि शंकर के नाम से भी जाना जाता था। उनका जन्म केरल के कलादी में 788 ई. में में हुआ था।

- उन्होंने अद्वैतवाद (Monism) के सिद्धांत को प्रतिपादित किया और संस्कृत में वैदिक सिद्धांत (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र और भगवद गीता) पर कई टिप्पणियाँ लिखीं। प्रमुख कृतियाँ/रचनाएँ:
- ब्रह्मसूत्रभाष्य (ब्रह्म सूत्र पर भाष्य या भाष्य)।
- भजगोविंदम स्तोत्र।
- निर्वाण षट्कम।

अन्य योगदानः

- इन्होने भारत में उस समय हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जब बौद्ध धर्म लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था।
- इन्होंने भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना की और यह परंपरा आज भी जारी है।

हिंदी दिवस

चर्चा में क्यों?

भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन को मनाने के पीछे एक कारण देश में अंग्रेज़ी भाषा के बढ़ते चलन और हिंदी की उपेक्षा को रोकना है।

- हिंदी दिवस का इतिहास:
 - देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया गया था।
 - काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविंददास ने हिंदी को राजभाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
 - पहला हिंदी दिवस वर्ष 1953 में मनाया गया था।
 - हिंदी के अलावा अंग्रेजी दूसरी आधिकारिक भाषा है (संविधान का अनुच्छेद 343)।
 - हिंदी आठवीं अनुसूची की भाषा भी है।
 - अनुच्छेद 351 'हिंदी भाषा के विकास के लिये निर्देश' से संबंधित है।
 - हिंदी शास्त्रीय भाषा नहीं है।
- हिंदी भाषा के विषय में:
 - उद्भव
 - हिंदी भाषा को अपना नाम फारसी शब्द 'हिंद' से प्राप्त हुआ है, जिसका अर्थ है 'सिंधु नदी की भूमि'। 11वीं

- शताब्दी की शुरुआत में तुर्की के आक्रमणकारियों ने सिंधु नदी के आसपास के क्षेत्र की भाषा को हिंदी यानी 'सिंधु नदी की भृमि की भाषा' नाम दिया।
- आधुनिक देवनागरी लिपि भी 11वीं शताब्दी में ही अस्तित्व में आई।
- भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में हिंदी का प्रयोग:
 - दुनिया में बोली जाने वाली कुल भाषाओं में हिंदी पाँचवीं सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
 - वर्तमान में पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, युगांडा, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

पंज प्यारे

हाल ही में पंजाब में राजनीतिक नेताओं के लिये "पंज प्यारे" (Panj Piare) शब्द के प्रयोग के कारण विवाद उत्पन्न हो गया।

प्रमुख बिंदु

- सिख परंपरा का हिस्सा: पंज प्यारे, पाँच बपितस्मा प्राप्त सिखों को संबोधित करने के लिये उपयोग किया जाने वाला शब्द है, अर्थात् वे पुरुष जिन्हें दस गुरुओं में से अंतिम गुरु गोबिंद सिंह के नेतृत्व में खालसा (सिख योद्धाओं का विशेष समूह) में दीक्षित किया गया
 - वे दृढ़ता और भिक्त के प्रतीक के रूप में सिखों द्वारा सद्भावपूर्वक सम्मानित हैं।
- उद्भव : गुरु गोबिंद सिंह ने वर्ष 1699 में बैसाखी के दिन खालसा पंथ के साथ-साथ पंज प्यारे नामक संस्था की स्थापना की थी।
 - गुरु गोबिंद सिंह ने पाँच लोगों को संस्कृति को संरक्षित करने हेतु अपने जीवन को आत्मसमर्पण करने का आग्रह किया। इस संदर्भ में बड़ी संख्या लोगों ने असहमित प्रकट की लेकिन अंतत: पाँच स्वयंसेवक इसके लिये आगे आए।
 - गुरु गोबिंद सिंह ने स्वयं सिखों को यह अवगत कराने के लिये उसी चरण में उनसे बपितस्मा लिया था कि पंज प्यारों के पास समुदाय में किसी की तुलना में उच्च अधिकार और निर्णय लेने की शक्ति है।
 - सिख इतिहास को आकार देने और सिख धर्म को परिभाषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वास्तविक पंज प्यारे हैं:
 - भाई दया सिंह, लाहौर (1661-1708 ई.)
 - भाई धरम सिंह, हस्तिनापुर (1699-1708 ई.)
 - भाई हिम्मत सिंह, जगन्नाथपुरी (1661-1705 ई.)

- भाई मोहकम सिंह, द्वारका (1663-1705 ई.)
- भाई साहिब सिंह, बीदर (1662-1705 ई.)
- तब से पाँच बपितस्मा प्राप्त सिखों के प्रत्येक समूह को पंज प्यारे कहा जाता है तथा उन्हें भी वही सम्मान दिया जाता है जो प्रारंभिक पाँच सिख 'पंज प्यारों' को दिया जाता है।

• योगदान :

- इन आध्यात्मिक योद्धाओं ने न केवल युद्ध के मैदान में विरोधियों से लड़ने का वचन दिया, बिल्क आंतरिक दुश्मन, अहंकार का मुकाबला करने तथा जाति उन्मूलन के प्रयासों के साथ-साथ मानवता की सेवा करने की शपथ ली।
- उन्होंने वर्ष 1699 में बैसाखी के त्योहार पर गुरु गोबिंद सिंह तथा लगभग 80,000 अन्य लोगों को बपितस्मा देते हुए वास्तिवक अमृत संचार (सिख दीक्षा समारोह) किया।
- सभी पाँच पंज प्यारे ने आनंद पुरीन की घेराबंदी में गुरु गोबिंद सिंह और खालसा के साथ युद्ध में हिस्सा लिया और दिसंबर 1704 में चमकौर की लड़ाई के दौरान गुरु गोबिंद सिंह को सुरक्षित निकालने में मदद की।
- पंज प्यारे द्वारा लिये गए सर्वसम्मत निर्णय का समुदाय में सभी को पालन करना होता है।
 - अकाल तख्त के जत्थेदार भी किसी एक पक्ष में फैसला नहीं ले सकते हैं तथा अकाल तख्त के प्रत्येक फरमान पर पाँच तख्तों (अस्थायी सीटों) के सभी पाँच जत्थेदारों या उनके प्रतिनिधयों द्वारा हस्ताक्षर किया जाना आवश्यक है।

खालसा पंथ

- गुरु गोबिंद सिंह ने सैनिक-संतों यानी 'खालसा' पंथ (जिसका अर्थ है 'शुद्ध') की स्थापना की थी।
- खालसा पंथ से जुड़े संतों में प्रतिबद्धता, समर्पण और सामाजिक चेतना के उच्चतम गुण मौजूद होते हैं।
- खालसा का आशय उन 'पुरुष' और 'महिलाओं' से है, जो सिख दीक्षा समारोह के माध्यम से पंथ में शामिल हुए हैं और जो सिख आचार संहिता एवं संबंधित नियमों का सख्ती से पालन करते हैं तथा गुरुओं द्वारा निर्धारित दिनचर्या (5K: केश (बिना कटे बाल), कंघा (एक लकड़ी की कंघी), कारा (एक लोहे का कंगन), कचेरा (सूती जांघिया) और कृपाण (एक लोहे का खंजर)) का पालन करते हैं।

कृतुब मीनार

विश्व धरोहर स्थल में शामिल कुतुब मीनार की खड़ी सीढ़ियाँ अब विकलांगों और बुजुर्गों के लिये चुनौती नहीं बनेंगी क्योंकि विकलांगों और बुजुर्गों की सुविधा का ध्यान रखते हुए हाल ही में उनकी जगह लकड़ी के ढलवाँ मार्ग बनाए गए हैं। हुमायूँ का मकबरा (1993) और लाल किला परिसर (2007) दिल्ली में अन्य विश्व धरोहर स्मारक हैं।

प्रमुख बिंदु

- यह एक पाँच मंजिला लाल बलुआ पत्थरों की मीनार (72.5 मीटर ऊँची) है जिसका निर्माण 13वीं शताब्दी में मुस्लिम विजेताओं ने दिल्ली के राजपूत शासकों (कुतुब का अर्थ है जीत) पर अपनी अंतिम जीत के उपलक्ष्य में किया था।
- यह एक टॉवर के रूप में भी कार्य करता है जहाँ से मुअज्जिन नमाजियों को अजान देकर पास के कुळ्तुल-इस्लाम मस्जिद में नमाज़ के लिये बुलाता है।
- मस्जिद के प्रांगण में एक 7 मीटर ऊँचा लोहे का खंभा है।
- इसके आस-पास अलाई-दरवाजा गेट (Alai-Darwaza Gate) है, जो इंडो-मुस्लिम कला की उत्कृष्ट कृति (1311 में निर्मित) है।
- कुतुब मीनार के निर्माण की प्रक्रिया में लगभग 75 वर्ष लगे। इसका निर्माण कुतुब-उद-दीन ऐबक (1206-1210) द्वारा 1193 में शुरू किया गया था और इसे इल्तुतिमश (1211-1236) द्वारा पूरा किया गया था।
 - 🔷 वर्ष 1368 में उस समय के शासकों मुहम्मद-बिन-तुगलक (1325-51) और फिरोज शाह तुगलक (1351-88) द्वारा इसको मरम्मत की गई थी।
- मीनार (टॉवर) की सतह पर मुख्य रूप से कुरान के छंदों से महीन अरबी सजावट की गई है।
- कृतुब मीनार और उसके स्मारकों को वर्ष 1993 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

कुशीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा

उत्तर प्रदेश का कुशीनगर हवाई अङ्डा भारत के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों की सूची में शामिल होने वाला नवीनतम हवाई अड्डा है। यह अपेक्षा की जा रही है कि यह हवाई अड्डा बौद्ध तीर्थ पर्यटन के लिये दक्षिण-पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों के लोगों को निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

कुशीनगर, बौद्ध परिपथ- जिसमें लुंबिनी, सारनाथ, गया और अन्य तीर्थस्थल शामिल हैं, का केंद्र है।

प्रमुख बिंदु

- कुशीनगर हवाई अड्डा और सांस्कृतिक कूटनीति:
 - 🔷 कुशीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की शुरुआत भारत-श्रीलंका संबंधों में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी।

- हवाई अड्डे के उद्घाटन के अवसर पर श्रीलंका, भारत के दो भित्ति चित्रों (Mural Paintings) की तस्वीरें प्रस्तुत करेगा:
 - एक भित्ति चित्र में सम्राट अशोक के पुत्र अरहत भिक्ष् महिंदा को श्रीलंका के राजा देवनामपियातिसा (Devanampiyatissa) को बुद्ध का संदेश देते हुए दर्शाया गया है।
 - दूसरे भित्ति चित्र में सम्राट अशोक की पुत्री 'थेरी भिक्षणी' संघमित्रा को पवित्र बोधि वृक्ष (जिसके बारे में ऐसा माना जाता है कि इसके नीचे ही बुद्ध को ज्ञान की प्राप्त हुई थी) के पौधे के साथ श्रीलंका में आगमन करते हुए दर्शाया गया
- बौद्ध परिपथ भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पावर के उपयोग को दर्शाता है।
- भारत द्वारा बौद्ध कूटनीति (Buddhist Diplomacy) को दिया जाने वाला महत्त्व, श्रीलंका में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने और पीपल-टू-पीपल संबंधों में सुधार करने में मदद करेगा (विशेषकर श्रीलंकाई गृहयुद्ध के बाद के संदर्भ में)।
- इसके अलावा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और इसकी व्यापक अखिल एशियाई उपस्थिति पर ज़ोर देने के कारण बौद्ध मत स्वयं ही सॉफ्ट-पावर कूटनीति को बढ़ावा देता है।

श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रसार

- मौर्य सम्राट अशोक (273-232 ईसा पूर्व) के शासन काल के दौरान पूर्वी भारत से भेजे गए एक मिशन द्वारा श्रीलंका में पहली बार बौद्ध धर्म का प्रचार किया गया था।
- श्रीलंका के मिशन के नेतृत्वकर्त्ता, महेंद्र (महिंदा) को अशोक के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है।

बुद्ध के मार्ग (Buddha Path)

- बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व नेपाल के लुंबिनी में हुआ था।
- उन्होंने उपदेश दिया कि विलासिता और तपस्या दोनों की अधिकता से बचना चाहिये। वह "मध्यम मार्ग" (मध्य मार्ग) के पक्षकार थे।
- बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग (बुद्ध की असाधारण शिक्षाओं) में निम्नलिखित शामिल थे:
 - सम्यक दृष्टि
 - सम्यक संकल्प
 - सम्यक वाक
 - सम्यक कर्मांत
 - सम्यक आजीविका
 - सम्यक व्यायाम

- 🔷 सम्यक स्मृति
- सम्यक समाधि
- 'बुद्ध के मार्ग' बौद्ध विरासत के आठ महान स्थानों को भी संदर्भित करतेहैं (पालिभाषामें अह्ममहाहनानी (Anhamahāthānāni) के रूप में संदर्भित)। वे है:
 - लुंबिनी (नेपाल)- बुद्ध का जन्म।
 - 🔷 बोधगया (बिहार) ज्ञान प्राप्ति।
 - 🔷 सारनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)- प्रथम उपदेश।
 - 🔷 कुशीनगर (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)- बुद्ध की मृत्यु।
 - राजगीर (बिहार)- जहाँ भगवान ने एक पागल हाथी को वश में किया।
 - 🔷 वैशाली (बिहार)- जहाँ एक बंदर ने उन्हें शहद चढ़ाया।
 - श्रावस्ती (यूपी)- भगवान ने एक हजार पंखुड़ियों वाले कमल पर आसन ग्रहण किया और स्वयं के कई प्रतिरूप बनाए।
 - संकिसा (फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश) ऐसा माना जाता है कि गौतम बुद्ध स्वर्ग से धरती पर आए थे।

श्रीनगर: यूनेस्को रचनात्मक शहरों का नेटवर्क

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization- UNESCO) ने श्रीनगर को रचनात्मक शहरों का नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network- UCCN) के एक भाग के रूप में नामित किया है।

 मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद, वाराणसी और जयपुर के बाद श्रीनगर यह उपलब्धि हासिल करने वाला भारत का छठा शहर है।

प्रमुख बिंदु

- श्रीनगर के बारे में:
 - श्रीनगर शहर को शिल्प और लोक कला के क्षेत्र में रचनात्मक शहर के रूप में नामित किया गया है। जयपुर के बाद इस श्रेणी में भारत का यह दूसरा शहर है।
 - यह न केवल श्रीनगर शहर को वैश्विक पहचान देगा बिल्क अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग, शिल्प विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग और उत्पाद प्रोत्साहन के रूप में 'पिचिंग क्राफ्ट' (Pitching Craft) में भी मदद करेगा।
 - इसके साथ ही जम्मू और कश्मीर की राजधानी (श्रीनगर) विश्व के 295 'रचनात्मक शहरों के नेटवर्क' क्लब में शामिल हो गई है।
 - यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व के विभिन्न शहरों को अपनी 'यूसीसीएन' परियोजना (UCCN Project) में शामिल करने हेतु आवेदन मांगे जाते हैं। भारत में यह आवेदन संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से भेजे जाते हैं।

- यूनेस्को का रचनात्मक शहरों का नेटवर्क (UCCN):
 - इसे वर्ष 2004 में प्रारंभ किया गया था।
 - इसका उद्देश्य "उन शहरों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देना है जो रचनात्मकता को अपने शहरी विकास में एक रणनीतिक कारक के रूप में पहचानते हैं।"
 - सतत् विकास लक्ष्य- 11 (Sustainable Development Goal- 11) का उद्देश्य सतत् शहरों और समुदायों से संबंधित है।
 - नेटवर्क में सात रचनात्मक क्षेत्र शिल्प एवं लोक कला, मीडिया कला, फिल्म, डिजाइन, गैस्ट्रोनॉमी, साहित्य और संगीत शामिल हैं।
- UCCN में शामिल भारत के शहर:
 - श्रीनगर शिल्प और लोक कला (2021)
 - 🔶 मुंबई फिल्म (2019)।
 - हैदराबाद गैस्ट्रोनॉमी (2019)।
 - चेन्नई- संगीत का रचनात्मक शहर (2017)।
 - 🔷 जयपुर- शिल्प और लोक कला (2015)।
 - वाराणसी- संगीत का रचनात्मक शहर (2015)।

यूनेस्को

- यूनेस्को के बारे में:
 - यह संयुक्त राष्ट्र (United Nations- UN) की एक विशेष एजेंसी है। यह शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से शांति स्थापित करने के लिये प्रयासरत है।
 - इसकी स्थापना वर्ष 1945 में हुई तथा इसका मुख्यालय पेरिस (फ्राँस) में स्थित है।
- यूनेस्को की प्रमुख पहलें:
 - मैन एंड बायोस्फीयर प्रोग्राम
 - विश्व धरोहर कार्यक्रम
 - ग्लोबल जिओ पार्क नेटवर्क
 - रचनात्मक शहरों का नेटवर्क
 - 'एटलस ऑफ द वल्ड्स लैंग्वेजेज इन डेंजर
- रिपोर्ट्स:
 - यूनेस्को विज्ञान रिपोर्ट
 - वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट
 - 🔷 स्टेट ऑफ द एजुकेशन रिपोर्ट इन इंडिया

बौद्धिक संपदा के रूप में दार्जिलिंग टॉय ट्रेन का लोगो

हाल ही में भारत ने अंततः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित 'टॉय ट्रेन' (Darjeeling Toy Train) के लोगो (Logos) को अपनी बौद्धिक संपदा के रूप में पंजीकृत किया है।

 इसके बाद यह दावा विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) को भेजा गया, जो कि विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) के वियना वर्गीकरण (VCL) में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार है। किसी भी प्रति-दावे को दर्ज करने के लिये छह महीने का समय निर्धारित है, जिसके बाद भारत सरकार के दावे को अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्राप्त होगी।

प्रमुख बिंदु

- परिचय:
 - दुनिया में कहीं भी इस लोगो के उपयोग के लिये अब भारत से लिखित अनुमित और शुल्क के भुगतान की आवश्यकता होगी।
 - दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (DHR) के दो लोगो हैं, दोनों का पेटेंट कराया जा चुका है। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक के साथ लोगो को पंजीकृत करने की प्रक्रिया अगस्त 2021 में शुरू की गई थी। इसके बाद इसे डब्ल्यूआईपीओ को भेजा गया था।
 - दोनों लोगो (logo) एक सदी से अधिक पुराने हैं और विश्व विरासत सर्किट में लोकप्रिय हैं।
 - यूरोप, यूके और अमेरिका में विभिन्न वाणिज्यिक संगठनों द्वारा व्यापारिक वस्तुओं और संचार सामग्री पर उनका अव्यवस्थित ढंग से उपयोग किया जाता है; यहाँ तक कि पश्चिम बंगाल सरकार ने अतीत में संचार और व्यापारिक वस्तुओं पर इसका इस्तेमाल किया है।
 - महत्त्व: इससे दार्जिलिंग टॉय ट्रेन के 'आयरन शेरपा' ब्लू स्टीम लोकोमोटिव को स्विट्जरलैंड में प्रसिद्ध ट्रांसलपाइन रैटियन रेलवे (Rhaetian Railway) के समान दर्जा प्राप्त होगा और दुनिया भर में इसकी मान्यता और प्रमुखता को बढ़ावा देने की संभावना है।
- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (DHR):
 - DHR का निर्माण ब्रिटिश काल में वर्ष 1879 और 1881 के बीच किया गया था।
 - 🔷 यह पश्चिम बंगाल में हिमालय की तलहटी में स्थित है।
 - यह पहाड़ी यात्री रेलवे का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका डिजाइन पहाड़ी इलाके में एक प्रभावी रेल लिंक स्थापित करने की समस्या के लिये साहसिक और सरल इंजीनियरिंग समाधान लागू करता है।

- इसे वर्ष 1999 में यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
 - अन्य पर्वतीय रेलवे जिन्हें विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया:
 - नीलिगिरि पर्वतीय रेलवे, तिमलनाडु (दिक्षण भारत) की नीलिगिरि पहाड़ियों में स्थित है (2005)।
 - कालका-शिमला रेलवे, हिमाचल प्रदेश (उत्तर पश्चिम भारत) (2008) की हिमालय की तलहटी में स्थित है।

WIPO का वियना वर्गीकरण

- वियना वर्गीकरण (VCL) एक अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण प्रणाली है जिसे वर्ष 1973 में वियना समझौते द्वारा स्थापित किया गया था, जो मार्क्स के आलंकारिक तत्त्वों का एक अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण स्थापित करता है और विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) द्वारा प्रशासित है।
 - WIPO संयुक्त राष्ट्र की सबसे पुरानी एजेंसियों में से एक है इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है।
- इसमें एक पदानुक्रमित प्रणाली होती है जो सामान्य से विशेष तक आगे बढ़ती है, जो अंकों के आलंकारिक तत्त्वों को उनके आकार के आधार पर श्रेणियों, विभागों और वर्गों में वर्गीकृत करती है।

करतारपुर कॉरिडोर का पुन:संचालन

चर्चा में क्यों?

भारत सरकार करीब 20 महीने बाद पाकिस्तान में करतारपुर साहिब गुरुद्वारा कॉरिडोर (Kartarpur Sahib Gurudwara corridor) को फिर से खोलने पर विचार कर रही है ताकि सिख तीर्थयात्रियों को वहाँ से गुजरने की अनुमित मिल सके। इसे कोविड -19 महामारी के कारण बंद कर दिया गया था।

 भारत सरकार 19 नवंबर (2021), सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी की जयंती (जिसे गुरपुरब/गुरु पर्व या "प्रकाश पर्व" के नाम से जाना जाता है) तक मार्ग खोलने पर विचार कर रही है।

- परिचयः
 - यह कॉरिडोर भारत और पाकिस्तान के बीच उन दुर्लभ नई पहलों में से एक है जो वर्ष 2019 में पुलवामा हमले, बालाकोट हमले और जम्मू-कश्मीर पर अनुच्छेद 370 में संशोधन के निर्णय के बाद तनावपूर्ण स्थिति के कारण दोनों पक्षों के राजनियकों को वापस बुला लिया गया और सभी व्यापार संबंधों को रद्द कर दिया गया।

- यह एक अनूठी पिरयोजना है क्योंिक इस तरह के वीजा-मुक्त "मानव कॉरिडोर" का उपयोग आम तौर पर आपातकालीन स्थितियों के लिये किया जाता है अर्थात् शरणार्थी हिंसा या मानवीय आपदाओं से विस्थापन हेतु उपयोग किया जाता है न कि तीर्थयात्रा के लिये।
- करतारपुर कॉरिडोर:
 - करतारपुर कॉरिडोर पाकिस्तान के नारोवाल जिले में दरबार साहिब गुरुद्वारा को भारत के पंजाब प्रांत के गुरदासपुर जिले में डेरा बाबा नानक साहिब से जोड़ता है।.
 - यह कॉरिडोर 12 नवंबर, 2019 को सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव की 550वीं जयंती समारोह के अवसर पर बनाया गया था।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर परियोजना के पहले चरण का उद्घाटन किया है।

परियोजना के हिस्से के रूप में 23 इमारतों- पर्यटक सुविधा केंद्र,
 वैदिक केंद्र, मुमुक्षु भवन, भोगशाला, शहर संग्रहालय, व्यूइंग गैलरी,
 फूड कोर्ट आदि का उद्घाटन किया गया है।

प्रमुख बिंदु

- परिचय:
 - वर्ष 1780 ईस्वी के बाद पहली बार इंदौर की मराठा रानी अहिल्याबाई होल्कर ने काशी विश्वनाथ मंदिर और उसके आसपास के क्षेत्र का जीर्णोद्धार करवाया था।
 - इसकी नींव मार्च, 2019 में रखी गई थी। इस परियोजना की परिकल्पना तीर्थयात्रियों के लिये आसानी से सुलभ मार्ग स्थापित करने हेतु की गई थी, जिन्हें गंगा में डुबकी लगाने और मंदिर में पवित्र नदी का पानी चढ़ाने के लिये भीड़भाड़ वाली सड़कों से गुजरना पड़ता था।
 - पिरयोजना पर काम के दौरान 40 से अधिक प्राचीन मंदिरों को फिर से खोजा गया। उनकी मूल संरचना में कोई बदलाव नहीं करते हुए उन्हें बहाल किया गया।
- महत्त्व:
 - यह प्रतिष्ठित काशी विश्वनाथ मंदिर और गंगा नदी के घाटों को जोडता है।
 - काशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित सबसे प्रसिद्ध हिंदू मंदिरों में से एक है।

- मंदिर पिवत्र गंगा नदी के पिश्चिमी तट पर स्थित है और बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है जो शिव मंदिरों में सबसे पिवत्र है।
- यह तीर्थयात्रियों और यात्रियों को चौड़ी, साफ-सुथरी सड़कें तथा गलियाँ, चमकदार स्ट्रीट लाइट के साथ बेहतर रोशनी एवं स्वच्छ पेयजल जैसी सुविधाएँ प्रदान करके पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

यूनेस्को की ICH सूची में दुर्गा पूजा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कोलकाता की दुर्गा पूजा को मानवता की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' (ICH) की यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची में अंकित किया गया है।

- मानवता के यूनेस्को ICH के रूप में मान्यता प्राप्त करने वाला यह एशिया का पहला त्योहार है।
- इससे पहले यूनेस्को ने गुजरात में हड़प्पा शहर धौलावीरा को भारत की 40वीं विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया था।

- दुर्गा पूजा:
 - दुर्गा पूजा पाँच दिवसीय त्योहार है जो नौ दिवसीय नवरात्रि
 उत्सव की पाँचवीं रात से शुरू होता है और दसवें दिन दशमी
 को समाप्त होता है।
 - इस समय के दौरान, लोग सामूहिक रूप से देवी दुर्गा की पूजा करते हैं और उनका आह्वान करते हैं, जिन्हें ब्रह्मांड की ऊर्जा स्त्री माना जाता है, जिन्हें 'शक्ति' भी कहा जाता है।
 - यह देश के सबसे बड़े सांस्कृतिक कार्निवाल और स्ट्रीट आर्ट फेस्टिवल में से एक है।
 - इस समय के दौरान, देवी के जिटल रूप से डिजाइन किये गए मिट्टी के मॉडल को 'पंडालों' और मंडपों में पूजा जाता है जहाँ लोग एक साथ मिलते हैं।
 - लोक संगीत, पाक कला, शिल्प और प्रदर्शन कला परंपराएँ उत्सव का एक हिस्सा हैं।
 - इस त्योहार की शुरुआत पश्चिम बंगाल से हुई, जिसमें देश में सबसे बड़ा बंगाली समुदाय है, यह त्योहार भारत के कई अन्य हिस्सों और दुनिया में भी मनाया जाता है।

तमिल साहित्यः संगम काल

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में शिक्षा राज्य मंत्री द्वारा तोलकाप्पियम (Tolkāppiyam) के हिंदी अनुवाद और शास्त्रीय तमिल साहित्य की 9 पुस्तकों के कन्नड अनुवाद का विमोचन किया गया।

तमिल साहित्य संगम युग से जुड़ा हुआ है, जिसका नाम कवियों की सभा (संगम) के नाम पर रखा गया है।

मुख्य बिंद्

- संगम काल के बारे में:
 - यह लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य की अवधि है। दक्षिण भारत (कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र) में लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अविध को संगम काल के नाम से जाना जाता है।
 - इसका नाम उस अवधि के दौरान आयोजित संगम अकादिमयों/ सभाओं के नाम पर रखा गया है जो मदुरै के पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण में फली-फूली।
 - संगमों में प्रख्यात विद्वान इकट्ठे हुए और सेंसर बोर्ड के रूप में कार्य किया तथा संकलन के रूप में सबसे अच्छे साहित्य का प्रतिपादन किया गया।
 - 🔷 ये साहित्यिक कृतियाँ द्रविड् साहित्य के शुरुआती नमूने थे।
 - संगम युग के दौरान दक्षिण भारत पर तीन राजवंशों- चेरों, चोल और पांड्यों का शासन था।
 - तीन संगम:
 - तिमल किंवदंतियों के अनुसार, प्राचीन दक्षिण भारत में तीन संगमों (तिमल कवियों का समागम) का आयोजन किया गया था, जिसे मुच्चंगम (Muchchangam) कहा जाता था।
 - माना जाता है कि प्रथम संगम मदुरै में आयोजित किया गया था। इस संगम में देवता और महान संत शामिल थे। इस संगम का कोई साहित्यिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।
 - दुसरा संगम कपाटपुरम् में आयोजित किया गया था, इस संगम का एकमात्र तमिल व्याकरण ग्रंथ तोलकाप्पियम ही उपलब्ध है।
 - तीसरा संगम भी मदुरै में हुआ था। इस संगम के अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए थे। इनमें से कुछ सामग्री समूह ग्रंथों या महाकाव्यों के रूप में उपलब्ध है।
- संगम साहित्य:
 - संगम साहित्य में तोलकाप्पियम, एट्टुटोगई, पट्टुप्पट्टू, पथिनेंकिलकनक्कु ग्रंथ और शिलप्पादिकारम् और मणिमेखलै नामक दो महाकाव्य शामिल हैं।

- तोल्काप्पियमः यह तोलकाप्पियार द्वारा लिखा गया था और इसे तिमल साहित्यिक कृति में सबसे पुराना माना जाता है।
- यह व्याकरण से संबंधित एक ग्रंथ है, साथ ही यह उस समय की राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की जानकारी भी प्रदान करता है।
- यह नौ खंडों के तीन भागों में व्याकरण और काव्य पर एक अनूठा काम है, जिनमें से प्रत्येक एजुट्टू (अक्षर), कोल (शब्द) और पोरुल (विषय वस्तु) से संबंधित है।
- सामान्य बोलचाल से लेकर काव्यात्मकता तक मानव भाषा के लगभग सभी स्तर तोल्काप्पियार के विश्लेषण के दायरे में आते हैं, क्योंकि वे स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान, वाक्य रचना, बयानबाज़ी, छंद और काव्य पर उत्कृष्ट काव्यात्मक एवं एपिग्रामेटिक बयानों में व्यवहार करते हैं।
- एट्ट्टोगई (आठ संकलन): इसमें आठ रचनाएँ शामिल हैं- ऐंगुरुन्रु, नरिनाई, अगनौरु, पुराणन्रु, कुरुंतोगई, कलित्टोगई, परिपादल और पदिरट्टू।
- पट्टुप्पट्टू (दस रचना): इसमें दस रचनाएँ शामिल हैं-थिरुमुरुगरुप्पडई, पोरुनाररुप्पडई, सिरुपनारुप्पडई. पेरुम्पनरुप्पडई, मुल्लाईपट्टू, नेदुनलवदाई, मदुरैक्कनजी, कुरिनजीपट्टू, पट्टिनप्पलई और मलाइपदुकदम।
- पाथिनेंकिलकणक्कु (Pathinenkilkanakku): इसमें नैतिकता और नैतिकता संबंधी अठारह कार्य शामिल
- इन कार्यों में सबसे महत्त्वपूर्ण महान तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर द्वारा लिखित तिरुक्कुरल है।
- तमिल महाकाव्यः शिलप्पादिकारम् 'इलांगोआदिगल' द्वारा और मणिमेखलै 'सीतलैसत्तनार' द्वारा लिखे गए महाकाव्य हैं।
 - वे संगम समाज और राज्य व्यवस्था के बारे में बहुमूल्य विवरण भी प्रदान करते हैं।

मध्य भारत में ताम्रपाषाण संस्कृति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) ने मध्य भारत में ताम्रपाषाणिक संस्कृति से संबंधित दो प्रमुख स्थलों (ऐरण, ज़िला सागर और तेवर, ज़िला जबलपुर) मध्य प्रदेश राज्य में खुदाई की।

- ताम्रपाषाणिक संस्कृति
 - परिचय: नवपाषाण काल के अंत में धातुओं का उपयोग देखा गया। कई संस्कृतियाँ तांबे और पत्थर के औजारों के उपयोग पर आधारित थीं।

- जैसा कि नाम से संकेत मिलता है, ताम्रपाषाण काल (चाल्को = ताम्र और लिथिक = पाषाण) के दौरान, धातु और पत्थर दोनों का उपयोग दैनिक जीवन में उपकरणों के निर्माण के लिये किया जाता था।
- ताम्रपाषाण संस्कृतियों ने कांस्य युग की हड़प्पा संस्कृति का अनुसरण किया।
- यह लगभग 2500 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व तक फैला था।
- मुख्य विशेषताएँ: विभिन्न क्षेत्र की ताम्रपाषाण संस्कृतियों को सिरेमिक और अन्य सांस्कृतिक उपकरणों जैसे तांबे की कलाकृतियों, अर्द्ध-कीमती पत्थरों के मोतियों, पत्थर के औजारों और टेराकोटा मूर्तियों में देखी गई कुछ मुख्य विशेषताओं के अनुसार परिभाषित किया गया था।

विशेषताएँ:

- ग्रामीण बस्तियाँ: अधिकांश लोग ग्रामीण थे और पहाड़ियों और निदयों के पास रहते थे।
- ताम्रपाषाण युग के लोग शिकार, मछली पकड़ने और कृषि
 पर आश्रित रहे।
- क्षेत्रीय भिन्नता: सामाजिक संरचना, अनाज और मिट्टी के बर्तनों में क्षेत्रीय अंतर दिखाई देते हैं।
- प्रवासन: जनसंख्या समूहों के प्रवासन और प्रसार को अक्सर ताम्रपाषाण काल की विभिन्न संस्कृतियों की उत्पत्ति के कारणों के रूप में उद्धृत किया जाता है।
- भारत में प्रथम धातु युग: चूँिक यह भारत में प्रथम धातु युग की शुरुआत थी इसिलये तांबे और इसकी मिश्र धातु कांसा जो कम तापमान पर पिघल जाती थी, इस अविध के दौरान विभिन्न वस्तुओं के निर्माण में उपयोग की जाती थी।
- कला और शिल्प: ताम्रपाषाण संस्कृति की विशेषता पहिया एवं मिट्टी के बर्तन थे जो ज्यादातर लाल और नारंगी रंग के होते थे।
- ताम्रपाषाण काल के लोगों द्वारा विभिन्न प्रकार के मृदभांडों
 का प्रयोग किया जाता था। काले और लाल मिट्टी के मृदभांड काफी प्रचलित थे।
- गैरिक मृदभांडों (Ochre-Coloured Pottery-OCP) का भी प्रचलन था।
- वर्ष 2020-21 में ऐरण में उत्खनन कार्य:
 - ऐरण (प्राचीन एयरिकिना) बीना (प्राचीन वेनवा) नदी के बाएँ
 किनारे पर स्थित है जो तीन तरफ से नदी से घिरा हुआ है।
 - बीना नदी भारत के मध्य प्रदेश राज्य में बहने वाली एक नदी है। यह बेतवा नदी (यमुना नदी की एक सहायक नदी) की एक प्रमुख सहायक नदी है।
 - ऐरण, सागर जिला मुख्यालय से 75 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है।

- वर्ष 2020-21 में इस स्थल पर हुई खुदाई में तांबे का सिक्का, लोहे के तीर का सिरा, टेराकोटा मनका, पत्थर के मोतियों के साथ तांबे के सिक्के, पत्थर के सेल्ट, स्टीटाइट और जैस्पर के मोती, काँच, कारेलियन, देवनागरी में शिलालेख के साथ टेराकोटा व्हील, जानवरों की मूर्तियाँ, लघु बर्तन, लोहे की वस्तुएँ, मूसल और रेड-स्लिप्ड टेराकोटा सिहत कई प्राचीन वस्तुओं का पता चला है।
- सादे, पतले भूरे रंग के बर्तन भी उल्लेखनीय है।
- 🔶 कुछ धातु की वस्तुओं से लोहे के उपयोग के साक्ष्य भी मिले हैं।
- स्थल पर इस उत्खनन से ताम्रपाषाण संस्कृति के अवशेषों का
 भी पता चला, जिनमें चार प्रमुख काल थे।
 - अविध I: ताम्रपाषाण काल (18वीं -7वीं ईसा पूर्व),
 - अविध II: प्रारंभिक इतिहास (7वीं-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व-पहली शताब्दी ई.),
 - अवधि III: पहली से छठी शताब्दी ई.
 - अविध IV: उत्तर मध्यकालीन (16 वीं-18 वीं शताब्दी ई.)
- वर्ष 2020-21 के दौरान तेवर में प्रारंभिक ऐतिहासिक उत्खनन:
 - तेवर (त्रिपुरी) गाँव जबलपुर जिले से 12 किमी पश्चिम में जबलपुर-भोपाल राजमार्ग पर स्थित है।
 - इस उत्खनन से सांस्कृतिक अनुक्रमों के संदर्भ में चार वंशों अर्थात् कुषाण, शूंग, सातवाहन और कलचुरी का पता चलता है।
 - इस उत्खनन में पुरातात्त्विक अवशेषों में मूर्तियों के अवशेष, हॉप्सकॉच, टेराकोटा बॉल, लोहे की कील, तांबे के सिक्के, टेराकोटा के मोती, लोहे और टेराकोटा की मूर्ति के उपकरण, सिरेमिक में लाल बर्तन, काले बर्तन, हांडी के आकार के साथ लाल फिसले हुए बर्तन, नलयुक्त बर्तन, छोटा बर्तन, बड़ा जार आदि शामिल है और संरचनात्मक अवशेषों में ईंट की दीवार और बलुआ पत्थर के स्तंभों की संरचना शामिल है।

कोणार्क सूर्य मंदिर का संरक्षण: उड़ीसा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने खुलासा किया है कि वह कोणार्क सूर्य मंदिर के अंदरूनी हिस्सों से रेत को सुरक्षित रूप से हटाने के लिये एक प्रारंभिक रोडमैप पर कार्य कर रहा है।

मंदिर की स्थिरता के लिये सूर्य मंदिर के जगमोहन (असेंबली हॉल)
 में एक सदी पहले अंग्रेजों द्वारा रेत भरी गई थी।

प्रमुख बिंद्

- संरक्षण प्रक्रियाः
 - वर्ष 1903 में ब्रिटिश प्रशासन ने तेरहवीं शताब्दी के विश्व धरोहर स्थल के स्थायित्व को बनाए रखने के लिये हॉल को रेत से भर दिया था और इसे सील कर दिया था।
 - उन्होंने जगमोहन के ऊपर के हिस्से में छेद कर दिया था और उसके जरिये रेत डाल दी थी।
 - 🔷 एक अध्ययन के बाद रेत को हटाने की आवश्यकता महसूस की गई थी, जिसमें रेत के रहने से संभावित नुकसान की चेतावनी दी गई थी, इसके परिणामस्वरूप रेत की परत और संरचना के बीच 17 फीट का अंतर आ गया था।
 - बालू हटाने की प्रक्रिया को अंजाम देने के लिये रुड़की में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) द्वारा एएसआई की सहायता की गई, जिसने वर्ष 2013 और 2018 के बीच मंदिर की संरचनात्मक स्थिरता पर एक वैज्ञानिक अध्ययन किया।
- कोणार्क सूर्य मंदिर:
 - कोणार्क सूर्य मंदिर पूर्वी ओडिशा के पिवत्र शहर पुरी के पास स्थित है।
 - इसका निर्माण राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा 13वीं शताब्दी (1238-1264 ई.) में किया गया था। यह गंग वंश के वैभव, स्थापत्य, मज़बूती और स्थिरता के साथ-साथ ऐतिहासिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करता है।
 - पूर्वी गंग राजवंश को रूधि गंग या प्राच्य गंग के नाम से भी जाना जाता है।
 - मध्यकालीन युग में यह विशाल भारतीय शाही राजवंश था जिसने कलिंग से 5वीं शताब्दी की शुरुआत से 15वीं शताब्दी की शुरुआत तक शासन किया था।
 - पूर्वी गंग राजवंश बनने की शुरुआत तब हुई जब इंद्रवर्मा प्रथम ने विष्णुकुंडिन राजा को हराया।
 - मंदिर को एक विशाल रथ के आकार में बनाया गया है।
 - यह सूर्य भगवान को समर्पित है।
 - कोणार्क मंदिर न केवल अपनी स्थापत्य की भव्यता के लिये बल्कि मूर्तिकला कार्य की गहनता और प्रवीणता के लिये भी जाना जाता है।
 - यह किलंग वास्तुकला की उपलिब्ध का सर्वोच्च बिंदु है जो अनुग्रह, खुशी और जीवन की लय को दर्शाता है।
 - इसे वर्ष 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
 - कोणार्क सूर्य मंदिर के दोनों ओर 12 पिहयों की दो पंक्तियाँ हैं। कुछ लोगों का मत है कि 24 पहिये दिन के 24 घंटों के प्रतीक हैं, जबिक अन्य का कहना है कि 12-12 अश्वों की दो कतारें वर्ष के 12 माह की प्रतीक हैं।

- सात घोडों को सप्ताह के सातों दिनों का प्रतीक माना जाता है।
- समुद्री यात्रा करने वाले लोग एक समय में इसे 'ब्लैक पगोडा' कहते थे. क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यह जहाजों को किनारे की ओर आकर्षित करता है और उनको नष्ट कर देता है।
- कोणार्क 'सूर्य पंथ' के प्रसार के इतिहास की अमूल्य कड़ी है, जिसका उदय 8वीं शताब्दी के दौरान कश्मीर में हुआ, अंतत: पूर्वी भारत के तटों पर पहुँच गया।
- ओडिशा में अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारकः
 - जगन्नाथ मंदिर
 - तारा तारिणी मंदिर
 - उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएँ
 - लिंगराज मंदिर

कत्थक

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मशहूर कत्थक डांसर पंडित मुन्ना शुक्ला का निधन हो गया।

- उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में नृत्य-नाटक शान-ए-मुगल, इंदर सभा, अमीर खुसरो, अंग मुक्ति, अन्वेषा, बहार, त्राटक, क्रौंच बढ़, धुनी शामिल हैं।
- नृत्य की दुनिया में उनके योगदान को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2006), साहित्य कला परिषद पुरस्कार (2003) और सरस्वती सम्मान (2011) से सम्मानित किया गया था।

- परिचय:
 - कत्थक शब्द का उदभव कथा शब्द से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है कथा कहना। यह नृत्य मुख्य रूप से उत्तरी भारत में किया जाता है।
 - यह मुख्य रूप से एक मंदिर या गाँव का प्रदर्शन था जिसमें नर्तक प्राचीन ग्रंथों की कहानियाँ सुनाते थे।
 - यह भारत के शास्त्रीय नृत्यों में से एक है।
- विकास:
 - पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के प्रसार के साथ कत्थक नृत्य एक विशिष्ट विधा के रूप में विकसित हुआ।
 - राधा-कृष्ण की किंवदंतियों को सर्वप्रथम 'रास लीला' नामक लोक नाटकों में प्रयोग किया गया था, जिसमें बाद में कत्थक कथाकारों के मूल इशारों के साथ लोक नृत्य को भी जोडा गया।

- कत्थक को मुगल सम्राटों और उनके रईसों के अधीन दरबार में प्रदर्शित किया जाता था, जहाँ इसने अपनी वर्तमान विशेषताओं को प्राप्त कर लिया और एक विशिष्ट शैली के रूप में विकसित हुआ।
- अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला रूप में विकसित हुआ।
- नृत्य शैली:
 - आमतौर पर एक एकल कथाकार या नर्तक छंदों का पाठ करने हेतु कुछ समय के लिये रुकता है और उसके बाद शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से उनका प्रदर्शन होता है।
 - इस दौरान पैरों की गित पर अधिक ध्यान दिया जाता है; 'एंकल-बेल' पहने नर्तिकयों द्वारा शरीर की गित को कुशलता से नियंत्रित किया जाता है और सीधे पैरों से प्रदर्शन किया जाता है।
 - 'तत्कार' कत्थक में मुलत: पैरों की गित ही शामिल होती है।
 - कत्थक शास्त्रीय नृत्य का एकमात्र रूप है जो हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत से संबंधित है।
 - कुछ प्रमुख नर्तकों में बिरजू महाराज, सितारा देवी शामिल हैं।
- भारत में अन्य शास्त्रीय नृत्य
 - 🔷 तमिलनाडु- भरतनाट्यम
 - 🔷 कथकली- केरल
 - 🔷 कुचिपुड़ी- आंध्रप्रदेश
 - ओडिसी- ओडिशा
 - 🔷 सि्रया- असम
 - मणिपुरी- मणिपुर
 - 🔷 मोहिनीअट्टम- केरल

कला कुंभ-कलाकार कार्यशालाएँ

चर्चा में क्यों?

आजादी के अमृत महोत्सव के भव्य समारोह के हिस्से के रूप में संस्कृति मंत्रालय ने रक्षा मंत्रालय के सहयोग से स्क्रॉल पेंटिंग के लिये कला कुंभ कलाकार कार्यशालाओं का आयोजन किया।

 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों के साथ महानिदेशक, एनजीएमए (नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट) ने स्क्रॉल पेंटिंग कार्यशालाओं के लिये संरक्षक के रूप में काम किया।

प्रमुख बिंदु

- परिचयः
 - इन कलाकृतियों का प्रमुख विषय भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के गुमनाम नायकों से संबंधित है।

- अन्य प्रख्यात कलाकारों और सुलेखकों की एक टीम के साथ बंगाल स्कूल के आधुनिक भारतीय कला के प्रमुख आचार्यों में से एक नंदलाल बोस द्वारा भारत के संविधान में दिये गए दृष्टांतों से भी प्रेरणा ली गई है।
- नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट:
 - परिचय:
 - यह एक राष्ट्रीय प्रमुख संस्थान है जिसकी स्थापना वर्ष 1954 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में की थी।
 - NGMA देश के सांस्कृतिक लोकाचार का भंडार है और विभिन्न कला के क्षेत्रों में वर्ष 1857 से शुरू होकर पिछले डेढ़ सौ वर्षों के दौरान बदलते कला रूपों को प्रदर्शित करता रहा है।
 - मुख्यालयः नई दिल्ली।
 - नोडल मंत्रालय: इसे संस्कृति मंत्रालय के तहत चलाया और प्रशासित किया जाता है।

नंदलाल बोस (1882-1966)

- 3 दिसंबर, 1882 को बिहार के मुंगेर जिले में जन्मे नंदलाल बोस आधुनिक भारतीय कला के अग्रदूतों में से एक थे और प्रासंगिक आधुनिकतावाद (Contextual Modernism) से संबंधित थे।
- बोस रवींद्रनाथ टैगोर के भतीजे अविनंद्रनाथ टैगोर जो पांच वर्ष के लिये वर्ष 1910 तक इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट के प्रमुख कलाकार और निर्माता रहे के साथ ही बड़े हुए।
- टैगोर परिवार के साथ जुड़ाव और अजंता के भित्ति चित्रों ने एक राष्ट्रवादी चेतना, शास्त्रीय और लोक कला के प्रति प्रतिबद्धता के साथ-साथ इसकी अंतर्निहित आध्यात्मिकता और प्रतीकवाद के आदर्शवाद को जागृत किया।
- उनकी क्लासिक कृतियों में भारतीय पौराणिक कथाओं, महिलाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों के चित्र शामिल हैं।
- बोस ने अपने कार्यों में मुगल और राजस्थानी परंपराओं तथा चीनी-जापानी शैली और तकनीकी का प्रयोग किया।
- बोस वर्ष 1922 में खींद्रनाथ टैगोर के अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय शांति निकेतन में कला भवन (कला महाविद्यालय) के प्राचार्य बने।
- जब भारतीय संविधान का मसौदा तैयार किया जा रहा था तब कांग्रेस ने बोस को के संविधान के पन्नों को चित्रित करने का कार्य सौंपा, साथ ही उनके शिष्य राममनोहर बोस ने संविधान की मूल पांडुलिपि को सुशोभित और सजाने का काम संभाला।
- 16 अप्रैल, 1966 को कलकत्ता में उनका निधन हो गया।
- आज कई आलोचक उनके चित्रों को भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण आधुनिक चित्रों में से एक मानते हैं।

 वर्ष 1976 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने "नौ कलाकारों" के बीच कार्यों की घोषणा की तथा इनके कार्यों को कलात्मक और सौंदर्य मृल्य के संबंध में कला के रूप में" जाना जाता था।

विश्व विरासत नामांकन 2022-2023

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने वर्ष 2022-2023 के लिये 'विश्व धरोहर स्थल' के रूप में विचार करने हेतु होयसल मंदिरों के पवित्र स्मारकों को नामित किया है।

- 12वीं-13वीं शताब्दी में निर्मित होयसल मंदिर कर्नाटक में बेलूर, हलेबीडु और सोमनाथपुर के तीन घटकों द्वारा चिह्नित हैं। ये तीनों होयसल मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के संरक्षित स्मारक हैं।
- 'होयसला के पवित्र स्मारक' 15 अप्रैल, 2014 से यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल हैं और भारत की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के साक्षी हैं।
- इससे पहले यूनेस्को के विश्व धरोहर केंद्र (WHC) ने अपनी वेबसाइट पर भारत के 'यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों' के हिंदी विवरण प्रकाशित करने पर सहमति व्यक्त की थी।

बेलूर, हलेबीडु और सोमनाथपुरा मंदिरों की विशेषताएँ:

- चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर:
 - यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जिन्हें 'चेन्नाकेशव' के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है- 'सुंदर' (चेन्ना) एवं 'विष्णु' (केशव)।
 - मंदिर के बाहरी हिस्से में बड़े पैमाने पर तराशे गए पत्थर विष्णु के जीवन एवं उनके पुनर्जन्म तथा महाकाव्यों- रामायण और महाभारत के दृश्यों का वर्णन करते हैं।
 - हालाँकि यहाँ शिव से जुड़े कुछ मंदिर भी मौजूद हैं।
- हलेबिड होयसलेश्वर मंदिर, (Hoysaleshwara Temple):
 - हलेबिड में होयसलेश्वर मंदिर वर्तमान में मौजूद होयसलों का सबसे अनुकरणीय स्थापत्य है।
 - इसका निर्माण होयसल राजा विष्णुवर्धन होयसलेश्वर के शासनकाल के दौरान 1121 ई. में किया गया था।
 - शिव को समर्पित यह मंदिर दोरासमुद्र के धनी नागरिकों तथा व्यापारियों द्वारा प्रायोजित व निर्मित किया गया था।
 - यह मंदिर 240 से अधिक दीवार में संलग्न मूर्तियों के लिये सबसे प्रसिद्ध है।

- हलेबिड में एक दीवार वाला परिसर है जिसमें होयसल काल के तीन जैन मंदिर भी है।
- केशव मंदिर, सोमनाथपुरा (Keshava Temple, Somanathapura):
 - 🔷 सोमनाथपुरा में केशव मंदिर एक और शानदार (शायद आखिरी) होयसल स्मारक है।
 - यहाँ जनार्दन, केशव और वेणुगोपाल के इन तीन रूपों में भगवान कृष्ण को समर्पित एक सुंदर त्रिकृट मंदिर है।
 - दुर्भाग्य से यहाँ मुख्य केशव मूर्ति गायब है तथा जनार्दन एवं वेणुगोपाल की मुर्तियाँ क्षतिग्रस्त हैं।

होयसल वास्तुकला की विशेषताएँ क्या हैं?

- होयसल वास्तुकला 11वीं एवं 14वीं शताब्दी के बीच होयसल साम्राज्य के अंतर्गत विकसित एक वास्तुकला शैली है जो जयादातर दक्षिणी कर्नाटक क्षेत्र में केंद्रित है।
- होयसल मंदिर, हाइब्रिड या बेसर शैली के अंतर्गत आते हैं क्योंकि उनकी अनूठी शैली न तो पूरी तरह से द्रविड़ है और न ही नागर।
 - होयसल मंदिरों में एक बुनियादी द्रविड़ियन आकृति है, लेकिन मध्य भारत में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली भूमिजा मोड (Bhumija mode), उत्तरी और पश्चिमी भारत की नागर परंपराओं और कल्याणी चालुक्यों द्वारा समर्थित कर्नाटक द्रविड़ मोड के मजबूत प्रभाव दिखाई देते हैं।
 - इसलिये होयसल के वास्तुविदों ने अन्य मंदिर प्रकारों में विद्यमान बनावट पर विचार किया तथा उनके चयन और यथोचित संशोधन करने के बाद इन विधाओं को अपने स्वयं के विशेष नवाचारों के साथ मिश्रित किया।
 - इसकी परिणति एक पूर्णरूपेण अभिनव 'होयसल मंदिर' ('Hoysala Temple) शैली के अभ्युदय के रूप में हई।
- होयसल मंदिरों में खंभे वाले हॉल के साथ एक साधारण आंतरिक कक्ष की बजाय एक केंद्रीय स्तंभ वाले हॉल के चारों ओर समृह में कई मंदिर शामिल होते हैं और यह संपूर्ण संरचना एक जटिल डिजाइन वाले तारे के आकार में होती है।
- चूँकि ये मंदिर शैलखटी (Steatite) चट्टानों से निर्मित हैं जो अपेक्षाकृत एक नरम पत्थर होता है जिससे कलाकार मूर्तियों को जटिल रूप देने में सक्षम होते थे। इसे विशेष रूप से देवताओं के आभूषणों में देखा जा सकता है जो मंदिर की दीवारों को सुशोभित करते हैं।

देवायतनमः मंदिर वास्तुकला पर सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय संस्कृति मंत्री ने कर्नाटक के 'हम्पी' में भारत के मंदिर वास्तुकला पर एक अनूठे सम्मेलन 'देवायतनम' का उद्घाटन किया।

- इसे 'आजादी के अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में संस्कृति मंत्रालय के भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा 25-26 फरवरी को आयोजित किया जा रहा है।
- हम्पी के मंदिरों को पहले से ही यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में उनकी भव्यता, शानदार वास्तुकला के लिये शामिल किया गया है।
 - भारत के 40 यूनेस्को विश्व धरोहर शिलालेखों में से लगभग 10 विभिन्न स्थापत्य शैली, पैटर्न और समरूपता में हिंदू मंदिर हैं।
 - वर्ष 2021 में तेलंगाना के मुलुगु जिले में रुद्रेश्वर मंदिर (जिसे रामप्पा मंदिर भी कहा जाता है) को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

सम्मेलन का महत्त्वः

- यह सम्मेलन भारतीय मंदिरों, कला एवं वास्तुकला की भव्यता पर चर्चा, विचार-विमर्श और दुनिया में उनके प्रसार के लिये एक मंच प्रदान करता है।
- यह प्रधानमंत्री की समग्र दृष्टि के अनुरूप है और 5V's पर आधारित है, अर्थात्- विकास, विरासत, विश्वास,, ज्ञान, जो हमें विश्वगुरु बनने की ओर ले जा सकते।
- 'देवायतनम' यानी भगवान का घर न केवल पूजा एवं अनुष्ठान करने का स्थान होता है, बल्कि शिक्षा, लिलत कला, संगीत, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अनुष्ठान और परंपराओं या समाज को आकार देने वाली गतिविधियों का केंद्र भी है।
- हाल के दिनों में सरकार ने मंदिर को किस प्रकार बढ़ावा दिया है?
- केंद्र सरकार ने बेलूर और सोमनाथपुर के होयसल मंदिरों को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची हेतु प्रस्तावित किया है।
- अयोध्या में भगवान राम का भव्य मंदिर बनाया जा रहा है।
- लगभग 250 वर्षों के बाद भारत की आध्यात्मिक राजधानी- काशी का कायाकल्प किया गया है और भक्तों के लिये सुविधाएँ तथा बेहतर बुनियादी अवसंरचना मौजूद है।
- तेलंगाना राज्य ने 2 बड़े पत्थर के नक्काशीदार मंदिरों का निर्माण किया है जिनकी लागत 1,000 करोड़ रुपए है।
- बेहतर बुनियादी अवसंरचना और विश्व स्तरीय सुविधाओं के माध्यम से मौजूदा आध्यात्मिक स्थानों को भक्तों के लिये सुलभ बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

पर्यटन के बुनियादी ढाँचे को सुविधाजनक बनाने व आध्यात्मिक स्थानों पर बेहतर पहुँच और अनुभव प्रदान करने के लिये प्रसाद और स्वदेश दर्शन योजना हेतु लगभग 7,000 करोड़ रुपए के बजट की कल्पना की गई है।

भारतीय मंदिरों का क्या महत्त्व है?

- भारतीय मंदिर कला, ज्ञान, संस्कृति, आध्यात्मिकता, नवाचार और शिक्षा के केंद्र रहे हैं।
- भारत में मंदिरों की स्थापना की तीन प्रमुख शैलियाँ रही हैं जिन्हें नागर, द्रविड और वेसर के नाम से जाना जाता है।
 - देवगढ़ का दशावतार मंदिर नागर शैली में निर्मित है। यह शैली हिमालय और विंध्य पहाड़ों के बीच प्रचलित है।
 - कांची में कैलासनाथर का मंदिर द्रविड़ शैली में निर्मित है, जिसे कृष्णा और कावेरी नदी की भूमि पर विकसित किया गया है।
 - पापनाथ मंदिर वेसर शैली का एक उदाहरण है जो वेसर, नागर और द्रविड शैली का मिश्रित रूप है।
- एक हिंदू मंदिर में कला और विज्ञान का संयोजन होता है जिसमें शिल्प शास्त्र, वास्तु शास्त्र, ज्यामिति और समरूपता शामिल होती है।
- मंदिर एकता, अखंडता और सभ्यता को बढ़ावा देते हैं।

नागर और द्रविड़ शैली के मंदिरों में अंतर:

नागर या उत्तर भारतीय मंदिर शैली:

- विशेषताएँ:
 - उत्तर भारत में एक पत्थर के चबूतरे पर पूरे मंदिर का निर्माण होना आम बात है जिसकी सीढ़ियाँ ऊपर तक जाती हैं।
 - इसके अलावा दक्षिण भारत के विपरीत उत्तर भारत में निर्मित मंदिरों में आमतौर पर विस्तृत चारदीवारी या प्रवेश द्वार नहीं होते हैं।
 - जबिक शुरुआती मंदिरों में सिर्फ एक मीनार या शिखर होता था,
 बाद में इनकी संख्या एक से अधिक हो गई।
 - गर्भगृह का निर्माण हमेशा सबसे ऊँचे शिखर के नीचे होता है।
- उप विभाजनः
 - शिखर के आकार के आधार पर नागर शैली के मंदिरों को कई उपखंडों में विभाजित किया गया है।
 - भारत के विभिन्न हिस्सों में मंदिर के लिये अलग-अलग नाम हैं। हालाँकि साधारण शिखर का सबसे सामान्य नाम जो आधार से वर्गाकार होता है और जिसकी दीवारें शीर्ष पर एक बिंदु पर अंदर की ओर वक्र या ढलानदार होती हैं, उसे 'लैटिना' या रेखा-प्रसाद प्रकार का शिकारा (Rekha-Prasada Type Of Shikara) कहा जाता है।

- 🔷 नागर क्रम में दूसरा प्रमुख प्रकार का स्थापत्य रूप फमसाना (Phamsana) है, जो लैटिना की तुलना में व्यापक और छोटा होता है।
 - इनकी छतें कई स्लैब में निर्मित होती हैं, जो धीरे-धीरे इमारत के केंद्र में एक बिंदु तक बढ़ती जाती हैं,ये लैटिना के विपरीत तेज़ी से बढते ऊँचे टावरों की तरह दिखती हैं।
- नागर भवनों के तीसरे मुख्य उप-प्रकार को आमतौर पर वल्लभी कहा जाता है।
 - ये एक छत के साथ आयताकार इमारतें हैं जो एक गुंबददार कक्ष में प्रदर्शित होती हैं।
- उदाहरण:
 - खजुराहो मंदिर समूह, सूर्य मंदिर, कोणार्क, मोढेरा में सूर्य मंदिर, गुजरात और ओसियन मंदिर, गुजरात।

द्रविड़ या दक्षिण भारतीय मंदिर शैली:

- विशेषताएँ:
 - नागर मंदिर के विपरीत द्रविड़ मंदिर परिसर की दीवार के भीतर संलग्न होते हैं।
 - मंदिर के सामने की दीवार पर एक मुख्य प्रवेश द्वार बनाया जाता है जिसे गोपुरम कहते हैं।
 - मंदिर का आकार एक पिरामिड की तरह होता है जिसके उपरी भाग को तमिलनाडु में विमान कहा जाता है।

- पिरसर के भीतर एक बड़ा जलाशय या मंदिर का तालाब भी प्राय: पाया जाता है।
- सहायक मंदिर या तो मुख्य मंदिर की मीनार के भीतर समाहित होते हैं, या मुख्य मंदिर के बगल में अलग-अलग छोटे मंदिरों के रूप में स्थित होते हैं।
- भूमि के विशाल क्षेत्रों को नियंत्रित करने वाले ये मंदिर समृद्ध प्रशासनिक केंद्र बन गए।

उपखंड:

- जिस तरह मुख्य प्रकार के नागर मंदिरों के कई उपखंड हैं, उसी तरह द्रविड मंदिरों के भी उपखंड हैं।
- ये मूल रूप से पाँच अलग-अलग आकृतियों के हैं:
 - वर्ग, जिसे आमतौर पर कुटा कहा जाता है
 - आयताकार या (शाला, अयातश्र)
 - अण्डाकार, जिसे गज-प्रतिष्ठा या हाथी समर्थित, या जिसे वृत्तायता भी कहा जाता है।
 - वृत्ताकार या वृत्ता
 - अष्टकोणीय या अष्टास्त्र।
- उदाहरण:
 - कांचीपुरम, तंजावुर या तंजौर, मदुरै और कुंभकोणम तमिलनाडु के सबसे प्रसिद्ध मंदिर शहर हैं।